सोवियत संघ में
नया इन्सान

लेखक की एक अन्य महत्वपूर्ण कृति

भारत के बैस्टील अन्दमान में

जेल में लम्बी भूख-हड़तालों से जर्जर-शरीर—इनमें से एक भूख-हड़ताल तो पूरे पांच महीने की थी—वीर क्रान्तिकारी बिजय कुमार सिन्हा महात्मा गांधी और तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष सुभाषचन्द्र बोस के हस्तक्षेप से जब पैरोल पर रिहा किये जाने को थे, तो उससे ठीक पहले यह पुस्तक उन्होंने जेल में ही १६३६ में लिखी थी। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने अपनी सत्ता और शासन के लिए इस पुस्तक को बेहद खतरनाक और घातक समझा, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

फलतः १६३६ में ही फिरंगी सरकार ने पुस्तक को अवैध घोषित कर दिया और छापे मार कर व्हीलर-स्टालों तथा मद्रास, बम्बई, कलकत्ता, पटना, शिमला आदि के पुस्तक-विक्रेताओं की दूकानों से इसकी सभी प्रतियों को जब्त कर लिया।

यही पुस्तक अब पूरी सजधज के साथ पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस से पुनः शीघ्र प्रकाशित हो रही है।

सोवियत संघ में नया इन्सान

सोवियत जीवन-पद्धति का
एक मार्मिक वृत्तांत

लेखक
विजय कुमार सिन्हा

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
नयी दिल्ली अहमदाबाद बम्बई

सरदार भगतसिंह

मेरे साथी
भगत सिंह
की पावन स्मृति को समर्पित
जिन्होंने फांसी के तख्ते से
अपने देशवासियों का
समाजवाद के लिए
आह्वान किया था.

मनुष्य ही समस्त वस्तुओं का मानदंड है।

—प्रोटेगोरस (४८५-४१५ ई. पू.) (प्लेटो द्वारा उद्धृत)

सुनो रे मानुष भाई!
सबार ऊपरे मानुष सत्य,
ताहार ऊपरे नाई!!

—चंडीदास (पंद्रहवीं सदी)

रूसी क्रान्ति के गर्भ से उद्भूत जनगण ही उस युग के महानतम सर्जन हैं।

—रोमां रोलां

मैं उनके पक्ष में खड़ा हूं जो
मनुष्य को अपनी गंदगी से छुटकारा दिलायेंगे,
निर्माण करेंगे, सफाई करेंगे और चमकायेंगे।
मैं गाता हूं
उस मातृभूमि के लिए
जो इस समय मेरी कहलाती है,
लेकिन तीन गुना अधिक उसके लिए,
जो आयेगी।

—मायाकोवस्की

अनुक्रम

प्रस्तावना १-६

अध्याय १ : एक सूक्ष्म सकेतक ७-३३
शिक्षा व्यवस्था ६
अकादमीशियन जापोरोजेत्स १३
शिशु विद्यालय का सदर्शन १५
लुमुम्बा विश्वविद्यालय १७
शिक्षक और अभिभावक २०
विज्ञान और मानविकी २२
छात्र संगठन २६
रोजगार २७
खर्च २८
सोपान ३१
आधारशिला शिक्षा ३२

अध्याय २ : तरुण शिल्पी ३४-६६
प्रारंभ ३५
युद्ध के दौरान ३८
श्रम वीर ४०
अन्य क्षेत्रों में ४२
तरुणाई पर विश्वास ४८
संगठन ५०

बच्चे
युवा दंपति १३९
पश्चिमी जगत १४४
एक परिवार में १४९
१५१
अध्याय ५ : जीवन का आधार
बजट १५६-१७८
वेतन १५७
संपत्ति १५८
स्वास्थ्य १६०
आवास १६१
परिवहन १६६
सामाजिक सुरक्षा १६९
रहन-सहन का स्तर १७१
मनोरंजन १७३
१७७
अध्याय ६ : राष्ट्रों का परिवार
एशियाई गणराज्य १७९-२०६
ताजिकिस्तान १८२
कजाखस्तान १८३
साइबेरिया १९१
छोटी कौमें १९९
२०४
अध्याय ७ : झलकियां
स्मारक २०७-२३७
मास्को में २०७
मेट्रो २१२
लेनिनग्राद २१७
लोग २१९
क्रान्तिकारी योद्धा २२४
जागोर्स्क २३०
भारत के प्रति प्रेम २३२
छोटी-छोटी चीजें २३५
२३६
अध्याय ८ : एक नयी सभ्यता
समाजवादी जनवाद २३८-२७५
२४१

बच्चे १३९
युवा दंपति १४४
पश्चिमी जगत १४९
एक परिवार मे १५१

अध्याय ५ : जीवन का आधार १५६-१७८
बजट १५७
वेतन १५८
संपत्ति १६०
स्वास्थ्य १६१
आवास १६६
परिवहन १६९
सामाजिक सुरक्षा १७१
रहन-सहन का स्तर १७३
मनोरजन १७७

अध्याय ६ : राष्ट्रों का परिवार १७९-२०६
एशियाई गणराज्य १८२
ताजिकिस्तान १८३
कजाखस्तान १९१
साइबेरिया १९९
छोटी कौमे २०४

अध्याय ७ : झलकियां २०७-२३७
स्मारक २०७
मास्को में २१२
मेट्रो २१७
लेनिनग्राद २१९
लोग २२४
क्रान्तिकारी योद्धा २३०
जागोर्स्क २३२
भारत के प्रति प्रेम २३५
छोटी-छोटी चीजें २३६

अध्याय ८ : एक नयी सभ्यता २३८-२७५
समाजवादी जनवाद

आलोचक २४५
समता २४६
कार्य २५२
धर्म २५६
नयी परंपराएं २५८
युद्ध के वर्ष २६३
सुखद जीवन २७२

अध्याय ९ : नया मानव २७६-२७८

प्रस्तावना

मैं पेशेवर लेखक नहीं हूं और इसलिए जब मैंने यह पुस्तक लिखने का जिम्मा लिया है तो अपने पाठकों को मुझे एक स्पष्टीकरण देना होगा। यह क्रान्तिकारी आन्दोलन के उन दिनों से जुड़ा हुआ है जब हमारा देश आजाद नहीं हुआ था।

चार दशकों से भी पहले, इस सदी के तीसरे दशक के अन्तिम वर्षों में उत्तरी भारत के विभिन्न भागों में, बड़ी संख्या में नौजवान, जिनमें से अधिकांश विश्वविद्यालयों के छात्र थे, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बन गये थे—जो उन दिनों एक लोकप्रिय क्रान्तिकारी पार्टी थी। भगत सिंह, जो लाहौर नेशनल कालेज से आये थे, उन्ही में से एक थे। मैं भी, जो कानपुर के क्राइस्ट चर्च कालेज का छात्र था, पार्टी में शामिल हो गया था। पिछली सदी के अन्तिम वर्षों में, महाराष्ट्र और बंगाल में तिलक और अरविंद के जमाने में क्रान्तिकारी पुनर्जागरण के चरमोत्कर्ष के समय, जुझारू राष्ट्रवाद का जो भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन उदित हुआ था, वह अब समाजवादी दिशा में मुड़ चुका था। रूस में अक्तूबर क्रान्ति की विजय ने हमें गहरे तक आन्दोलित किया था। हम सभी शिक्षित, जीवन के उच्चतर मूल्यों के प्रति संवेदनशील नवयुवक थे। एक ऐसे समाज मे जहां भारतीय और ब्रिटिश, दोनों धनिक वर्गों का आधिपत्य था, हमारे अपने जीवन का और अपने निकटतम लोगों के जीवन का अनुभव कडुवा था। वह न केवल आर्थिक कठिनाइयों से, बल्कि लगातार गलाजतों से भी भरा हुआ जीवन था।

रूस में किसानों और मजदूरों की विजय में हमें एक नये जीवन के दर्शन हुए। समाजवाद का उनका घोषित लक्ष्य हमारे निकट एक ऐसे आदर्श के रूप में आया जिससे न केवल चंद लोगों द्वारा बहुतों के आर्थिक शोषण को हमेशा के लिए समाप्त किया जा सकता था, बल्कि एक ऐसा नया समाज निर्मित किया जा सकता था जिसमें लोग सुखी हों, अपना मस्तक गर्व से ऊंचा रख सकें, समान अवसर और सभी के लिए आजादी की परिस्थितियों से उद्‌भूत जीवन का आनंद गान गा सकें।

इसी समय शौकत उस्मानी ने, जो भारतीय कम्युनिस्टों के प्रतिनिधि के रूप में तीसरी कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की छठी कांग्रेस में शामिल होने के लिए गुप्त रूप से मास्को रवाना हो रहे थे, कानपुर में मुझसे कहा कि मैं अपने कुछ साथियों समेत क्रान्तिकारी पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में, अपने कार्यक्रम के निमित्त सोवियत इमदाद लेने के लिए उनके साथ चलूं। मैंने भगत सिंह से मशविरा किया और हमें लगा कि यह उपयुक्त समय नहीं है। हमने तय किया कि हम दोनों कुछ समय बाद, जब हमारी पार्टी कुछ महत्वपूर्ण जुझारू कार्यवाहियां कर चुकेगी, जिनकी हम योजना बना रहे थे, मास्को जायेंगे।

समाजवाद के ध्येय में अपनी आस्था घोषित करने के लिए हमने अब अपनी पार्टी का नाम बदल कर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन रख दिया था। अपनी केन्द्रीय समिति में, हमने फांसी के तख्ते से और उन अदालती मंचों से जिनमें हमारे लोग फंस सकते थे, अपने समाजवादी विचारों का प्रचार करने का भी निश्चय किया। अपने खुले मंच के रूप में हमने नौजवान भारत सभा भी चालू कर दी थी।

इसी नीति के अनुसार सेन्ट्रल असेम्बली में सरकार द्वारा पारित मजदूर-विरोधी कानूनों के खिलाफ विरोध प्रकट करने के लिए बम फेंके गये थे, और कुछ महीने पहले उस ब्रिटिश पुलिस अफसर को गोली से मार दिया गया था, जो लाला लाजपतराय की मृत्यु के लिए जिम्मेदार था। हि. सो. रि. ए. ने उस मौके पर अपने पर्चे में ऐलान किया था: "हमारा लक्ष्य है एक ऐसी क्रान्ति के लिए कार्य करना जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को खत्म कर दे।"

इन दोनों कार्रवाइयों के जुर्म में सरदार भगतसिंह को लाहौर षड्यंत्र केस में मृत्यु दंड दिया गया था। फांसी से कुछ दिन पहले सरकार को लिखे अपने पत्र में उन्होने ऐलान किया: "आइये हम ऐलान कर दें कि युद्ध की स्थिति मौजूद है और यह तब तक रहेगी जब तक कि भारतीय मेहनतकश अवाम और उनके प्राकृतिक संसाधनों का शोषण ये मुट्ठीभर शोषक करते रहेंगे। वे शुद्ध ब्रिटिश पूंजीपति हों या मिश्रित ब्रिटिश और भारतीय या शुद्ध भारतीय। यह युद्ध नित्य नवीन आवेग, अधिकाधिक निर्भीकता और अडिग संकल्प के साथ चलाया जाता रहेगा, जब तक कि समाजवादी गणराज्य यहां स्थापित नहीं हो जाता।"

सरदार के सह-अभियुक्त के रूप में मुझे आजीवन देश निकाला दिया गया था, लगभग दो दशकों तक मुझे एक से दूसरी जेल में भेजा जाता रहा। लेकिन हमारे अपने देश और बाहर की दुनिया की घटनाओं के प्रभाव से उन दिनों हासिल हुई आस्था बाद के वर्षों में गहरी होती गयी।

इसलिए जब हमारी राजनीतिक आजादी के उदय के बाद हमारे देश में उत्तरोत्तर यह अहसास जोर पकड़ रहा था कि केवल समाजवाद के जरिये ही हम अपनी अत्यावश्यक राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान कर सकते है, और करोड़ो मेहनतकशो के हित में एक आमूल सामाजिक पुनर्निर्माण कर सकते हैं, तो मुझे अपार प्रसन्नता हुई थी। लेकिन फिर मैंने देखा कि इस दिशा में गति बेहद धीमी है और प्रगति बहुत लड़खड़ाती हुई-सी है। शिक्षित नौजवान वर्ग समाजवाद के ध्वज के नीचे गोलबंद नहीं हुआ है। अवाम ने भी आवश्यक मात्रा में अनुकूल प्रतिक्रिया जाहिर नही की है जिससे कि वह राष्ट्रीय स्तर पर एक सगठित शक्ति बन पाता। और देश भर में, समाजवादी ध्येय के प्रति निष्ठा की अगाध घोषणाओं के बीच, सत्ता और लक्ष्मी के लिए इतनी अधिक दुःखद आपाधापी है। इन सबके कारण पर सोचते हुए मैंने महसूस किया कि समाजवाद के प्रति दृष्टिकोण में, इस आदर्श को देखने और इसे प्रस्तुत करने में भी कोई बुनियादी गलती है। मुझे लगा कि आर्थिक पहलू पर अतिशय बल दिया जा रहा है। बेशक, समाजवाद के भौतिक और आध्यात्मिक पक्ष एकीकृत हैं। लेकिन एक नयी समाजवादी सत्ता का ढांचा ज्यों-ज्यों सुरक्षा और बाहुल्य के आर्थिक आधारों पर ऊंचा उठता है, आध्यात्मिक पहलू ही वृहत्तर अर्थ ग्रहण करते हैं। हमारे जैसे देशों में जहां अभी भी समाजवाद की स्थापना नहीं हुई है, और जिसके लिए एक अडिग और अनवरत क्रान्तिकारी सघर्ष चलाते रहना होगा, अप्रतिबद्ध लोगों को, खासकर उन शिक्षित तबकों को जो राजनीतिक आन्दोलन की अग्रिम पंक्ति में हैं, आकर्षित करना तभी संभव है जब समाजवाद को सही ढंग से उनके सामने पेश किया जाय—एक ऐसे महान आन्दोलन के रूप मे जो केवल रोटी के लिए नहीं, बल्कि एक ऐसा नया और न्यायपूर्ण समाज कायम करने के लिए हो जिसमें स्त्री-पुरुष ईमानदारी, सत्य, बधुत्व और समाज सेवा की भावना के नैतिक मूल्यों पर आधारित सुखी और सार्थक जीवन बितायेंगे। शताब्दियों से भारत अपनी आध्यात्मिक परंपराओं में निमग्न रहा है और इसलिए किसी भी जन आन्दोलन के ताकतवर होने के लिए जरूरी है कि वह इस राष्ट्रीय विरासत के अनुरूप हो।

इन विचारों के साथ सोवियत संघ की यात्रा करने एवं इस दृष्टिकोण से स्वयं वहां की वस्तुस्थिति देखने और यह विवरण जानने की मुझे आतरिक प्रेरणा अनुभव हुई थी कि पचास से अधिक वर्षों के प्रयोग के जरिये किस तरह वहां एक नया मानव विकसित होता रहा है; वह अपने चिन्तन और अपने कार्य में कितना सुन्दर है। क्या वह उस कुरूपता को त्यागने में, और सो भी हमेशा के लिए, समर्थ हुआ है जो संकीर्ण स्वार्थों पर आधारित सामंती तथा पूजीवादी समाज के फलस्वरूप उससे चिपकी हुई थी? मैंने सोचा कि अपने

विनम्र और सीमित ढंग से मैं अपने देशवासियों के सामने, वापस आने पर, वस्तुचित्र को सचाई के साथ पेश करके, ध्येय की सेवा करूंगा।

वर्षों से मैं समाजवादी पुनर्निर्माण के संबंध में पुस्तकें पढ़ता रहा हूं। लेकिन ऐसे किसी भी अध्ययन की अपनी सीमाएं होती हैं। जीवन को उसके चित्र-विचित्र रंगों मे, उसके सूक्ष्मतम विवरणों के साथ, देखने के लिए लोगों को उनकी अपनी धरती पर मिलना जरूरी होता है, उनकी आशाओं और आशंकाओं को सुनना जरूरी होता है। पुस्तको मे समाकलित तथ्यों और आंकड़ों के पीछे जो वास्तविक चेहरे और दृष्टिकोण होते हैं उन्हे देखना होता है। इसलिए मैं सचमुच के, जीवंत सोवियत संघ को, उसके लोगों को—पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को—देखना चाहता था जिनकी संख्या आज २४ करोड़ है।

यह अवसर १९६९ के अन्तिम भाग में आया जब मैंने एक लेखक की हैसियत से लगभग दो महीने सोवियत संघ का भ्रमण किया। मैं लोगो से उनके घरों मे, उनके कारखानों में और फार्मों में मिला, उनकी उपलब्धियां देखी और उनके दिलों की धड़कनें महसूस कीं। मुझे प्रचलित धाराओं का खास कर मजदूरों के लिए प्रोत्साहन उपायों के विवादग्रस्त क्षेत्र का भी कुछ अंदाज मिला। मानव के विकास की प्रक्रिया को, वह जीवन की जिस कला को अर्जित कर रहा है उसे, देखने की अपनी खोज में मैंने अपना काफी अधिक समय शिक्षा-पद्धति के अध्ययन मे गुजारा। सारे सोवियत संघ में, ७ से १७ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए, दस वर्ष की अनिवार्य स्कूली शिक्षा का व्यवहारतः अर्थ यह हुआ कि सोवियत संघ की नियति को रूप और आकार देने जा रही सारी पीढ़ी आज स्कूली पोशाक मे है।

मैं रोज ही नये-नये स्थानों में जाता रहा और नये-नये चेहरे देखता रहा। मास्को के क्रेमलिन और विख्यात लेनिनग्राद—जो क्रान्ति का क्रीड़ागन और हिटलरी दस्तो के विराट प्रतिरोध का क्षेत्र है—से मैं एशियाई संभाग के ताजिकिस्तान मे एक सहकारी फार्म के हरे-भरे खेतो में जा पहुंचा जो लगभग हमारी कश्मीर सीमा को छूते हैं, और उसके बाद मैंने पाया कि मैं हृष्ट-पुष्ट, मुस्कराते हुए स्कूली बच्चों के बीच हूं। वापस मास्को आकर मैंने कुछ विशेषज्ञों, प्राच्य संस्थान के भारतीय विभाग जैसी संस्थाओं के अध्यक्षों, शिक्षा जगत के अकादमीशियनों, प्रावदा तथा अन्य अखबारों के वरिष्ठ पत्रकारों, सर्वोच्च ट्रेड यूनियन अधिकारियों, कम्युनिस्ट सिद्धान्तकारो, नौजवानो और महिला-नेताओं आदि से मुलाकात की। मैंने विषयों के बुनियादी तत्वों पर बातचीत और विमर्श किया तथा पुनः लोगों के पास दौड़ा, क्योंकि केवल उन्ही मे मैं इस विकासशील नयी हुकूमत को इसकी ताजगी, उत्साह और वृद्धिशील संभावनाओं के साथ देख सकता था। चमचमाते बड़े-बड़े नगरों के शोर-गुल से बहुत दूर,

मैं आम आदमी की कुटीरों और फ्लैटों मे, उनके नव अर्जित संस्कृति-प्रासाद और संगीत विभाग, फिल्म, नाटक तथा क्लबों के केन्द्रों मे गया।

मैं साइबेरिया के वाइकाल झील सभाग में भी गया और खुद देखा कि इस घने जगल में नौजवान शिक्षित लड़के और लड़कियां किस तरह जेहादियों की तरह पहुंचे थे। उन्होने अपने अग्रगामी तथा सकल्पवद्ध श्रम से प्रायः वीराने को हलचल से गूजते आधुनिक नगरो में परिणत कर दिया।

वहा से मैं कजाखस्तान, चीन की सीमा से लगे विराट एशियाई हिस्से में, पहुंचा। मैंने एशिया के इन इलाकों—कजाखों और ताजिको की धरती—को अपने यात्रा कार्यक्रम में विशेष रूप से शामिल किया था, क्योंकि पुराने समय में उनकी समस्याए, जिनमें निकटस्थ उजवेकिस्तान भी शामिल है जहां सुप्रसिद्ध पुराने नगर बुखारा तथा समरकंद है, हमारी समस्याओं से अर्थतंत्र तथा राजनीति मे बहुत साम्य रखती थी, और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संस्कृति एवं सभ्यता में उनमें तथा हममे काफी साम्य रहा है।

इन सभी स्थानों पर, मैंने खुले दिमाग से जीवन के उस नये ढंग के तथ्यो की तह तक जाने का प्रयत्न किया जो वहा सर्वत्र दिखाई देता है। मेरे मन में इतने सारे सवाल थे। क्या सोवियत नागरिक का जीवन निरतर सुखी और स्वतंत्र होता जा रहा है? पारिवारिक जीवन, सेक्स, प्रेम, सौंदर्य, धर्म, श्रम के लिए प्रोत्साहन-उपाय इत्यादि के बारे में वह किस प्रकार की धारणाएं बना रहा है? क्या उसका राष्ट्रवाद उसकी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की निष्ठा से संतुलन रखता है? साहित्य और कला में उसकी अभिरुचि कैसी और क्या है? क्या नौजवानों में पुराने क्रान्तिकारियो जैसा उत्साह है? पुरुषों के साथ पूर्ण समता पाने के फलस्वरूप क्या स्त्रियों की कमनीयता और अंतर्निहित गुण नष्ट हो गये है? क्या पारिवारिक संबंध कमजोर हो गये हैं? सर्वोपरि, समाज की नयी व्यवस्था कहा तक जीवन को भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में सपन्नतर और पूर्णतर बना सकी है? यह एक बुनियादी सवाल था, क्योंकि समाजवाद या कोई भी अन्य समाज व्यवस्था जो मानवता और उसके उन्नयन की हिमायती होने का दावा करती है, उसे व्यक्ति की ठोस सेवा करने की क्षमता की परीक्षा देनी ही होती है—व्यक्ति अर्थात मानव, जो कोई अमूर्त्त चीज नहीं, वल्कि अपनी जरूरतो, अपनी योग्यताओं, अपनी आकांक्षाओं के साथ एक निहायत जीता-जागता प्राणी है।

गहनतर दृष्टि पाने की खातिर मैंने जीवन के विविध पक्षों से सबद्ध, सोवियत संघ मे हाल में प्रकाशित अनेक प्रासंगिक और आधिकारिक पुस्तकें एकत्र की जिन्हें मैंने पहले नही पढ़ा था। ये उपयोगी साबित हुई हैं और इस वर्णन में मैंने उनमे से कुछ के उद्धरण दिये हैं।

मुझे यह भी उल्लेख करना चाहिए कि अपनी यात्राओं और मुलाकातों का कार्यक्रम खुद मैंने ही तैयार किया था। मैंने बिना किसी बाधा के उसे पूरा किया। मैंने न तो कोई लौह आवरण देखा न महसूस किया। मुझे नोवोस्ती प्रेस एजेन्सी, सोवियत पत्रकार संघ को धन्यवाद देना चाहिए, जिन्होने इतनी तत्परता से मेरी यात्रा के इतजाम किये, मुलाकातें और विभिन्न स्थलों की यात्राओं का बन्दोबस्त किया। मैंने प्रारम्भ में उन्हें एक सात पृष्ठ का टंकित कार्यक्रम दे दिया था जिसे खुद मैंने तैयार किया था। उन्हे मेरी पहली पुस्तक **इन अंडमान्स, दी इंडियन बॅस्टील** के बारे में, जिस पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था, और भारतीय अखबारों में स्वातंत्र्य संग्राम के बारे में एक जनवादी दृष्टिकोण से लिखे गये मेरे नियमित लेखों के बारे में मालूम था, और इससे एक मानवीय दृष्टि से आम पुरुषों और स्त्रियों के जीवन को देखने मे मेरे विशेष जोर को समझने में उन्हें देर नही लगी।

जब मैं सोवियत सघ की यात्रा के लिए रवाना हुआ तो मेरे मन में ऐसा कोई भ्रम नही था कि मैं वहा निष्कलंक या घोर अधकारमय चीजें पाऊंगा। मैं एक आड़े-तिरछे रास्ते से एक नयी सामाजिक व्यवस्था के निरंतर निर्माण, एक संक्रमण काल मे विराट्काय निर्माण की झलकिया देखने गया था और इस प्रयत्न में मुझे अत्यधिक सफलता मिली। मैंने प्रस्फुटनशील नये मानव के उस रोमाचक और आनददायी स्वरूप का दर्शन पाया जिसका मैंने अगले पृष्ठों मे वर्णन किया है।

आइ. जे. ३१ एरामंजिल कालोनी
हैदराबाद

विजय कुमार सिन्हा

अध्याय १

एक सूक्ष्म संकेतक

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था उस समूचे समाज के विकास के स्तर का एक सूक्ष्म संवेदनशील संकेतक हुआ करती है। वह उसकी आकांक्षाओं, उसकी प्रेरणाओं और भविष्य के उसके स्वप्न का भी दर्पण होती है।

इसलिए मैंने अपने कार्यक्रम में सोवियत संघ के विभिन्न भागों के स्कूलों और कालिजों की यात्राओं का खास तौर पर समावेश किया था। इसमें मैंने जो अनेक दिन लगाये, वे अत्यन्त फलदायी साबित हुए। इससे मुझे उस शिक्षा प्रणाली का निकट से ज्ञान प्राप्त हुआ जो वहां विकसित की जा रही है।

मास्को स्कूल न. २६ में मैंने सबसे नीची कक्षा से लेकर सर्वोच्च दसवीं कक्षा तक घूमते हुए पूरा एक दिन व्यतीत किया। कक्षाएं अपने सामान्य ढंग से चल रही थीं। मैंने इस स्कूल को इसलिए चुना क्योंकि उसमें अनेक विषयों का माध्यम अंग्रेजी है और इसलिए मैं छात्रों से सीधे-सीधे बातचीत कर सकता था।

दूसरी कक्षा में, जिसमें आठ वर्ष की आयु वाले लगभग ४० बच्चे थे, मैंने एक सामान्य प्रश्न किया कि वे लेनिन के बारे में क्या जानते हैं। आध घंटे तक धारा-प्रवाह रूप से मुझे जो उत्तर मिले वे बहुत रोमांचक थे। ये सभी जवाब छोटे-मोटे सरल वाक्यों में थे। एक बच्चे ने कहा: "लेनिन अपनी मां की मदद किया करते थे।" जब मैंने पूछा, "कैसे?" तो उसने जवाब दिया: "फर्श धोकर और बर्तन साफ़ करके।" एक छोटी-सी लड़की ने कहा: "लेनिन ने एक बार बिल्ली को छड़ी पर से कूदना सिखाया था।" अन्य बच्चों ने इसमें जोड़ा — कि लेनिन ईमानदार, दयालु थे, कि वह हमेशा सच बोलते थे, संगीत के प्रेमी भी थे, वह कई बार जेल गये थे, "निर्वासित" भी रहे हैं, वह मजदूरों से प्रेम करते थे, उनका एक अच्छा भाई था जिसे फांसी दे दी गयी थी, वह हमेशा अपने मां-बाप को प्यार करते थे और उनकी आज्ञा मानते थे, "जब वह छोटे-से लड़के थे तो बहुत शोर करते थे," "हमेशा विनम्र रहते थे," "कभी डींग नहीं हांकते थे," काम करना पसंद करते थे, कभी भी स्कूल पहुंचने में देर

श्रीमती बोकोवा, लेखक और स्कूल नं. २६ के निदेशक,
टैगोर क्लब हाल में.

नहीं करते थे। आज लेनिन सोवियत जनता के आदर्श हैं और इन अकुंठित अभिव्यक्तियों ने मुझे अच्छे आदमी की समाजवादी धारणा का साक्ष्य दिया जो उदीयमान पीढ़ी के मन पर छाती जा रही है।

एक उच्चतर कक्षा में मैंने दीवार पर सभी देशों के झंडे, लेनिन का चित्र, "कायर अपनी मृत्यु से पहले ही बार-बार मरते हैं," समेत शेक्सपियर की पंक्तियां, ये सभी सुन्दर ढंग से सज्जित देखीं। इस स्कूल में टैगोर क्लब है जो टैगोर की पुस्तकों, उनकी श्रीनिकेतन कला-वस्तुओं और सर्वोपरि उनके गीतों से परिपूर्ण था। मेरे अनुरोध पर दो लड़कियों ने आश्चर्यजनक सही उच्चारण के साथ रवीन्द्रनाथ के दो गीत गाये। इस क्लब की अध्यक्षा श्रीमती वालेरिया वोकोवा हैं, जो इसी स्कूल में पढाती हैं। जब मैंने उनसे पूछा कि आपके मन मे यह विचार पहले-पहल कैसे आया, तो उन्होंने बताया कि नारीत्व के बारे में टैगोर की अद्‌भुत अवधारणा ने उन्हे गहरे रूप में आन्दोलित किया था, और क्लब का संगठन करके वह उस महान भारतीय कवि के साथ भावात्मक सूत्र कायम करने मे समर्थ हुई हैं।

जब हम क्लब हाल में बातचीत कर रहे थे, मैंने देखा कि काफी सारे बच्चे बंद दरवाजे के बाहर धक्का-मुक्की कर रहे थे, और छोटे बच्चे कांच के दरवाजे पर अपनी नाक धसा रहे थे। श्रीमती वोकोवा मुस्करा दी और दरवाजा खोल दिया। उसके बाद बातचीत की गुंजाइश ही कहां थी। मुझे उनसे उपहार लेने पड़े—चित्र, खिलौने, किताबें, उनकी पेंटिंग्ज (रंगसाजी), लेनिन पदक, ग्रामोफोन रेकार्ड—बच्चों की दुनिया का पूरा मेला।

शिक्षा व्यवस्था

सोवियत सघ में प्राइवेट स्कूल बिलकुल नही हैं। सभी के लिए शिक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी राज्य पर है। सोवियत शिक्षा व्यवस्था के तीन मुख्य स्तर हैं—स्कूल पूर्व सस्था, सेकेंडरी सामान्य स्कूल और विशेषीकृत सेकडरी स्कूल तथा उच्चतर स्कूल। स्कूल पूर्व चरण मे तीन वर्ष तक की आयु के बच्चे क्रेशे—(शिशु गृहों) मे जाते हैं और बाद में ३ से ७ वर्ष के आयु-समूह के बच्चे किंडरगार्टन (शिशु विद्यालय) मे। स्कूल पूर्व संस्थाओं की कुल सख्या लगभग एक लाख है। हर सुबह ९५½ लाख बच्चों को उनके माता-पिता इन संस्थाओं में ले जाते हैं। महिलाओ के लिए खास तौर पर यह एक बड़ा वरदान है, वरना ये अपने बच्चो के बारे में निश्चित होकर दिन में ८ घटे काम नही कर सकती थी। शिशु विद्यालय की प्रधान अध्यापिका एक प्रशिक्षित शिक्षिका होती है, जिसे विशेष मेडिकल प्रशिक्षण भी मिला होता है। उसके सहायक

भी विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होते हैं। शिशु विद्यालय के बच्चों को अपने आप खाना खाना, नहाना और कपड़े पहनना, अपनी वस्तुएं साफ सुथरे तथा क्रमबद्ध ढग से रखना, अपना बिस्तर लगाना और खिलौने संभालकर रखना सिखाया जाता है। वह प्रतिदिन ३-४ घंटे सक्रिय रचनात्मक खेल और खेल-कूद में व्यतीत करता है। वह शुद्ध बोलना, गिनती, ड्राइंग, गाना और लयात्मक शारीरिक हरकतें सीखता है। सर्वोपरि, उसे सामूहिक रहन-सहन की आदतें अर्जित करने में मदद की जाती है। बच्चों की पूरी देख-भाल पूरे दिन की जाती है और उन्हें पोषक भोजन दिया जाता है। एक डाक्टर और एक नर्स स्वयं संस्था मे ड्यूटी पर रहते हैं। एक बच्चे पर प्रतिवर्ष कुल खर्च लगभग ३०० रूबल (१ रूबल—८·३३ रु.) बैठता है।

मां-बाप को अपनी आय के अनुसार, कुल खर्च का केवल १५ या २५ प्रतिशत खर्च देना पड़ता है। यह खर्च काफी कम है, क्योंकि काम करने वाले औसत दपति की आमदनी २४० रूबल प्रति मास आती है, और प्रति परिवार बच्चों की औसत सख्या भी दो से कम है। मा-बाप के लिए यह अनिवार्य नही है कि वे अपने बच्चों को शिशु विद्यालय में भर्ती करायें। बच्चा जब सात साल का हो जाता है तभी स्कूल में भर्ती कराना अनिवार्य हो जाता है। उसे तब दस कक्षाओं वाले सामान्य सेकेंडरी स्कूल के भवन मे प्रविष्ट होना पड़ता है जो कि अगले आयु समूह ७ से १८ वर्ष के लिए होते हैं।

नवीनतम नियमों की तहत यह दस वर्षीय कोर्स सभी बच्चों के लिए अनिवार्य है। इसमे सामान्य और पालिटेक्नीकल ज्ञान, नैतिक मूल्यो और सौंदर्य बोध का मस्तिष्क मे बैठा देना तथा शारीरिक व्यायाम भी शामिल होता है। स्कूली शिक्षा के दो चरण होते हैं : प्राथमिक १-३ कक्षा तक और सेकेंडरी ४-१० कक्षा तक। पहली श्रेणी के पाठ्यक्रम मे आधा समय भाषा सिखाने मे जाता है। शेष आधा समय गणित, ड्राइंग, संगीत, व्यायाम, शारीरिक श्रम, प्राकृतिक विज्ञान और इतिहास के अध्ययन में लगता है। छात्रों को क्लास रूम सजाने, गमलों के पौधे सीचने, कैंटीन और उपाहार गृहों में काम, अहाते और सड़क सवारने, बूढे, पेंशनयाफ्ता लोगो और उनके परिवारो की मदद करने जैसे कार्य सौंपे जाते हैं। इन सभी का उद्देश्य यह है कि बच्चा या बच्चो, अपने निर्माण के वर्षो मे, वृहत्तर सामाजिक जीवन में संलग्न हो सकें और दूसरो की सेवा करना सीखें। बाद के सात वर्षों मे विभिन्न विषयो का व्यवस्थित अध्ययन कराया जाता है जिसमें गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, प्राणिशास्त्र, इतिहास, भूगोल, मातृभाषा, रूसी (गैर-रूसियो के लिए उनकी स्थानीय भाषा) तथा विदेशी भाषाएं, ड्राइंग, साहित्य, गायन, शारीरिक श्रम और शारीरिक व्यायाम शामिल हैं।

यह पाठ्यक्रम प्राकृतिक और गणितीय विज्ञानों, तथा मानविकी में भी, एक सर्वांगपूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से बनाया गया है। इन वर्षों के दौरान पॉलीटेक्नीकल ट्रेनिंग में औद्योगिक एवं कृषि उत्पादन की बुनियादी तत्वों की जानकारी और उपकरणों तथा औजारों के उपयोग की शिक्षा शामिल होती है। उच्चतर कक्षाओं में सभी विषयों पर उनके व्यावहारिक अमल पर जोर होता है। इन सेकेंडरी स्कूलों की कुल सख्या लगभग सवा दो लाख है। ट्यूशन फीस नहीं लगती। लेकिन राज्य पर प्रति छात्र प्रति वर्ष ९० रूबल का खर्च आता है। ४,२०० विशेषीकृत सेकेंडरी स्कूल हैं जिनमें अमूमन ४ वर्ष का कोर्स होता है। आठ वर्ष की सामान्य स्कूल शिक्षा प्राप्त छात्र प्रवेश परीक्षा पास करने के बाद, यहां भर्ती हो सकते हैं। ये स्कूल उद्योग, परिवहन, कृषि, संचार, निर्माण, औषधि, संगीत, कला और शिक्षा की विभिन्न शाखाओं में विशेषज्ञता रखते हैं। पेशों और व्यवसायों की सूची में १,१०० क्षेत्र आते है। इन स्कूलों से मध्यम श्रेणी के योग्यता प्राप्त विशेषज्ञ पास होकर निकलते हैं। इनमे मुफ्त प्रशिक्षण के अलावा ७५ प्रति शत छात्रों को छात्रवृत्ति भी दी जाती है। अतएव प्रति वर्ष प्रति छात्र लगभग ८०० रूबल तक खर्च हो जाता है। निम्नतर श्रेणी के लगभग ४,००० तकनीकी स्कूल भी हैं, जिनमें एक से दो वर्ष तक विभिन्न पाठ्यक्रम होते हैं।

३०० नगरों और शहरों मे फैले हुए ८०० संस्थानों में उच्चतर स्तर की कालिज शिक्षा दी जाती है। ये संस्थाएं और ४८ विश्वविद्यालय—४०० विशेष विषयो की शिक्षा देते हैं। आज के व्यावहारिक विज्ञानों के लिए, जो कि भौतिकी, गणित, रसायनशास्त्र, प्राणिशास्त्र, यान्त्रिकी और साइबरनैटिक्स पर निर्भर हैं; उनके प्रशिक्षण में, और कालिज अध्यापकों के उच्चतर प्रशिक्षण में तथा मास्टर ऑफ साइंस और डाक्टर ऑफ साइंस की तैयारी में भी, विश्वविद्यालय एक बड़ी भूमिका अदा करते है। विश्वविद्यालय मानविकी विज्ञानों मे भी अनेक विशेषज्ञ तैयार करते हैं। विश्वविद्यालयो के अलावा, शिक्षा शास्त्रीय, पुस्तकालयीन, अर्थशास्त्रीय, कानूनी और विभिन्न कला महाविद्यालयों मे भी, मानविकी के विशेषज्ञ प्रशिक्षित किये जाते हैं।

प्रत्येक सस्था एक चुनिन्दा विषय में विशेषज्ञता रखती है। समूचे कोर्स में ५ से ६ वर्ष तक, अलग-अलग अवधि लगती है। सोवियत कालिज गहन सैद्धान्तिक ज्ञान का व्यावहारिक प्रशिक्षण से पूर्ण समन्वय करते है। उच्चतर महाविद्यालयों के बाहर लिया गया व्यावहारिक प्रशिक्षण सैद्धान्तिक अध्ययन की मात्रा का लगभग २५-३० प्रति शत होता है, और पुनः शिक्षण का आधा समय कालिज की प्रयोगशालाओं मे व्यतीत होता है। १९६८ मे पास हुए कुल स्नातको मे से ४० प्रति शत इंजीनियरी और तकनीकी विशेषज्ञ थे, ४५ प्रति

शत मानविकी और प्राकृतिक विज्ञानो के, ८ प्रति शत कृषि के और ७ प्रति शत औषधि के। कालिजों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा ली जाती है। १९६९ में, ५,७५,००० इन संस्थाओं से स्नातक बने, जबकि दस लाख से अधिक छात्रों ने विशेषीकृत सेकेंडरी स्कूलों में अपनी शिक्षा पूर्ण की। प्रत्येक उच्चतर स्कूल छात्र के लिए सरकार लगभग १,००० रूबल खर्च करती है। अधिकाश, लगभग ७५ प्रति शत छात्र ३० से ५० रूबल की मासिक छात्रवृत्ति पाते हैं। विशेष रूप से प्रतिभाशाली छात्रों को २५ प्रति शत अतिरिक्त छात्रवृत्ति मिलती है। सेकेंडरी स्कूलों की भांति यहां भी कोई ट्यूशन फीस नही लगती। आज लगभग ५० लाख छात्र सोवियत महाविद्यालयों में प्रशिक्षण पा रहे हैं। समूची शिक्षा प्रणाली मे, ७ करोड़ से अधिक लोग अध्ययन में लगे हुए हैं, जिसका अर्थ हुआ कि सोवियत संघ का प्रत्येक तीसरा व्यक्ति छात्र है। सोवियत संघ के बजट खर्च में से लगभग छठा भाग शिक्षा के लिए आवटित है। प्रतिरक्षा खर्च से यह ४ प्रति शत अधिक है।

सोवियत संविधान नागरिकों को शिक्षा पाने का अधिकार देता है। सभी सभव कदमों से शिक्षा को सचमुच देश के कोने-कोने में और जनता के सभी तबकों तक पहुंचाने के प्रयत्न किये जाते हैं। १९१७ के बाद से शिक्षा सुविधाओं के उत्तरोत्तर विस्तार मे, केवल दस वर्ष पहले ही यह सभव हो सका कि आठ वर्ष की अनिवार्य स्कूल शिक्षा लागू की जा सके। इस प्रकार अधिक उम्र वाले काफी सारे लोग शेष रह गये थे, जो आज शिक्षा के क्षेत्र मे नवीनतम और सुधारी हुई सुविधाएं हासिल करने की आकाक्षा महसूस करते है। जिन युवतर लोगो ने, विभिन्न परिस्थितियोवश आठ वर्ष की शिक्षा के बाद अध्ययन छोड़ दिया था, और कारखानो, खेतो या दफ्तरो में रोजी अपना ली थी, वे भी अपना अध्ययन पुनः शुरू करना चाहते हैं। ऐसे सब लोगों के लिए अब पत्राचार और साध्य शिक्षा सस्थाओं तथा स्कूलों का भी एक सुविस्तृत सगठन है। सोवियत संघ मे ३० स्वाधीन पत्राचार तथा सांध्य सस्थाएं हैं और सामान्य संस्थाओं में एक हजार से अधिक पत्राचार और साध्य-शिक्षा विभाग हैं। उच्चतर स्कूलों के संपूर्ण छात्र समुदाय का ५० प्रति शत अंश उन्ही का है। तकनीकी स्कूलो के क्षेत्र को मिलाने पर ऐसे छात्रो की कुल संख्या ४५ लाख होती है।

इस प्रकार शिक्षा संस्थाओं में अध्ययनरत लोग अपना काम छोड़े बिना राज्य से उल्लेखनीय सुविधाएं पाते हैं। इनमें १० से ४० दिन तक की अवधि के लिए वेतन सहित अतिरिक्त विशेष अवकाश, और प्रयोगशालाओं या परीक्षा केन्द्रों तक आने-जाने के यात्रा-भत्ते शामिल हैं। इस वर्ग के छात्रों

की मदद के लिए राष्ट्रीय टेलीविजन केन्द्र विज्ञान और इंजीनियरी के विषयों पर प्रमुख वैज्ञानिकों और प्रोफेसरों के भाषण प्रसारित करते है।

उनको जितनी ज्यादा आर्थिक सुरक्षा और अवकाश दिया जा रहा है, समूची सोवियत जनता की रुचियां तेजी से मानव ज्ञान के सभी क्षेत्रों मे बढ़ती जा रही हैं। इससे हाल में "जन विश्वविद्यालयों" के उदय का कारण समझ मे आ जाता है, जो आबादी के सांस्कृतिक स्तर को उठाने के लिए एक नये ढंग के संगठन हैं। नवीनतम आकड़ों के अनुसार, जो मुझे प्राप्त हुए थे, ऐसे १७,००० विश्वविद्यालय हैं। बड़े उद्योगों, शोध संस्थाओं, सांस्कृतिक सस्थानों, उच्चतर स्कूलों, राजकीय और सामूहिक फार्मों में ये विश्वविद्यालय स्थापित किये गये हैं।

ये विश्वविद्यालय जो ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रो में विशेषज्ञता रखते है, इनमें पेंतीस लाख से अधिक छात्र जाते हैं, जो काम के बाद के घंटों में विज्ञान और टेक्नॉलॉजी, साहित्य और कला, शिक्षाशास्त्र, अर्थशास्त्र, औषधि, राज्य और कानून, दर्शन और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो की समस्याओं पर व्याख्यान सुनते हैं; २०,००० से अधिक वैज्ञानिक, प्रोफेसर और सहायक प्रोफेसर, शैक्षिक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता और इंजीनियर, बिना किसी मानदेय (वेतन) के, इन विश्वविद्यालयों मे प्रशिक्षक के रूप में स्वच्छंद कार्य करते हैं। "महिलाओं के लिए जन विश्वविद्यालय" विशेष रूप से शुरू किये गये हैं। वे स्वास्थ्य विज्ञान (हायजिन), विवाह और परिवार के कानून, बच्चों की परवरिश और सबद्ध विषयों पर व्याख्यान आयोजित करते हैं। १९६६ में इन विश्वविद्यालयों में आने वाले कुल छात्रो की संख्या के एक विश्लेषण से पता चलता है कि २० प्रति शत छात्र कालिज शिक्षा प्राप्त थे, ३६ प्रति शत सेकेंडरी शिक्षा, ३१ प्रति शत अपूर्ण सेकेंडरी शिक्षा और १० प्रति शत केवल प्राथमिक शिक्षा वाले थे।

अकादमीशियन् जापोरोजेत्स

शिक्षा व्यवस्था को बेहतर रूप में समझने के लिए, मुझे यह जरूरी लगा कि स्कूलों में जाने के अलावा, किसी प्रमुख शिक्षाशास्त्री से सम्यक् विचार-विमर्श करना चाहिए। इसीलिए मैंने शिक्षणशास्त्रीय विज्ञान के एक अकादमीशियन श्री जापोरोजेत्स, और सोवियत संघ के शिक्षणशास्त्रीय विज्ञानों की अकादमी के सह-सदस्य श्री एडवर्ड कोस्त्याशिकिन के साथ एक सुबह पूरे तीन घंटे तक वार्तालाप किया। वे दोनों ही विभिन्न संस्थाओं के अध्यक्ष हैं—श्री जापोरोजेत्स स्कूल-पूर्व शिक्षा के, और श्री एडवर्ड स्नातकोत्तर योग्यता में सुधार की संस्था के रेक्टर हैं। दोनों अपने-अपने क्षेत्र के अधिकारी विद्वान

हैं और अनुभव एकत्र करने के लिए वे विश्व के अनेक नगरों का भ्रमण कर चुके हैं।

श्री जापोरोजेत्स ने आरम्भ में ही लक्षित किया कि शिक्षा देने के अपने प्रयत्न में वे स्कूल-पूर्व चरण को सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। उन्होंने यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित पाया है कि चार से छः की उम्र के बीच जो कुछ सीखा जाता है वह गहरी जड़ें जमा लेता है। यदि कोई बालक बुरी आदतें सीख लेता है तो बाद के वर्षों में उसे उनसे नजात दिलाने में मदद करना मुश्किल है। अतएव व्यक्तित्व को ढालने की प्रक्रिया इन्हीं आरम्भिक वर्षों में शुरू हो जाती है। खेलकूद, कार्य और पाठ की दिनचर्या के माध्यम से बच्चों को ज्ञान के जगत का और समाजवादी समाज की आचरण पद्धति का परिचय कराया जाता है। स्कूली गतिविधियों के सामूहिक भावनात्मक अनुभव के माध्यम से सामूहिक जीवन और सामूहिक कार्रवाइयों की भावना उनके मन में पैठायी जाती है। इस मुद्दे को विस्तार से समझाते हुए श्री जापोरोजेत्स ने मुझसे कहा कि इगलैंड और अमरीका में जब उन्होंने वहां के शिशु विद्यालयों में बच्चों को खिलौनों की ओर "मेरे खिलौने" कह कर संकेत करते हुए देखा तो आश्चर्य चकित रह गये। सोवियत संघ में कोई भी बच्चा उस तरह से महसूस नहीं करेगा, न बोलेगा। वह कहेगा, "हमारे खिलौने।" श्री कोस्त्याश्किन समस्त वार्तालाप मे भाग ले रहे थे और एक बार वह अपने विचारों के प्रस्तुतीकरण में इस कदर विभोर हो गये कि यह भी भूल गये कि वह सरकते-सरकते सोफा के एकदम किनारे पर जा पहुंचे हैं। मुझे युक्तिपूर्वक उन्हें थोड़ा सा पीछे खिसकाना पड़ा। तीन घंटे बाद भी उन्हें लग रहा था कि कुछ और समय मिलता तो वह शिक्षा व्यवस्था के बुनियादी सिद्धान्तों को और भी पूर्णता के साथ स्पष्ट कर सकते थे। इसलिए उन्होंने उसी दिन मेरे होटल में अपनी वे रचनाएं भेज दी जो प्रावदा तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं।

उनसे मैं पद्धति और दृष्टिकोण की विशिष्ट तफसीलों से तो परिचित हुआ ही, उसके अलावा मुझे सोवियत विद्वानो के साथ सम्पर्क का एक ताजगी देने वाला अनुभव भी हुआ। उनके मन में रचमात्र भी दंभ नहीं था। वे खुले दिमाग से सत्य की शोध में लगे हुए विद्वान थे। मैं वहां से रवाना हुआ उससे पहले ही मुझे पता लगा कि उन दोनो ने नाजियों के खिलाफ लड़ाई में हिस्सा लिया था और अनेक पदक जीते थे। मैं उनसे इस बारे में कुछ नहीं कहलवा सका। वे सिर्फ विनम्रता से मुस्करा दिये और बोले, "अरे, ऐसे तो यहां बहुत सारे लोग हैं।" मुझे याद था कि वे अध्ययन जगत के सर्वोच्च लोगों में से थे। सोवियत संघ विज्ञान अकादमी के लगभग ६०० सदस्य हैं और विभिन्न गणराज्यों की अकादमियों के १,०००। वहां सह-सदस्य भी

एक सामान्य किंडरगार्टेन.

होते हैं। देश में वे अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति हैं। अकादमीशियन को प्रायः उतना ही वेतन मिल जाता है जितना कि सोवियत प्रधानमंत्री को। कुछ मामलों में तो उससे भी ज्यादा होता है।

शिशु विद्यालय का संदर्शन

इस बातचीत के बाद मास्को के एक शिशु विद्यालय में जाना मेरे लिए और अधिक रोचक हो गया। मैं सुबह जल्दी ही वहां पहुंच गया था और एक बगीचे के बीचोबीच स्थित दुमंजिले विशाल भवन के मुख्य प्रवेश द्वार पर नौजवान प्रभारी अध्यापिका मुझे मिली। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वह मुझे अपनी संस्था की सभी वस्तुएं दिखाएं। उन्होने कहा, पहले छोटे बच्चो से मिलना बेहतर होगा, और मैंने वही किया। यह मिलन नन्हें-मुन्नो के एक नेता तथा उसके बाद उसके तीन सहयोगियो द्वारा मेरे भव्य स्वागत से शुरू हुआ। एक बहुरंगी तश्तरी में बेरियो जैसे कुछ जंगली फल, जिनमें छिद्र करके रंगीन कागज लगा कर उन्हें "फलों का सिर" बना दिया था, उन्होंने मुझे दिया। उसके बाद मैं एक से दूसरे कमरे में गया। मैंने देखा कि कमरों में

हैं और अनुभव एकत्र करने के लिए वे विश्व के अनेक नगरों का भ्रमण कर चुके हैं।

श्री जापोरोजेत्स ने आरम्भ में ही लक्षित किया कि शिक्षा देने के अपने प्रयत्न में वे स्कूल-पूर्व चरण को सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। उन्होंने यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित पाया है कि चार से छः की उम्र के बीच जो कुछ सीखा जाता है वह गहरी जड़ें जमा लेता है। यदि कोई बालक बुरी आदतें सीख लेता है तो बाद के वर्षों में उसे उनसे नजात दिलाने में मदद करना मुश्किल है। अतएव व्यक्तित्व को ढालने की प्रक्रिया इन्हीं आरम्भिक वर्षों में शुरू हो जाती है। खेलकूद, कार्य और पाठ की दिनचर्या के माध्यम से बच्चों को ज्ञान के जगत का और समाजवादी समाज की आचरण पद्धति का परिचय कराया जाता है। स्कूली गतिविधियों के सामूहिक भावनात्मक अनुभव के माध्यम से सामूहिक जीवन और सामूहिक कार्रवाइयों की भावना उनके मन में पैठायी जाती है। इस मुद्दे को विस्तार से समझाते हुए श्री जापोरोजेत्स ने मुझसे कहा कि इंगलैंड और अमरीका में जब उन्होंने वहां के शिशु विद्यालयों में बच्चों को खिलौनों की ओर "मेरे खिलौने" कह कर संकेत करते हुए देखा तो आश्चर्य चकित रह गये। सोवियत संघ में कोई भी बच्चा उस तरह से महसूस नहीं करेगा, न बोलेगा। वह कहेगा, "हमारे खिलौने।" श्री कोस्त्याश्किन समस्त वार्तालाप में भाग ले रहे थे और एक बार वह अपने विचारों के प्रस्तुतीकरण में इस कदर विभोर हो गये कि यह भी भूल गये कि वह सरकते-सरकते सोफा के एकदम किनारे पर जा पहुंचे हैं। मुझे युक्तिपूर्वक उन्हें थोड़ा सा पीछे खिसकाना पड़ा। तीन घंटे बाद भी उन्हें लग रहा था कि कुछ और समय मिलता तो वह शिक्षा व्यवस्था के बुनियादी सिद्धान्तों को और भी पूर्णता के साथ स्पष्ट कर सकते थे। इसलिए उन्होंने उसी दिन मेरे होटल में अपनी वे रचनाएं भेज दी जो प्रावदा तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं।

उनसे मैं पद्धति और दृष्टिकोण की विशिष्ट तफसीलों से तो परिचित हुआ ही, उसके अलावा मुझे सोवियत विद्वानों के साथ सम्पर्क का एक ताजगी देने वाला अनुभव भी हुआ। उनके मन में रंचमात्र भी दम्भ नहीं था। वे खुले दिमाग से सत्य की शोध में लगे हुए विद्वान थे। मैं वहां से रवाना हुआ उससे पहले ही मुझे पता लगा कि उन दोनों ने नाजियों के खिलाफ लड़ाई में हिस्सा लिया था और अनेक पदक जीते थे। मैं उनसे इस बारे में कुछ नहीं कहलवा सका। वे सिर्फ विनम्रता से मुस्करा दिये और बोले, "अरे, ऐसे तो यहां बहुत सारे लोग हैं।" मुझे याद था कि वे अध्ययन जगत के सर्वोच्च लोगों में से थे। सोवियत संघ विज्ञान अकादमी के लगभग ६०० सदस्य हैं और विभिन्न गणराज्यों की अकादमियों के १,००० । वहां सह-सदस्य भी

एक सामान्य किंडरगार्टेन.

होते हैं। देश में वे अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति हैं। अकादमीशियन को प्रायः उतना ही वेतन मिल जाता है जितना कि सोवियत प्रधानमंत्री को। कुछ मामलों में तो उससे भी ज्यादा होता है।

शिशु विद्यालय का संदर्शन

इस बातचीत के बाद मास्को के एक शिशु विद्यालय में जाना मेरे लिए और अधिक रोचक हो गया। मैं सुबह जल्दी ही वहां पहुंच गया था और एक बगीचे के बीचोबीच स्थित दुमंजिले विशाल भवन के मुख्य प्रवेश द्वार पर नौजवान प्रभारी अध्यापिका मुझे मिली। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वह मुझे अपनी संस्था की सभी वस्तुएं दिखाएं। उन्होंने कहा, पहले छोटे बच्चों से मिलना बेहतर होगा, और मैंने वही किया। यह मिलन नन्हे-मुन्नों के एक नेता तथा उसके बाद उसके तीन सहयोगियों द्वारा मेरे भव्य स्वागत से शुरू हुआ। एक बहुरंगी तश्तरी में बेरियों जैसे कुछ जंगली फल, जिनमें छिद्र करके रंगीन कागज लगा कर उन्हें "फलों का सिर" बना दिया था, उन्होंने मुझे दिया। उसके बाद मैं एक से दूसरे कमरे में गया। मैंने देखा कि कमरों में

साफ-सुथरे सफेद बिस्तर लगे हैं, खेल-कूद और भोजन के कक्ष एक-साथ थे, जिनमे तीन-चार कुर्सियों वाले छोटे-छोटे टेबुल लगे हुए थे। बच्चों के खेलने के लिए वहां तमाम तरह के खिलौने रखे हुए थे। मुझे यह थोड़ा अजीब लगा कि अनेक मेजों के चौगिर्द रखी कुर्सियों में एक पर एक-एक भालू गुड़िया रखी हुई थी। मैंने अध्यापिका से पूछा कि वहां बैठने वाले बच्चे इससे डर नहीं जायेंगे ? उन्होने जवाब दिया, "नही, इससे ठीक उल्टी बात होगी। वे और भी ज्यादा उत्साह से खायेंगे।" चूंकि यह स्कूल का समय था, बच्चे अपनी कक्षाओं में थे। अतः मुझे उनसे मिलने वही जाना था।

एक कक्षा मे बच्चे प्लास्टिक की मिट्टी से खिलौने बना रहे थे। मैंने उनमें से एक-से पूछा कि क्या वह मुझे अपने खिलौने देगा। पहले तो उसने अपनी अध्यापिका की ओर देखा, फिर उनके चेहरे पर स्वीकृति-भाव देख कर तत्काल अपने खिलौने मेरे हाथों में रख दिये। तभी उससे भगदड शुरू हो गयी। अध्यापिका की ओर आंखें उठती और मेरे हाथों में खिलौनों का अंबार लगने लगा। तदनंतर मुझे उस स्कूल के चिड़िया घर वाले खंड में ले जाया गया। वहां मैंने तरह-तरह के छोटे पक्षी, सफेद चूहे, रंगीन मछलियां देखीं। उनके पालक उन्हे सत्यभाव से घास तथा अन्य खाद्य पदार्थ खिला रहे थे। सारी दीवारों, बरामदों, कमरों, स्कूल-अहाते में सोद्देश्य सजावट की हुई थी, जिससे सारा स्थान एक सुषमापूर्ण दृश्य बन गया था। जब मैं खिलौने देख रहा था तो मैंने देखा कि खिलौने बिस्तरों पर सफेद चमड़ी वाले "पुरुषो" और "स्त्रियो" के छोटे-छोटे खिलौने सो रहे थे, जिनके सिर गुदगुदे तकियो पर आराम से रखे हुए थे। उन्ही के बीच सुखपूर्वक विश्राम कर रहे नीग्रो-खिलौने भी थे—काले रंग के शांत और सुखी चेहरे वाले दो पुरुष और स्त्री मूर्तियां—जो अपने दोनो बिस्तरों पर लेटे थे। मैं रसोईघर में भी गया। बेदाग सफेद कपड़े पहने हुए महिलाएं बच्चों का भोजन पका रही थी। वहा दो विशालकाय, चपटे लकड़ी के बक्से थे जिनमें अंगूर भरे हुए थे जो उसी दिन वितरित किये जाने वाले थे। अंगूर मास्को संभाग में नहीं उगते। सोवियत संघ के सुदूरवर्ती एशियाई भागों से वे यहा लाये जाते हैं। हंसमुख गोल-मटोल चेहरों वाले बच्चे, जिनकी आंखों में चमक थी और पोशाक रंगारंग, मुझे बरबस रोक रहे थे, मगर चूंकि तीन घंटे हो चुके थे, मैंने प्रभारी अध्यापिका से बातचीत के बाद अपना दौरा समाप्त किया।

वह अपने स्कूल के बच्चों के बारे मे मां जैसे स्नेह के साथ बात कर रही थी। उसने बताया कि केवल कुछेक मामलों में बच्चा अपनी मां का स्कर्ट या पिता की पतलून पकड़कर मचलता है, सो भी आरम्भ के कुछ दिनों में। लेकिन जल्दी ही किंडरगार्टन उसका द्वितीय घर बन जाता है जहां उसके जिगरी

दोस्त होते हैं, खिलौने होते हैं और होती है शिक्षिका, जो उसकी चाची या मौसी की तरह होती है। दिनों-दिन इस प्रकार बच्चे का व्यक्तित्व चौमुखी विकास करने लगता है। प्रत्येक बच्चे का, उसकी योग्यता और अभिरुचियों को सामने लाने की दृष्टि से, अध्ययन किया जाता है। इसका ध्यान रखा जाता है कि बच्चों की रचनात्मकता और स्वतःस्फूर्ति को कोई चीज कुचले नहीं। नैतिक मूल्यों का बोध और ज्ञान मुख्यतः कहानी कहने और खेल-कूद के जरिये प्रदान किया जाता है। प्रकृति, पौधों और पशुओं के प्रति भी बगीचो, फूलों, पौधों और स्कूल के "चिड़ियाघर" का मुफ्त उपयोग करके उनमें प्रेम विकसित किया जाता है। अन्त में, इस अध्ययन प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे सेकेंडरी स्कूलों में नियमित स्कूली अध्ययन के अगले चरण में अपने-आप पहुंच जाते हैं।

लुमुम्बा विश्वविद्यालय

स्कूल और शिशु विद्यालय के बाद मुझे एक विश्वविद्यालय देखना था। मैंने सुप्रसिद्ध पैट्रिस लुमुम्बा मैत्री विश्वविद्यालय जाने का निश्चय किया। इस नाम के पीछे एक इतिहास है। महान मुक्ति योद्धा और आजाद कांगो के प्रथम प्रधानमंत्री पैट्रिस लुमुम्बा अपने देश का पुनर्निर्माण करना चाहते थे। इस दायित्व की विराटता कुछ पश्चिमी पत्रकारों को समझाते हुए, इसके पहलुओ मे से एक के रूप मे उन्होंने इस तथ्य को उदाहृत किया था कि योरपीय शासको द्वारा सचालित "सभ्यता अभियान" की-शताब्दियों के बाद समूचे कागो में दो दर्जन से भी कम स्नातक थे। वह औपनिवेशिक अतीत से विरासत मे मिले पिछड़ेपन और अज्ञान को समाप्त कर देना चाहते थे। लेकिन साम्राज्यवादी दलालो ने उनकी जीवन लीला असमय ही समाप्त कर दी। उनकी नृशंस हत्या हुई थी। सोवियत जनता ने उनकी स्मृति सजोये रखने का सकल्प किया और मास्को मे यह विश्वविद्यालय अफ्रीका, एशिया और लातीनी अमरीका के देशो के छात्रों के लिए स्थापित किया। इस विश्वविद्यालय के उपकुलपति—जिन्हें रूसी मे प्रो-रेक्टर कहा जाता है—श्री वाय. एन. सोकोलोव ने इसके लक्ष्य के बारे मे बताते हुए मुझसे कहा कि उच्च दक्षता प्राप्त और अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री की भावना मे दीक्षित विशेषज्ञ प्रशिक्षित करके इन देशो की मदद करना ही हमारा अभीष्ट है। इसके अलावा, अल्प साधनों वाले परिवारो से आने वाले छात्रों को अवसर मुहैया करना भी एक लक्ष्य है। इसी हेतु उन्होने उपयुक्त सरकारी प्राधिकरणों और कुछेक सार्वजनिक संस्थाओं को कुछ योग्य छात्रों के नाम की सिफारिश करने का अनुरोध किया था। उनके दस वर्ष के जीवन काल में २,३०० से अधिक छात्र अपना विश्वविद्यालय का अध्ययन पूरा कर चुके हैं।

प्रथम वर्ष में प्रत्येक छात्र को रूसी भाषा का पाठ्यक्रम लेना होता है जो

बाद में अध्ययन की माध्यम भाषा बन जाती है, तथा इसके साथ ही, आवश्यक शैक्षिक स्तर तक सभी छात्रों को लाने के लिए एक विशेष तैयारी पाठ्यक्रम होता है। आगे चल कर पाठ्यक्रम ४ से ५ वर्ष के बीच के होते हैं; इंजीनियरी का ४ वर्ष का और औषधि का इससे एक वर्ष अधिक का पाठ्यक्रम होता है। छात्र जिन देशों से आते हैं, उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को सावधिक प्रायोजनाएं, डिप्लोमा थीसिस और शोध कार्य सौंपते समय ध्यान में रखा जाता है। श्री सोकोलोव ने सतोष के स्वर में मुझे सूचित किया कि समय बीतने के साथ वे छात्रों की सख्या बढ़ाने मे समर्थ हुए हैं और नवीनतम संख्या तीन हजार से ऊपर है। इस सख्या में लातीनी अमरीका और अफ्रीका के देशों के लगभग एक-एक हजार छात्र सम्मिलित हैं। एशियाई देशों और अरब देशों के छात्रों की सख्या मोटे तौर पर क्रमश: ६०० और ८०० थी। भारत से २१० और नेपाल से ६६ छात्र थे। अध्ययन के स्थान से छात्रों के घर तक आने-जाने का किराया सोवियत अधिकारी देते हैं। इसके अलावा, उन्हें गर्म कपड़े, मुफ्त छात्रावास तथा प्रतिमास ६० रूबल की छात्र वृत्ति अलग से दी जाती है। विश्वविद्यालय की लोकप्रियता की वृद्धि का सकेत इस तथ्य से मिलता है कि

लेखक लुमुम्बा विश्वविद्यालय के भारतीय छात्रों के एक समूह के साथ। लेखक के दायें गाइड और दुभाषिया खड़े हैं।

एक वर्ष में ६ सौ सीटों के लिए ९,००० प्रार्थना पत्र आये थे। उपकुलपति ने प्रसन्नतापूर्वक बताया कि लुमुम्बा विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित लगभग २०० विशेषज्ञ अपने-अपने देशों मे विभागाध्यक्ष और संकाय अध्यक्ष (डीन) के रूप में कार्य कर रहे हैं। भारत के श्री वेंकटकृष्ण रेड्डी कोयम्बटूर के टेक्नॉलॉजिकल इंस्टीट्यूट के गणित विभाग के अध्यक्ष हैं।

मैंने श्री सोकोलोव से कहा कि भारतीय छात्रों के बारे में उनके अनुभव जानने की मेरी बहुत इच्छा है। और जब उन्होंने उनके आम आचरण, अनुशासन तथा शैक्षिक परिणामो की प्रशसा की, तो मुझे अपार खुशी हुई। मैंने कहा कि मैं उनसे मिलना चाहूंगा। उन्होंने पूछा, "इसी कमरे में या कहीं और ?" मैंने विनम्रतापूर्वक बताया कि मैं अलग से मुलाकात चाहूंगा। भारतीय लड़के और लड़कियां आयीं तथा उत्साह के साथ उन्होंने बताया कि उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा जो सुविधाएं दी जाती हैं उनका वे किस प्रकार पूर्णतः सदुपयोग करते हैं। वे सामाजिक जीवन मे सक्रिय हिस्सा लेते है और भारतीय नाटको तथा नृत्यों के सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करते है, जिनकी काफी सराहना होती है।

मैंने उपकुलपति से पूछा कि विभिन्न देशों से आने वाले छात्र क्या भावनात्मक रूप से ऐक्यबद्ध हो रहे हैं ? श्री सोकोलोव ने जवाब दिया कि वे सोवियत जीवन के विशिष्ट ढंग के सामूहिक स्वरूप से जल्दी ही अभ्यस्त हो जाते हैं। ग्रीष्म मे समन्वित स्वयं सेवक दलो के सदस्यो के रूप में स्थानीय लोगों की मदद करने वाली प्रायोजनाओं मे काम करने के लिए वे दूर-दूर तक जाते हैं। हाल ही मे उन्होंने कारेलिया—झीलों और जगलो का एक इलाका —मे रेल लाइन बनाने मे, साइबेरिया में धातुविज्ञान के संयंत्र के एक कार्य मे, कजाखस्तान में एक पशुपालन केन्द्र, एक स्कूल और फ्लैट बनाने मे हिस्सा लिया था। भारतीय छात्र भी इन दलों के सदस्य थे।

एक भूतपूर्व छात्र ओसैन सिदिबे ने अपनी मातृभूमि नाइजीरिया से अपने विश्वविद्यालयीन प्रोफेसर को लिखा था, "...और हम अफ्रीकी स्नातक अपने लोगों की सेवा के उदात्त ध्येय मे अपना वह समस्त ज्ञान लगा देंगे जो हमने इस विश्वविद्यालय मे अर्जित किया है। ३३० से अधिक अफ्रीकी, स्त्री-पुरुष विशेषज्ञ बन कर अपने-अपने देशो मे लौट चुके है और ३० देशों मे कार्यरत हैं।...अपने अध्यापकों को हमारे हार्दिकतम धन्यवाद!" विश्वविद्यालय के कुलपति ने हाल में यह विचार व्यक्त किया था: "हमने जब अपने देश की उच्चतर अध्ययन की प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के द्वार खोले तो हमे पता था कि हम एक नया प्रयोग शुरू कर रहे हैं...क्या विभिन्न देशो के, विभिन्न विचारो और सामाजिक पृष्ठभूमियो के नौजवानों का एक एकजुट मैत्रीमय

समुदाय निर्मित करना संभव होगा ?...हमें सचमुच कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन वे असाध्य कदापि नहीं थी।"

जब मैं पूर्व में ताजिकिस्तान और कजाखस्तान गणराज्यों में गया, तो और अधिक स्कूल तथा कालिज देखने का मुझे पुनः अवसर मिला।

शिक्षक और अभिभावक

सोवियत संघ में अध्यापन को एक उत्तरदायित्वपूर्ण और सम्मानजनक काम माना जाता है। लगभग ढाई लाख शिक्षकों को पदक और अलकारों से विभूषित किया जा चुका है। उनमे से दसियों हजार शिक्षक सुप्रीम सोवियत —सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत—समेत अन्य सोवियतो के सदस्य हैं। अध्यापको के साथ विचार-विमर्श से मैं इस तथ्य से अवगत हो गया कि उन्होने एक उदात्त कर्तव्य के प्रति समर्पण की भावना से यह पेशा अपनाया है। निरपवाद रूप से वे बच्चो के व्यक्तित्व का सम्मान करते हैं और इस बारे मे सावधान रहते हैं कि अध्यापन-पद्धति में ऐसा कुछ भी प्रविष्ट न हो पाये जो बच्चो की स्वतःस्फूर्तता और आनद-बोध को नष्ट कर दे, जो कि आरम्भिक वर्षों मे विपुल मात्रा में उनमें पाया जाता है। शारीरिक दड की बात तक नही सोची जाती। वह निषिद्ध भी है। शिक्षक अपने छात्रों से स्नेह रखता है और प्रत्येक कक्षा का इंचार्ज एक शिक्षक होता है जो बच्चे के सर्वमुखी विकास के लिए जिम्मेदार होता है। यह शिक्षक अपने अधीन प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट समस्याओं, जरूरतों और चरित्र-निर्माण में प्रगति का अध्ययन करता है। मैंने एक शिक्षक के बारे में सुना जो लगातार सिगरेट पीता है मगर वर्षों तक उसने स्कूली घंटों में सिगरेट नही पी, भले ही उसे इस कारण कुछ बेचैनी होती रही हो, क्योंकि वह बुरा उदाहरण पेश नही करना चाहता था। शिक्षको के लिए उच्चतर कक्षाओं में १८ घटे और निम्नतर कक्षाओं में २४ घटे प्रति सप्ताह नियत है, जिसमे कि उन्हे अपने कार्य में कोई शारीरिक या मानसिक थकावट महसूस न हो। कक्षा के एक वर्ग मे अमूमन ३५ से ४० छात्र होते हैं जिनमे से एक छात्र मानीटर (कप्तान) होता है। कुल शिक्षकों की तादाद २५ लाख से ऊपर है जिनमे ७० प्रति शत महिलाएं हैं। सेकेंडरी स्कूल में उनका वेतन १२० से १३५ रूबल के बीच होता है। कालिजों मे वरिष्ठ अध्यापको को १८० रूबल प्रति माह मिलते हैं।

उनके कार्य का अभिनंदन करते हुए सोवियत संघ की सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने शिक्षको की कांग्रेस को संबोधित कर संयुक्त बयान मे "उनके द्वारा जनता की निस्स्वार्थ सेवा के प्रति गहन आभार" व्यक्त किया और यह विचार प्रकट किया कि "हमारे गौरवशाली बुद्धिजीवी

वर्ग के सबसे बड़े तबके होने के नाते सोवियत शिक्षक अपनी समूची शक्ति और ज्ञान जनता के व्यापक समुदायों की शिक्षा-दीक्षा में लगाते हैं तथा समाजवादी समाज की आध्यात्मिक और भौतिक संपदा को समृद्ध करने में महान योगदान करते हैं।" सारा देश प्रति वर्ष अक्तूबर के पहले रविवार को शिक्षक दिवस मनाता है। जो छात्र जीवन में अधिष्ठित हो चुके हैं वे उपहार, पार्टी, पत्रों और तार के जरिये अपने पुराने शिक्षकों का इस दिन सम्मान करते हैं। संयोग से मैं इस दिन सोवियत संघ मे था, चुनांचे मुझे कुछ लोगों के संस्मरण सुनने का सौभाग्य मिला। वे सभी अपने उन शिक्षकों के बारे मे भावप्रवण होकर बातें कर रहे थे, जिन्होंने कि उनकी समुचित शिक्षा-दीक्षा के लिए अत्यधिक प्रयत्न किये थे। उनकी बातों से मुझे याद हो आया कि शिक्षक पीढ़ियों के बीच का संबंध सूत्र होता है। वह युगों के अंतराल पर सेतु का कार्य करता है। जैसा कि एक सोवियत शिक्षाशास्त्री ने कहा : "वह एक 'रिले रनर' होता है, जो वर्तमान की छड़ी भविष्य के हाथों में सौंप देता है और यह उसके कार्य को आकर्षक तथा वस्तुतः रचनात्मक बना देता है।"

दो सौ से अधिक शिक्षाशास्त्रीय संस्थाएं और लगभग चार सौ स्कूल, दस लाख से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करते है। शिक्षकों के दैनिक पत्र का नाम है उचितेल्स्कया गजेता, जिसकी बिक्री १२ लाख होती है। सर्वोच्च शिखर पर शिक्षाशास्त्रीय विज्ञानों की अकादमी है, जो नाजियों के खिलाफ युद्ध के दिनों में स्थापित की गयी थी और जो नीतियों का निर्माण करती तथा समस्याओं की जांच-परख करती हैं। १९६८ में इसके लगभग ६८ सदस्य थे। इसके अनुसंधानों के बाद, हाल मे प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम स्कूलों में तीन वर्ष का कर दिया गया है, क्योंकि मौजूदा समाज में बच्चे आरंभ मे ही काफी विकसित हो जाते हैं। स्कूलों के समक्ष ज्ञान का भंडार बढ़ता ही जाता है, खास तौर से विज्ञान के क्षेत्र में, क्योंकि नित्य नयी-नयी खोज होती रहती हैं और इससे स्कूलों के विषयों मे सुधार करना आवश्यक हो जाता है। अकादमी ने इस दायित्व को संभाला है।

सोवियत शिक्षाशास्त्रियों का विश्वास है कि शिक्षा में सफलता ज्यादातर इस पर निर्भर करती है कि स्कूल अपने प्रयत्नों को परिवार के साथ कितनी अच्छी तरह से समायोजित कर पाता है। इसीलिए मा-बाप के साथ सक्रिय सम्पर्क रखे जाते हैं। अभिभावकगण समय-समय पर अपने बच्चों के शिक्षकों से मुलाकात करते हैं, और बच्चों की प्रगति, उपलब्धियों तथा खामियों पर विचार-विमर्श करते हैं। व्यक्तिगत समस्याएं बच्चों के मा-बाप को बतला दी जाती हैं और विचार-विनिमय के बाद गलतियों को सुधारने के लिए एक समन्वित प्रयत्न किया जाता है। अभिभावकों की समितियां बच्चों के शौकिया

समूहों की देखभाल करती हैं, पिकनिक और 'हिच-ह्राइक' यात्राओं का इन्तजाम करती है, आनददायी पार्टियां और प्रतियोगिताएं आयोजित करती हैं, बच्चों को अध्ययन कक्ष, प्रयोगशाला और पुस्तकालय सजाने में मदद करती हैं।

लेकिन कुछेक मां-बाप तर्क के बजाय भावना के वशीभूत हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप वे असंयमित स्नेह, लाड़-दुलार और ऐसी आदतों को बढ़ावा देने लगते है जो स्कूली शिक्षण से मेल नही खाती। युवजनो की एक पत्रिका में एक व्यंग्य में इस समस्या को पेश किया गया था। उसमें एक ऐसे पिता की कहानी बतायी गयी थी जो अपने छोटे-से बेटे को एक चिड़िया घर दिखाने ले गया। वह उसे शेर के पिंजडे के पास ले गया और पास में खड़ा हो गया। बच्चे ने कहा, "डैडी ! अगर शेर आपको खा गया तो मेरा होम-वर्क कौन करेगा ?" और वह अपने से घर चलने के लिए कहने लगा। समुचित सदर्श और ज्ञान देने के लिए रेडियो तथा टेलीविजन पर विशेष कार्यक्रम भी होते है, और अखबारों मे नियमित रूप से लेख निकलते रहते हैं। परिवार और स्कूल एक लोकप्रिय पत्रिका है जिसकी १६ लाख प्रतियां बिकती हैं। अपनी सीमाओं और विशेष कठिनाइयो से वाकिफ कई मां-बाप अपने बच्चो को देर तक चलने वाले दिन के स्कूलों मे भर्ती कराना ज्यादा पसंद करते हैं, ये स्कूल हाल ही मे खुले है। इनमे बच्चे कक्षा खत्म हो जाने के बाद भी रुक सकते हैं, और स्कूल मे ही खाना खा सकते है, चाय ले सकते हैं, तथा शिक्षकों की देखरेख मे अपना होम वर्क पूरा कर सकते हैं। ये स्कूल उन व्यस्त मा-बापों के लिए एक बडी नियामत है जो काम करते है और, जिनके घर पर दोपहर मे छोटे बच्चों के लौटने पर उनकी देखभाल के लिए कोई बुजुर्ग रिश्तेदार भी नही होते। इस व्यवस्था में बच्चे अकेलापन महसूस नही करते, न ही अभिभावक के अभाव मे उन्हें पुरा पड़ोस मे मटरगश्ती करने की जरूरत होती है। २५ लाख से अधिक बच्चे ऐसे स्कूलो मे अभी भी हैं। शिक्षा व्यवस्था की तीसरी कड़ी स्वय सोवियत प्रतिनिधियो के तौर पर, खासकर शिक्षा आयोगों के सदस्यो के रूप में सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हैं।

विज्ञान और मानविकी

सोवियत शिक्षा की एक उल्लेखनीय विशेषता इसका पाठ्यक्रम है जो विज्ञान के उपयोगितावादी अध्ययनों और मानविकी के विषयों के आध्यात्मिक पहलू के बीच सतुलन रखता है। बच्चे के विकास के ७ से १७ की आयु के वर्षों मे, सेकेंडरी स्कूल में, इससे उसके व्यक्तित्व का समरस विकास होता है। दस वर्ष के स्कूली जीवन में उसे ३,७४५ अध्ययन घंटे मानविकी और ३,६२० घंटे प्राकृतिक विज्ञान तथा गणित का प्रारंभिक ज्ञान दिया जाता है। ४५०

कांस्य प्रतिमा

घटे सौदर्य-शिक्षा को, ७०० घटे शारीरिक व्यायाम और इतने ही घंटे शारीरिक श्रम प्रशिक्षण मे लगाये जाते है। इस पद्धति के लक्ष्य के बारे में शिक्षामत्री मिखाइल प्रोकोफ्येव कहते हैं कि इसका लक्ष्य "हमारे स्कूली बच्चों को एक अच्छी बुनियादी विज्ञान-शिक्षा, जीवन का एक प्रगतिशील दृष्टिकोण, और पेशे का प्रशिक्षण देना होता है जो वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक विकास की बढ़ती हुई रफ्तार के अनुरूप हो, इसमें समय की आवश्यकताओं, व्यक्तिगत क्षमताओं और छात्रों की अभिरुचियों का ध्यान रखा जाता है, और इसके साथ ही साथ यह सुनिश्चित किया जाता है कि नयी पीढ़ी को पूरा नैतिक, सौदर्यपरक और शारीरिक प्रशिक्षण मिले।" सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के अवैतनिक सदस्य एल. तिमोफेयेव का कहना है :

"वह समय दूर नहीं जब प्रवेशपत्र के फार्म मे पूछा जायगा कि व्यक्ति कंप्यूटर का उपयोग करना जानता है या नही। ज्ञान का निरतर बढता तकनीकी, गणितीय चरित्र एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसे स्कूल के पाठ्यक्रमो में अनिवार्यतः महसूस किया जाता है। इसके साथ ही मुझे यह कहते हुए हर्ष होता है कि मेरे सहकर्मियो मे यह भावना बढती जा रही है कि शिक्षा को केवल तकनीकी क्षेत्रो तक संकेन्द्रित नही रखना चाहिए।

'स्कूल ऐसे लोग प्रशिक्षित करने का प्रयत्न कर रहे है जो अच्छे विशेषज्ञ बनें। यह बिल्कुल सही है। तकनीकी शिक्षा-प्राप्त विशेषज्ञो की विशेष रूप से जरूरत है। यह निर्विवाद भी है। पर इसके साथ ही शिक्षा में कला की भूमिका भी कम नहीं, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। इसमे कुछ भी अतर्विरोध नही है। साहित्य, इतिहास और कलाएं ऐसी आध्यात्मिक खुराक हैं जो लोगो को मात्र भौतिक वैभव के उत्पादक और उपभोक्ता बन जाने से रोकती है।"

सौदर्यपरक शिक्षा शिशु विद्यालय से शुरू हो जाती है। अपने शिक्षकों की मदद से बच्चे रेखाएं खीचते हैं, चित्र बनाते हैं, प्लास्टिक की मिट्टी से मूर्तियां बनाते हैं, नाचगाने मे भाग लेते हैं। सेकेंडरी स्कूलो में संगीत का सात वर्ष का कोर्स होता है। समूहगान होते हैं और संगीत के बुनियादी तत्वों पर सबक होते हैं। कला छह वर्ष पढ़ायी जाती है। छात्रों को अच्छी अभिरुचि प्राप्त करने मे मदद करने के लिए अनेक स्कूल पोशाक को डिजाइन बनाने वालो और घरों की सजावट करने वालों को आमंत्रित करते हैं जो छात्रो को बताते हैं कि क्या सुंदर है और क्या असुदर। साहित्य और कला का प्रशिक्षण देने वाले ५० महाविद्यालय हैं। इनमे से आधे तो सर्वोच्च योग्यता तक संगीतकारों को तैयार करते हैं। इनके अलावा, कोई ३,२०० संगीत विद्यालय हैं जो कोई ५ लाख बच्चों को पढ़ाते हैं। अन्य कला महाविद्यालय अभिनेता, निर्माता,

नाट्य समीक्षक, कलाकार, कैमरामैन, स्क्रिप्ट लेखक, लेखक और संपादकों को प्रशिक्षित करते हैं। मास्को में बच्चों के सौंदर्यपरक शिक्षण की संस्था है जो इस विषय पर अनुसंधान करती है। स्वेर्दलोव्स्क क्षेत्र में व्यवसाय प्रशिक्षण स्कूल नं. ७ के प्रशिक्षार्थियों को एक प्रश्नावली दी गयी जिससे उनकी सौंदर्यपरक धारणा का, मनुष्य और उसके कृतित्व में सौंदर्य की धारणा का पता लगाया जा सके। १,००० लड़कों और लड़कियों में से ८४४ ने प्रत्युत्तर दिया कि वे सौंदर्यशास्त्रीय पाठ्यक्रम को पसंद करते है। सत्रह को वह पसंद नहीं था। अन्य छात्रो ने या तो जवाब नही दिये, या ऐसे अस्पष्ट जवाब दिये कि "पाठ्यक्रम उपयोगी है." या "मैं ठीक-ठीक बता नही सकता," इत्यादि।

जिन्होंने सकारात्मक उत्तर दिये उनमें से कुछ ने ही संक्षिप्त "हां" में उत्तर दिया। बाकी लोगों ने कारण भी बताया कि उन्हे यह विषय क्यों पसद है।

प्लास्टर-कला सीखने वाले निकोलाइ वाइदाकोव ने टिप्पणी की : "मुझे सौंदर्यशास्त्र पढना बहुत पसंद है, इन पाठों के दो घंटे बहुत तेजी से बीत जाते हैं। मैं सोचता हूं कि यदि सभी युवजन सौंदर्यशास्त्र पढ़ें तो उनका सास्कृतिक स्तर बहुत उन्नत होगा।"

एक अन्य प्रशिक्षार्थी ने लक्षित किया था : "यह विषय हमे अपने ही कार्यों के द्वारा सौंदर्य की रचना सिखाता है, हमें श्रम का सौदर्य देखने और महसूस करने में मदद करता है।"

तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों के प्रशिक्षण मे देश को उत्पादन अर्थतंत्र के साथ उसे जोडने के व्यावहारिक पहलू पर जोर दिया जाता है। ग्रामीण व्यावसायिक स्कूल ट्रैक्टरो और कबाइनों का ड्राइवर, राजगीर, पशुपालक, सिंचाई विशेषज्ञों, इलेक्ट्रिशियनों को प्रशिक्षित करते हैं। वे मरम्मत और जन-सेवा के क्षेत्रों का भी ख्याल रखते हैं तथा इस हेतु दर्जी, नाई, सिनेमा मैकेनिक, घरेलू यंत्रो की मरम्मत करने वाले लोगों आदि को प्रशिक्षित करते हैं। महाविद्यालयों का अध्ययन भी देश के वास्तविक जीवन के साथ अनेक सूत्रो से जुडा होता है। सारे विद्यार्थियो को, मानविकी विषयो समेत समस्त विषयों के छात्रो को व्यावहारिक कार्य (फील्ड-वर्क) करना पड़ता है। दर्शन शास्त्र के छात्र प्राथमिक निकाय में पढ़ाते हैं। इतिहास के विद्यार्थी पुरातत्व संग्रहालयों और अजायबघरों में काम करते हैं तथा कानून के छात्र कचहरियों मे अभ्यास करते हैं। विज्ञान के छात्रों के लिए कारखानों तथा प्रयोगशालाओं में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना अधिक सरल होता है।

सोवियत सघ में सार्वजनीन सेकेंडरी शिक्षा शुरू करने मे शिक्षाशास्त्रियों को कई समस्याओं से निबटना पड़ा है। उनमें से एक समस्या यह भी है कि विशेषीकृत प्रशिक्षण को सभी के लिए बुनियादी शिक्षा के साथ कैसे समन्वित

किया जाय। इस समस्या का आंशिक समाधान सामान्य सेकेंडरी स्कूलों के साथ-साथ ऐसे विशेषीकृत सेकेंडरी स्कूल और व्यवसाय-स्कूल विकसित करके किया जा रहा है जो सामान्य शिक्षा भी देते हैं। इसके साथ ही सामान्य शिक्षा के स्कूलों ने गणित, विज्ञान और कला के विषयों में विशेषीकृत ऐच्छिक पाठ्यक्रम चालू करके और आठवें वर्ष से शारीरिक श्रम प्रशिक्षण शुरू करके, विशेषीकृत शिक्षा देने की दिशा मे सजग कदम उठाये हैं। विभिन्न विषयों में विशेषीकृत शिक्षा देने वाले स्कूल और कक्षाएं भी विकसित की जा रही हैं। इन पाठ्यक्रमों के आयोजन मे स्कूल महाविद्यालयों, अनुसंधान संस्थाओं और उद्योग के साथ घनिष्ठ सहयोग करते हैं। बाहर से सुयोग्य विशेषज्ञ व्याख्यान देने आते है और छात्रों को बढ़िया आधुनिक प्रयोगशालाओं मे काम करने का अवसर मिलता है। हाल ही मे शुरू किये गये इन कदमों ने एकीकृत शिक्षा प्रणाली को और भी लचीला बनाया है।

१०० से अधिक विभिन्न कौमों वाले सोवियत संघ में बच्चों को सोवियत संघ की ६६ प्रचलित भाषाओं में शिक्षा दी जाती है। मां-बापों को उस भाषा के चयन का अधिकार होता है जिसमे कि वे अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं। स्कूल के पाठ्यक्रमों मे सोवियत संघ के सभी जनगणों का इतिहास और सभी संघीय गणराज्यों का भूगोल सम्मिलित होता है। इससे बच्चों और किशोरों के मन में सभी कौमों, उनके इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रीय परंपराओं के प्रति गहरा सम्मान भाव विकसित करने मे मदद मिलती है तथा एक मित्रतापूर्ण विशाल परिवार मे रहने के वातावरण को प्रोत्साहन मिलता है। शिक्षा का संगठन प्रत्येक राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति पूर्ण सम्मान के साथ किया जाता है। राष्ट्रीय स्कूलों मे जहां अध्ययन का माध्यम स्थानीय भाषा होती है, रूसी भी द्वितीय भाषा के रूप मे पढ़ायी जाती है और संघ के समस्त १५ गणराज्यों के लोगों के बीच संलाप के आम माध्यम के रूप मे इससे मदद मिलती है। एक विदेशी भाषा की शिक्षा भी अनिवार्य है। यह पांचवीं कक्षा में शुरू होती है। अधिकांश स्कूलों में जर्मन, अंग्रेजी, फ्रांसीसी और स्पेनिश में से कोई एक भाषा छात्रगण चुनते हैं। शिक्षा को सार्वभौम बनाने और उन क्षेत्रों तक मे, जहां जारशाही के जमाने में कोई लिखित भाषा तक न थी और स्कूल का नामो-निशान नहीं था, शिक्षा पहुंचाने का कार्य अत्यंत विराट था; लेकिन सभी बाधाओं को पार करके, जबर्दस्त खर्च और श्रम से शिक्षा की व्यवस्था को अत्यंत सुदूरस्थ और पिछड़े हुए इलाकों मे भी पूरा किया गया।

छात्र संगठन

समस्त सोवियत उच्चतर शिक्षा संस्थानों में छात्रों के अपने संगठित निकाय होते हैं। उनके प्रतिनिधियों को महाविद्यालय के पदाधिकारी और

अध्यापकों के समकक्ष स्तर पर संस्थान-परिषदों में शामिल किया जाता है। ये परिषदें अनुसंधान और शैक्षिक गतिविधियों की मुख्य समस्याएं निर्धारित करती हैं। छात्रगण भर्ती आयोगों और उन निकायों के भी सदस्य होते है जो स्नातकों को रोजगार देते हैं, छात्रावासों में रहने का इंतजाम करते हैं, छात्रों के भोजनालयो की देख-रेख करते हैं, छात्रवृत्ति देते हैं। अध्ययन-पद्धति को सुधारने और शैक्षिक प्रगति से संबद्ध सवालों पर वे परिषदों की बहसो में पूर्णतः भाग लेते हैं। छात्र निकाय नियमित रूप से समाजोपयोगी गतिविधियों का आयोजन करते है और आम तौर पर दूरस्थ स्थानो के लोगों की सेवा के लिए ग्रीष्म अवकाश की प्रायोजनाओं का प्रबंध करते है।

रोजगार

सोवियत संघ में पिछले ४० वर्षों मे बेरोजगारी का नामोनिशान नही है। वहां ऐसा कोई दृश्य नही मिलेगा कि कोई योग्यता प्राप्त लड़का या लड़की, अपने चिंताकुल अभिभावकों को साथ लेकर इधर से उधर रोजगार पाने के लिए भाग दौड़ मे लगे हो, और अक्सर जिन्हें कोई काम न मिल पाता हो। इसका कारण है समाजवादी अर्थतंत्र का नियोजित स्वरूप। विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, व्यावसायिक स्कूल—ये सभी राष्ट्रीय अर्थतंत्र की और संस्कृति के क्षेत्र की वास्तविक मांगों के अनुसार ही विशेषज्ञ तैयार करते हैं। यह समस्या सर्वप्रथम सेकेंडरी स्कूल में उठती है। यहां किशोरवय के लोग काम करने लायक नैतिक तैयारी कर चुके होते हैं। उनका परिचय विभिन्न व्यवसायों और कार्यों की प्रक्रिया से हो जाता है। वरिष्ठ छात्र व्यवसायो का सम्यक चुनाव करने के लिए कारखानों, निर्माण स्थलों, सामूहिक और राजकीय फार्मो की यात्रा करते हैं। अपने निश्चय के अनुसार वे इसके बाद अपने चुनिंदा विषय के व्यावसायिक स्कूल या सस्था में प्रवेश करते हैं। लेकिन जो लोग सीधे ही किसी काम मे लग जाना चाहते हैं, उन्हें किसी भी गणराज्य की मानवशक्ति ससाधन की राजकीय समितियो से आधिकारिक परामर्श मिल सकता है, जिनकी शाखाएं सभी जिलों और क्षेत्रो मे खुली हुई हैं। ट्रेड यूनियनें भी रोजगार पाने में काफी मदद करती हैं। सस्थाओं के सभी स्नातको को अपने क्षेत्रों में रोजगार पाने की गारंटी रहती है। महाविद्यालयो को उचित समय पर अपने छात्रों के लिए आवेदन प्राप्त हो जाते हैं। फिर एक राजकीय आयोग की बैठक में और रोजगार देने वाले संगठनों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति मे स्नातक अपने भावी कार्य स्थलों का चुनाव करते हैं। अपनी नियुक्ति के बाद छात्र को एक महीने की छुट्टी और स्वयं तथा अपने परिवार के सदस्यों के लिए यात्रा व्यय मिल जाता है। उसे अपने कार्यस्थल पर समुचित आवास प्रदान किया जाता है। यह

कानूनी प्रावधान है कि कार्य के प्रथम तीन वर्षों में किसी को भी प्रबंधकगण बर्खास्त नही कर सकते, क्योंकि उसे अच्छा विशेषज्ञ बनने में मदद करना उनका फर्ज है। वडे उद्योगों में युवा विशेषज्ञों की परिषदें होती हैं। उनका कार्य न केवल अपने नये सहकर्मियों की उचित खातिरदारी करना, बल्कि उन्हें अपने श्रमिक कार्यकलाप प्रारंभ करने में हर संभव तरीके से मदद करना भी होता है। परिषद के सदस्य नवागंतुको से बातचीत करके पता लगाते हैं कि किस दूकान, विभाग या ब्यूरो में काम करना चाहते हैं, और किन सार्वजनिक गतिविधियों में उन्हें दिलचस्पी है। इस तरह नवागतुक उस नये स्थान में एक आल्हादकारी और सुरक्षित वातावरण मे अपना जीवन शुरू करता है।

खर्च

१९६९ में सोवियत संघ के राजकीय बजट पर वित्तमंत्री की रिपोर्ट मे, स्कूलो और बच्चों की अन्य सस्थाओ के संचालन की लागत ७४० करोड़ रूबल निश्चित की गयी थी। यह १९६८ के खर्च के मुकाबले में लगभग ४ प्रतिशत अधिक था। रिपोर्ट में नोट किया गया था कि बच्चों की संस्थाओं—नर्सरी और किंडरगार्टन—के रख-रखाव के लिए ३०० करोड रूबल आवंटित किये गये हैं। सोवियत संघ के बजट ने स्कूलो और बच्चों के छात्रावासों मे भोजन का और सुधार करने के लिए १२.५ करोड़ रूबल आवंटित किये थे। बच्चों का सामान—जूते, रेडीमेड कपड़े, घर से बाहर पहनने के कपड़े—सस्ता करने और प्रत्येक को उपलब्ध कराने के लिए बहुत कुछ किया जाता है। उदाहरण के लिए, हलके उद्योग के सस्थानों को घटायी हुई दरो पर बच्चो का सामान बेचने के लिए कपड़ों की आपूर्ति की जाती है। राज्य इन सस्थानों को चालू कीमतो और घटायी हुई दरो के बीच का अन्तर बजट मे से प्रदान करता है। १९६९ मे इस मद मे राज्य बजट से पचास करोड़ रूबल आवंटित किये गये थे। इसका अर्थ हुआ कि समस्त सोवियत बच्चो को अच्छे और सुंदर कपड़े प्रदान करने के लिए ५० करोड़ रूबल (४०० करोड़ रुपये से अधिक) अतिरिक्त व्यय किये गये।

सरकार शिक्षा पर परिवारों के प्रासंगिक व्यय को यथासंभव कम करने के लिए अनेक कदम उठाती है। सोवियत बच्चो को बस किराये पर कोई खर्च नही करना पड़ता, क्योंकि वे पैदल ही अपने स्कूल चले जाते हैं जिससे समय और धन दोनों की बचत होती है। नियमतः सभी स्कूल बच्चों के घरो से आधा मील की दूरी के भीतर ही स्थित हैं। सभी पुस्तकें, अध्ययन सामग्री और स्कूली आपूर्तिया सस्ती हैं। सातवी कक्षा के छात्र की पाठ्य पुस्तकों के सेट की कीमत ३ रूबल ७० कोपेक है (१ रूबल = १०० कोपेक)। २००

पेज की नोटबुक की कीमत १२ कोपेक और एक पेंसिल की कीमत दो कोपेक रखी गयी है। स्कूल की पोशाक की कीमत इतनी कम रखी गयी है कि प्रत्येक परिवार उसे आसानी से खरीद सके। किसी को भी अपने बच्चे के लिए अलग से पैसे देकर ट्यूटर खोजने की जरूरत नही पड़ती, क्योंकि खुद स्कूल में उसकी व्यवस्था रहती है। जो बच्चे कक्षा के औसत स्तर से पीछे रह जाते हैं, उन्हे अन्य बच्चों की बराबरी मे लाने के लिए अतिरिक्त रूप से पढ़ाया जाता है।

निम्न आय-श्रेणी वाले परिवारों और अधिक बच्चों वाले परिवार से आने वाले बच्चो को स्कूल के छात्रावासो मे नि.शुल्क रखा जाता है। उच्चतर आय वाले मा-बाप आवास और कपड़ो की लागत का ३० से ७० प्रति शत अंश अदा करते हैं। महाविद्यालय के छात्रावासों में कमरों का किराया एक से डेढ़ रूबल प्रति माह तक है। महाविद्यालय की कैंटीन मे भोजन पर प्रति दिन ८० कोपेक से १ रूबल तक खर्च बैठता है। आरोग्य-निवास, विश्राम गृह और खेल-कूद के शिविरों के लिए छात्रो को रिआयती वाउचर दिये जाते हैं। स्कूल में बच्चों को पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए सभी प्रयत्न किये जाते है। सारे समय एक डाक्टर और एक नर्स ड्यूटी पर तैनात रहते हैं। बड़े स्कूलों में एक दंत-चिकित्सक भी रहता है। सभी छात्रों के स्वास्थ्य की नियमित जांच होती है। जो बच्चे हृष्ट-पुष्ट नहीं दीखते उन्हे स्कूल के डाक्टर नगर के बाहर स्थित "वन स्कूलों" में भेज देते हैं। वहां वे अध्ययन करते हुए शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। बच्चा स्कूली पाठ्यक्रम में पीछे न रहे इस हेतु बच्चो के अस्पतालो और आरोग्य-निवासों में अनुभवी शिक्षक उसकी मदद करते हैं। विकलाग या मानसिक रूप से पिछड़े हुए बच्चों के लिए विशेष बोर्डिंग स्कूल होते है। अनाथ बच्चे—जिनकी सख्या दूसरे विश्व युद्ध के बाद बहुत बढ़ गयी थी—बाल गृहो मे रखे जाते है। वे चाहे सेकेंडरी स्कूल में हो या कालिज में, उन्हे छात्रवृत्ति मिलती है।

अमरीका से यह बिल्कुल भिन्न स्थिति है। वहा राजकीय स्कूलों के लिए ७१८ डालर और पब्लिक स्कूल कहलाने वाले प्राइवेट स्कूलों के लिए २,५०० डालर वार्षिक फीस लगती है, जो कि मजदूर वर्ग के लोग अदा नही कर सकते जिसके कारण उनके बच्चे उच्चतर शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। वहां २०० से ७०० डालर की छात्रवृत्तिया भी हैं, मगर बहुत थोड़े छात्रों को ये मिलती हैं। अमरीका के बारे में यूनेस्को के आंकड़ों से पता चलता है कि वहां स्कूलों में ५८ प्रति शत छात्र धनी परिवारों से, २० प्रति शत मध्य वर्ग से और बाकी २२ प्रति शत मजदूर वर्ग और निम्न आय वाले परिवारो से आते हैं। ऊंचे खर्च के अलावा, वहां शिक्षा प्रणाली के कुछ कायदे ऐसे हैं जो गरीब वर्गों के लिए

बाधक साबित होते हैं। ब्रिटेन और अमरीका के राजकीय स्कूलों में बुद्धि-लब्धि (आइ. क्यू.) की परीक्षा ली जाती है, जो बच्चो को क, ख और ग श्रेणियों मे बांट देती है। एक ब्रिटिश प्रोफेसर श्री वर्नन का कहना है कि उच्चतर परीक्षाओं में धनी परिवार के बच्चे गरीबों से तिगुनी सख्या मे पास होते हैं। अमरीका के इलिनोय राज्य में केवल २३ प्रति शत बच्चों को सर्वोच्च बुद्धि-लब्धि अक प्राप्त हुए थे, जो सभी उच्चतर वर्गों के थे, और निम्नतर वर्ग का एक भी बच्चा उनमे नही था। बुद्धि-लब्धि प्रणाली विभिन्न श्रेणियों के बच्चों के लिए विभिन्न किस्म के स्कूलों का प्रबंध करती है। निम्नतर बुद्धि-लब्धि वाले बच्चों को ऐसे स्कूलो मे रखा जाता है जो बच्चों को शारीरिक श्रम या सामान्य बौद्धिक श्रम के लिए तैयार करते है। धनी लोगों के बच्चे बिना किसी परीक्षा के पब्लिक स्कूलों मे भर्ती हो जाते है। ब्रिटेन के आज के अग्रगण्य लोगो के संबध मे कुछ अत्यत सनसनीखेज आकड़े मिलते है। ८७ प्रति शत सैनिक जनरल, ८३ प्रति शत बिशप (पादरी), ६७ प्रति शत वरिष्ठ प्रशासक, ८५ प्रति शत न्यायाधीश, ६५ प्रति शत वरिष्ठ राजनयज्ञ और ८० प्रति शत राजदूत पब्लिक स्कूलो में शिक्षा पाये हुए लोग हैं।

सोवियत स्कूल सिद्धान्ततः सभी के लिए खुले हैं; सामाजिक हैसियत या राष्ट्रीय अथवा जातीय मूल के आधार पर कोई भेदभाव नही है। उनके शिक्षाशास्त्री शुरुआती नकली परीक्षाओं के जरिये प्रवृत्तियों का अन्वेषण करने पर विश्वास नही करते। उनकी मान्यता है कि बच्चे जीवन की वैविध्यपूर्ण गतिविधियों मे बढते हैं और सब अपनी-अपनी रफ्तार से—कुछ धीरे-धीरे, कुछ अचानक तेजी से, कोई सैद्धान्तिक विषयो मे तो कोई दूसरे बच्चे व्यावहारिक क्रियाकलाप मे—बढते हैं। बुद्धि-लब्धि प्रणाली की बजाय सोवियत स्कूल सभी को समान सुविधाएं प्रदान करते है, जिसमें वे यह मान कर चलते हैं कि परिवेशगत कारण एक सशक्ततर और कारगर शक्ति साबित होगा। जो कि उन खामियों की पूर्ति कर देगा जो किसी बच्चे में शुरू मे पारिवारिक पालन-पोषण, आनुवशिकता या अन्य परिस्थितियो के कारण उपज सकती है। इस दृष्टिकोण के फलस्वरूप उच्चतर पदों का सभी वर्गों मे एक वाजिब और मुनासिब वितरण हुआ है। १९६६ मे उरालोवुव सलयन (अमॅलगमेशन) के पदाधिकारियो की गणना करने पर विदित हुआ कि ४९ प्रति शत व्यक्ति मजदूर परिवारों से, ४१ प्रति शत किसान परिवारों मे और १० दफ्तर-कर्मचारियों के परिवारों से आये हुए है। इसी तरह पेर्वोराल्स्की पाइप-निर्माण कारखाने के आकड़े ये थे: ४४ प्रति शत मजदूर परिवारों से, २६ किसान परिवारों से, २४ विशेषीकृत शिक्षा से रहित दफ्तर-कर्मचारियों के परिवारों से, और ६ विशेषज्ञों के परिवारों से।

सोपान

शिक्षा के क्षेत्र में हुई प्रगति की जबर्दस्त रफ्तार का पूरा-पूरा आकलन तभी किया जा सकता है जब क्रान्ति पूर्व दिनों की परिस्थितियों का एक जायजा लिया जाय। अनान्येवा नाम की एक किसान महिला को जारशाही पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था, क्योंकि उसने क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लिया था। उसने अपने बयान मे लिखा था कि अपने लड़के को हाई स्कूल जाते देखू—यह मेरे जीवन भर की साध है। जार अलेक्जेंडर तृतीय ने उसका वक्तव्य पढ़ कर हासिये मे टिप्पणी की थी, "कितनी खौफनाक बात है ! एक मुजीक (किसान) हाई स्कूल में घुसना चाहता है।" एक और मौके पर, जब जार को मालूम हुआ कि उसकी सेना मे भर्ती हुए किसानो को पढना-लिखना कतई नहीं आता, तो उसने "भगवान को धन्यवाद" दिया। जारशाही के जमाने में उच्चतर शिक्षा केवल धनी वर्गों के लिए सुलभ थी। देश की आबादी का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा अनपढ था। रूसी साम्राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों में, जहां गैर-रूसी रहते थे, वहां परिस्थिति खास तौर पर बुरी थी। मध्य एशिया के जनगणो में साक्षरता का प्रति शत केवल तीन था। १९१७ की क्रान्ति के बाद एक सच्ची लोकप्रिय शिक्षा का युग आरंभ हुआ।

सोवियत सत्ता के पहले दस वर्षों—१९१७ और १९२७ के बीच—में निरक्षरता प्रायः समाप्त की जा चुकी थी। १९१९ में एक आदेश निकाल कर ८ से ५० वर्ष आयु के समस्त लोगो के लिए पढना-लिखना सीखना अनिवार्य कर दिया गया था। जो लोग साक्षरता-कक्षा मे जाते थे, उन्हे पूरी तनख्वाह के साथ प्रति दिन दो घंटे की छुट्टी मिलने लगी थी। हजारो शिक्षक, छात्र, सरकारी कर्मचारी साक्षरता अभियान मे शरीक हुए। निरक्षरता के विरुद्ध एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया गया था। १९३० मे सरकार ने अनिवार्य तथा सार्वजनीन प्राथमिक शिक्षा शुरू की : १९४९ में एक सात वर्षीय पाठ्यक्रम और १९५९ मे आठ वर्षीय पाठ्यक्रम। इन विभिन्न चरणों को अनेक कठिनाइया पार करनी पड़ी। तीसरे दशक मे साक्षरता अभियान के साथ-साथ, पुनर्जीवित हो रहे अर्थतंत्र की फौरी आवश्यकताओं के लिए विशेषज्ञ तैयार करने के कदम उठाये गये। इस हेतु "कामगार संकायो" मे तैयारी-पाठ्यक्रम बनाये गये, जिनमे दस वर्षीय सेकेंडरी शिक्षा की जगह तीन वर्ष का सारगर्भित पाठ्यक्रम चला कर मजदूर-छात्रों को महाविद्यालयो मे भर्ती किया जाता था।

कुछ प्रोफेसर, जो तब तक भी पुरानी दुनिया के तौर-तरीको से चिपके हुए थे, 'इन कूड़े घर के बच्चो" को किस हेय दृष्टि से देखते थे यह रेकार्डशुदा है। एक कक्षा मे ऐसे ही एक प्रोफेसर ने देखा कि एक लड़की देहाती ढंग से

अपने सिर पर रूमाल बांधे हुए व्याख्यान सुन रही है। उसे संबोधित कर प्रोफेसर ने बेहद तीखे स्वर में कहा, ऐ लड़की,...तुम विज्ञान के इस मंदिर में ऐसे आ बैठी हो मानो खलिहान मे आयी हो—सिर पर गंदा चीथड़ा लपेट कर ! बताओ तो, तुम्हें कुछ सुनायी भी पड़ता है ? और अगर तुम सुन रही हो, तो क्या तुम्हे कुछ पल्ले भी पड़ रहा है ?" कक्षा एकदम सकते में आ गयी। बेचारी लड़की बाहर दरवाजे की ओर बढ़ी। तभी एक मजदूर उठ खडा हुआ और शांत तथा गंभीर स्वर में बोला, "हम मामूली मजदूरों को आप पर शर्म आती है प्रोफेसर। मगर डरो मत, हम आपको छुएगे नही। हम यहां सीखने आये हैं और चाहे जो हो, हम सीखेंगे। वक्त जाया मत कीजिये और अपना व्याख्यान जारी रखिये।"

सोवियत संघ पर नाजी हमले से जनता को अपार हानि हुई। नाजियों ने अपने अधिकृत भूक्षेत्र में ८५,००० सामान्य शिक्षा के स्कूलों को लूट लिया और नष्ट कर दिया जिनमे युद्ध से पूर्व डेढ़ करोड़ बच्चे पढते थे। ३३४ उच्चतर अध्ययन की सस्थाए, जिनमें २,३०,००० छात्र पढ़ते थे, ४२७ सग्रहालय, कई हजार पुस्तकालय और अन्य संस्कृति केन्द्र उन्होंने नष्ट कर दिये।

जब मैं सोवियत संघ की यात्रा पर था, उस समय वहा के स्कूलों मे ५ करोड बच्चे पढ रहे थे। उच्चतर शिक्षा संस्थाओं में छात्रों की सख्या ब्रिटेन, फ्रास, संघीय जर्मनी और इटली के कुल ऐसे छात्रों से चौगुनी थी, जबकि उनकी कुल आबादी लगभग सोवियत संघ के बराबर ही है। वहां इंजीनियरों की संख्या अमरीका से चौगुनी थी।

आधारशिला शिक्षा

सोवियत शिक्षा की बेमिसाल उपलब्धियों ने उन सभी के मन में गहरा आदर-भाव उत्पन्न किया है जिन्होने किसी पूर्वग्रह के बिना उसका अध्ययन किया है। भारत के राष्ट्रपति स्व. डा. जाकिर हुसैन ने, जिन्होंने अपना प्राय. सपूर्ण जीवन समुचित शिक्षा की व्यवस्था के ध्येय मे अर्पित किया था, सोवियत संघ की सरकारी यात्रा के बाद कहा था : "और जो कुछ मैंने पढा तथा सुना और देखा है, उससे मेरे सामने यह स्पष्ट हो गया है कि इस नये महान समाज में, जिसे कि आप आज इस देश मे निर्मित कर रहे हैं, बालक, वैज्ञानिक और अध्यापक "विशेष सुविधा-प्राप्त समूह हैं"—यदि आप इस काफिराना विशेषण के इस्तेमाल की इजाजत मुझे दें। यह सही भी है, क्योंकि आप भविष्य के लिए निर्माण कर रहे हैं और अपने वैज्ञानिक ज्ञान तथा शिक्षा को ही उस आधार-शिला के रूप में आपने चुना है जिस पर भव्य इमारत खड़ी

करेंगे। आपकी आकांक्षाएं, आपका कार्य, आपकी उपलब्धियां सारे संसार के शिक्षकों और शिक्षा-कर्मियों के लिए प्रेरणा की स्रोत हैं।"

"इतिहास के संदर्भ में शिक्षा" का विवेचन करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार आर्नल्ड टायनबी ने लिखा है: "किसी अकेले मानव मस्तिष्क की क्षमता अत्यंत सीमित होती है; वह पृथ्वी के संपूर्ण धरातल का सर्वेक्षण करने या पृथ्वी के केन्द्र तक उसके अंतरंग का अन्वेषण करने में कभी भी सफल नहीं हो सकता। मगर उसे मात्र इन्ही दो में से किसी एक बौद्धिक अन्वेषण तक स्वयं को सीमित रखने की कतई जरूरत नहीं है। वह दोनों का नमूना ले सकता है और इस तरह की बौद्धिक विश्व जनीनता ही उदार शिक्षा होगी।" **इतिहास की रूपरेखा** नामक पुस्तक में एच. जी. वेल्स लिखते हैं: "मानव इतिहास निरंतर शिक्षा और प्रलय के बीच दौड़ का रूप लेता जाता है।" सोवियत संघ की शिक्षा प्रणाली दोनों मुद्दों को पूरा करती है: यह निश्चित रूप से उदार है और एक विश्व 'प्रलय' को टालने की शक्ति भी। इन बुनियादी पहलुओं को स्पष्ट करते हुए वी. येलितिन नामक सोवियत उच्चतर तथा विशेषीकृत सेकेंडरी शिक्षा के मंत्री ने लिखा है:

"सोवियत शिक्षा प्रणाली छात्र की भौतिकतावादी विश्व-दृष्टि को ढालती है, उसे गहरे और व्यवस्थित ज्ञान से सन्नद्ध करती है तथा उसकी क्षमताओं को समाजोपयोगी दिशाओं में विकसित करती है।

"छात्रों को ज्ञान और अनुभव प्रदान करने के अलावा उच्चतर स्कूल उन्हें नैतिक मानदंड प्रदान करते हैं। वे उन्हें कर्तव्यनिष्ठता के साथ काम करना सिखाते हैं और उनके भीतर सामाजिक दायित्व-बोध, जनहित के उल्लंघनों की असहनीयता, सामूहिकता और साथीवत् परस्पर सहायता की भावना, नैतिक पवित्रता, सार्वजनिक और निजी जीवन में सादगी तथा विनम्रता का यत्न, और अन्याय, परोपजीविता, बेईमानी, व्यावसायिकता तथा धन-अपहरण के प्रति घृणा उपजाती है। इस प्रकार उच्चतर स्कूलों में छात्र को प्रकृति और समाज के विकास के बुनियादी नियमों का सर्वांगीण ज्ञान प्रदान करने की तथा अपने जीवन और कार्य में उनका सही तथा रचनात्मक ढंग से प्रयोग करना सिखाने की दृष्टि से शैक्षिक कार्यविधि का निर्माण किया गया है।"

अध्याय २

तरुण शिल्पी

सोवियत शिक्षाशास्त्र मे अपने योगदान के लिए प्रख्यात अंतोन मकारेंको ने एक बार कहा था कि सोवियत संघ मे शिक्षा "जीवन-भोगी के पांडित्य से बदल कर जीवन-शिल्पी का हथियार" बन गयी है। अकेले स्कूल ऐसी व्यापक शिक्षा प्रदान नही कर सकते थे। इस कार्य को पूरा करने हेतु नौजवानों का एक विराटकाय संगठन सारे देश में कार्यरत है। इसका नाम है नौजवान कम्युनिस्ट लीग, जो कोम्सोमोल के नाम से मशहूर है। इसकी सदस्यता १५ से २८ वर्ष की आयु वालों के लिए खुली है। इस समय इसकी कुल सदस्य संख्या २.७ करोड़ है। इसी के साथ, लगभग इसी सदस्य-संख्या वाली इसकी कनिष्ठ संस्था बाल अग्रदूत है, जिसमे ९ से १५ की आयु वाले लड़के तथा लड़कियां शरीक होती हैं। कुल ५ करोड़ सदस्यों का यह आंकड़ा महत्वपूर्ण है। देश की आबादी मे ३० वर्ष से कम आयु वाले जितने व्यक्ति हैं, उनकी कुल सख्या से यह थोड़ी ही कम है।

कोम्सोमोल के सदस्यों में से लगभग ५० प्रति शत सदस्य उच्चतर या सेकेंडरी शिक्षा प्राप्त हैं। उनमे से कोई दस लाख इजीनियर, तकनीशियन, कृषि विशेषज्ञ, शिक्षक, डाक्टर और सांस्कृतिक क्षेत्र के कार्यकर्ता हैं। नौजवानों के इस विशाल स्वय सेवक संगठन के भीतर देश का प्रत्येक दूसरा युवक या युवती शामिल है, और देश के जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाने वाली यह एक विराट शक्ति है। इसकी सभी गतिविधियां स्कूलो की व्यवस्था के सदर्भ में एक पूरक शैक्षिक स्वरूप वाली हैं। यह अपने व्यावहारिक कार्यक्रमों के जरिये अपने सदस्यो के भीतर कम्युनिस्ट स्वरूप वाले समाज के मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है और उसे उनके जीवन का अभिन्न अग बना देती है।

सोवियत संघ की २३वी कांग्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, "कोम्सोमोल के सदस्य, सोवियत युवक एव युवतियां अपने जनगण और राज्य की नियति के प्रति अपने दृष्टिकोण में दायित्वशीलता और जागरूकता का एक उच्च अहसास

प्रकट करते हैं। पीढ़ियों के बीच तारतम्य और क्रान्तिकारी परंपराओं की अपार शक्ति इन नौजवानों के व्यावहारिक कार्यों मे, इनके उदात्त राजनीतिक आदर्शों मे, स्पष्टतः प्रकट होती है। इन नौजवानों—विराटकाय विजली घरों, रेलों और नये शहरों के निर्माताओं, परती जमीनों के उद्धारकों तथा अंतरिक्ष अन्वेषण के इन अग्रदूतों—की श्रम-उपलब्धियों ने सोवियत संघ के इतिहास में भव्य पृष्ठ जोड़े हैं...नौजवान ही हमारे भविष्य हैं। हम चाहते हैं कि वे हमारे जमाने और हमारी क्रान्तियों के बीच के संबंध-सूत्र को निरतर महसूस करें, जीवन को उसकी संपूर्ण गहराई और सश्लिष्टता में देखना सीखें, तथा कम्युनिज्म के निर्माण मे अपनी भूमिका और उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक रहे।"

प्रारंभ

कोम्सोमोल की स्थापना १९१८ में हुई थी। वह ग्रह युद्ध का जमाना था, जब मजदूरों और किसानों की क्रान्तिकारी सरकार अपने देशी शत्रुओं—धनिक वर्ग के अवशेषों से जूझ रही थी। दुनिया की पूजीवादी ताकतें इन शोषकों के साथ पंक्तिबद्ध हो गयी थीं और उन्हे इस नयी हुकूमत को उलटने के लिए भारी इमदाद दे रही थी। उस गंभीर घडी में कोम्सोमोल के सदस्य, जिनकी संख्या उस समय केवल २२,००० थी, युद्ध भूमि में अगली पांतो में लड़े थे। कोम्सोमोल की जिला समितियों के दरवाजे प्रायः बंद मिला करते थे। बाहर पट्टी पर लिखा मिलता था: "जिला समिति का कार्य बद है। इसके सभी सदस्य मोर्चे पर गये हुए हैं।" लड़के और लड़किया क्रान्तिसैनिकों की पोशाक पहनती थी। युद्ध मे शहीद हो जाने वाले सैनिकों की जगह तुरंत नये सैनिक आ खड़े होते थे। उन दिनों के बारे में कवि एदुआर्द बाग्रित्स्की ने लिखा है:

हमें जवानी का हौसला
आत्मबलिदान तक ले गया।
जवानी के हौसले ने हमे फेंक दिया
क्रोनस्टाड्ट की बर्फ पर।
अश्वसेना के घोड़े
हमें खींच ले गये।
मस्कोवी के चौराहों पर
हमारी लाशें पड़ी थीं।
हमारी नसों में खून उबल रहा था,
हम फिर उठ खड़े हुए।

पोडोल जिला कोम्सोमोल समिति कार्यालय के दरवाजे पर उत्कीर्ण अभिलेख,
१९१९--"समिति बन्द है. सभी मोर्चे पर चले गये."

और अपनी खोपड़ी में गोली लगी होने पर भी
अपनी आंखें हमने खोलीं।

अलेक्सांदेर मिल्चाकोव, जो उन दिनों कोम्सोमोल की केन्द्रीय समिति के सचिव थे, १९२० में हुए तृतीय कांग्रेस अधिवेशन के अपने संस्मरणों में लिखते हैं: "हम ५०० से अधिक प्रतिनिधि आये हुए थे...कई तो सीधे मोर्चे से या युद्धक्षत मिलों और कारखानों की मरम्मत के ऐच्छिक कार्य से या फिर दूरस्थ गांवों से आये थे। युवक और युवतियां बहुत मामूली, बल्कि बुरे ही, कपड़े पहने हुए थी; आर्मी ग्रेटकोट और ट्यूनिक तथा सादे रूसी शर्ट, जिन्हें लड़कियों के लाल सिर-के-रूमाल प्रकाशित कर रहे थे, अधिकता में थे।"

इस कांग्रेस में अपने प्रसिद्ध भाषण में लेनिन ने कहा था: "कम्युनिस्ट समाज की रचना के वास्तविक कार्य का सामना नौजवानों को ही करना होगा। और इसलिए, इस दृष्टि से नौजवानों के कर्तव्यों पर नजर डालते हुए मुझे यह कहना होगा कि आम तौर पर नौजवानों के कर्तव्य, और खास तौर पर नौजवान कम्युनिस्ट लीग तथा अन्य सभी संगठनों के कर्तव्य एक शब्द में सार-रूप में कहे जा सकते हैं—'सीखो'...नौजवान लीग और आम नौजवानों को कम्युनिज्म सीखना चाहिए...काम के बिना, संघर्ष के बिना, कम्युनिस्ट पर्चों और पुस्तकों से प्राप्त किया गया कम्युनिज्म का अमूर्त ज्ञान नितांत निरर्थक होगा।" लेनिन ने इस पर भी जोर दिया कि "आप तभी कम्युनिस्ट बन सकते हैं जब आप अपने मस्तिष्क को मानवजाति द्वारा रचित समस्त ज्ञान-भंडारों के ज्ञान से समृद्ध करें।"

विरोधी फौजों का सफाया करने में जन सेनाओं को कोई ज्यादा वक्त नहीं लगा। इसके बाद अगला कर्तव्य था देश के अर्थतंत्र को पुनः उसके पैरों पर खड़ा करना, और नियोजित समाजवादी योजनाओं के साथ आगे बढ़ना। विश्व के पूंजीवादियों ने, जो अपने सशस्त्र हस्तक्षेप में विफल हो गये थे, अब प्रायः एक पूर्ण आर्थिक बहिष्कार शुरू कर दिया। लेकिन सोवियत सरकार ने निर्भीक होकर, अपनी जनता की क्षमता में निष्ठा रखते हुए, पुनर्निर्माण का कार्य शुरू कर दिया।

इसी दौरान १९२५ में छठी अखिल संघीय कोम्सोमोल कांग्रेस ने एक घोषणा पत्र पारित किया जिसमें उसने सभी कोम्सोमोल सदस्यों, मजदूर किसानों एवं नौजवानों से अपील की: "युवा पीढ़ी, जो कि लेनिन के आदेशों को पूरा करना चाहती है, का कर्तव्य यह है कि अभाव और विध्वंस से उबरें, हमारे देश को और उसके साथ-साथ समूची मानवता को सुखी, मुक्त, श्रमपूर्वक लेकिन समृद्धिपूर्वक जीने वाली बनायें, और अपने प्रयासों को, अपनी समस्त दुर्बल हुई शक्तियों को एकत्र और एकजुट करें, तथा अज्ञान, संस्कृति के अभाव,

अर्थतन्त्र के पिछड़ेपन, गरीबी, पूर्वग्रह, युगों पुरानी कट्टरता और सड़ांध, कार्य में अदक्षता, आलस्य, विज्ञान तथा टेक्नॉलॉजी में निष्ठा के अभाव के विरुद्ध संघर्ष में लगा दें—और सब मिलजुल कर, आम सहमति से मामूली, छोटी-मोटी चीजों (जैसी किसी स्कूल की इमारत की मरम्मत या खेतों में सामूहिक रूप से हल-चालन) से शुरू करके अपने उद्योग के, अपने अर्थतंत्र के विराट पैमाने पर विकास की ओर, समूची आबादी की सहयोगशीलता की ओर, विद्युतीकरण की ओर बढ़ें।"

आरंभ से ही कोम्सोमोल के सदस्य और १९२२-२४ में उसकी केन्द्रीय समिति के सचिव वासिली वास्युतिन ने लिखा है : "मुझे वह तीसरा दशक याद है जब हमारे पास फटे-पुराने कपड़े हुआ करते थे और खाने के लिए कभी भी पर्याप्त भोजन नहीं रहता था, और हम स्वेच्छापूर्वक सुब्बोतनिकों (राज्य-कल्याण के लिए कर्तव्यनिष्ठों द्वारा अवैतनिक कार्य) में काम करते हुए, कारखानों और रेल की पांतों का पुनः निर्माण किया करते थे। हमें किसी वेतन की प्रत्याशा नहीं थी, क्योंकि हमें पता था कि राज्य के पास धन नहीं है।"

युद्ध के दौरान

जून १९४१ में हिटलर के अचानक हमले के बाद कोम्सोमोल के कार्यक्रम का रूप रातों-रात बदल गया। दसियों लाख की संख्या में वे हमलावर का प्रतिरोध करने और उन्हें अपनी जन्मभूमि से खदेड़ देने के लिए सेनाओं में भर्ती हो गये। उनके संगठन ने इस आशय का एक प्रस्ताव पास किया : "कोम्सोमोल की केन्द्रीय समिति यह मांग करती है कि प्रत्येक सदस्य हथियार-बंद होकर अपनी मातृभूमि, सम्मान और आजादी की रक्षा के लिए तैयार हो जाय।" १९४१ के शीतकाल में विभिन्न मोर्चों पर खतरा मंडराने लगा। कोम्सोमोल के सदस्यों ने हरेक मोर्चे पर बहादुरी से मोर्चा संभाला। अक्तूबर में मास्को नगर के बाहरी इलाके घनघोर संग्राम के क्षेत्र बन गये थे। अर्कादी पोलुक्तोव, जो एक तोपची स्वयंसेवक और कोम्सोमोल का सदस्य था, अपनी टुकड़ी की तोपों के लिए निशाने साध रहा था। वह शत्रु के मोर्चों के करीब और करीब रेंगता चला गया जिससे कि उसका वार अधिक कारगर हो सके। तभी शत्रु की एक गोली ने उसे पा लिया। लड़ाई खत्म होने के बाद उसके साथियों को उसके कोट की जेब में यह पत्र मिला :

"प्रिय दादा,

यदि मैं मारा जाऊं तो अपने लोगों को बता देना और कहना कि मैं खुशी-खुशी मरा हूं। मुझे फासिज्म से सख्त नफरत है। मैं धरती के

कलंक, इस खूंखार, लुटेरे और हत्यारे फासिज्म से नफरत करता हूं। यदि मुझे एक दूसरा जीवन मिले तो मैं उसे भी बलिदान कर दूं। उनसे कह देना कि मुझे इस पर गर्व है कि मैं इस महान संग्राम में लड़ा था।

अलविदा, और मुझे भूलना मत।

—अर्कादी पोलुक्तोव"

सेवास्तोपोल में एक कंक्रीट के किले पर जर्मन मोर्टारों से भयानक गोला-बारी हुई, जहां उसके संरक्षक नौ कोम्सोमोल-सदस्य मृत मिले। वे सभी नौसैनिक थे। उनमें से एक के 'गैस-मास्क' में एक पुर्जा मिला :

"२० दिसंबर १९४१

रूस, मेरी जन्मभूमि, मैं, लेनिन कोम्सोमोल का बेटा और उसका अनुयायी, अपने हृदय के आदेश पर लड़ा, तब तक शत्रु को मारता रहा जब तक कि मेरे सीने में दिल धड़कता रहा। मैं मर रहा हूं, लेकिन मुझे पता है कि हम जीतेंगे।

काले सागर के नौसैनिको, इस पागल फासिस्ट कोढ़ का सफाया कर दो। मैंने अपनी सैनिक प्रतिज्ञा को अंत तक पूरा किया है।

काल्युज्नी।"

लेनिनग्राद नगर के भीतर, जो ९०० दिनों तक घिरा रहा था, भूख और ठंड से संतप्त कोम्सोमोल सदस्य, जो दैनिक १२५ ग्राम रोटी के राशन पर जिंदा थे, सारे समय जनसेवा में लगे रहे। घोर शीतल घरों में बीमारों और मरणशैया पर पड़े लोगों की सुश्रूषा करते रहे। नगर में पानी की कमी थी। पीले और दुबले-पतले लड़के और लड़कियां एक घर से दूसरे घर तक नागरिकों की जरूरतें पूरी करते हुए, घूम रहे थे। वे काफी दूर से पानी ढोकर लाते थे। लेकिन कभी-कभी उनमें से कुछ अपने घर नहीं पहुंचते थे। युद्ध उन्हें लील गया। शत्रु की बमबारी या गोलाबारी ने अपना काम कर दिखाया था।

नाजियों के खिलाफ लड़ाई न केवल नियमित सेनाओं ने, बल्कि गुरिल्लों की टुकड़ियों ने भी लड़ी थी। ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, ये गुरिल्ले अधिकाधिक संगठित होते गये और ये शत्रुपंक्तियों के पीछे, अधिकृत भूक्षेत्र में कारगर साबित हुए। कोम्सोमोल की पांतों ने जुझारू ताकत का काफी बड़ा हिस्सा प्रदान किया था। उनके भूमिगत संगठन ३ हजार से ज्यादा थे। उनमें से एक ग्रुप में तिमोफीव नामक शिक्षक अपने दो पुत्रों के साथ लड़ा था। वे थे व्लादिमिर, १७ वर्ष, और गेन्नादी, १५ वर्ष। इन तीनों ने मशीनगनों से गोले बरसाये थे। व्लादिमिर ज्यादा जिंदा नहीं रहा। उसने फासिस्टों पर जो गुरिल्ला हमला संगठित किया था, उसी में वह मारा गया।

जब युद्ध समाप्त हुआ तो देश ने अपने नौजवान वीरों को सगर्व याद किया। पैंतीस लाख कोम्सोमोल सदस्यों को वीरता और पराक्रम के लिए सोवियत संघ के अलंकारों और पदकों से सम्मानित किया गया। और सोवियत संघ के वीरों की कुल ११,००० संख्या में से ७,००० वीर कोम्सोमोल के थे, जिनमें से ६० ने यह सम्मान दो-दो बार जीता।

इनमें से एक वीर युवा नीना सोसोनिना थी। अगस्त १९४३ में नाजियों ने वह घर घेर लिया था जहां उसके पिता एक घायल गुरिल्ला की शल्य चिकित्सा कर रहे थे। पिता और पुत्री ने घंटों तक शत्रुओं को परे रखा, अंततः उस घर में आग लगा दी गयी और अन्दर के सभी लोग समाप्त हो गये। अनेक सोवियत सैनिक जो कि नये-नये लड़के थे, युद्ध के रास्ते मृत्यु को प्राप्त हुए और उनमें से अनेक बर्लिन की लड़ाई में अंतिम दिन खेत रहे। जब वे घर लौटने का, अपने इष्ट मित्रों से पुनः मिलने का, शांति और आनन्दमय जीवन फिर से शुरू होने का स्वप्न संजो रहे थे तभी उनका प्राणान्त हो गया।

श्रम वीर

युद्ध समाप्त होने के बाद, विध्वस्त अर्थतंत्र को पुनः निर्मित करने और उसे आगे मजबूत बनाने का कार्य सर्वोच्च राष्ट्रीय महत्व का दायित्व बन गया। कोम्सोमोल के सदस्य जो कि हाथों में बन्दूकें लेकर मोर्चों पर अगली पंक्ति में लड़े थे, उतने ही उत्साह के साथ अब कारखानों और फार्मों के पुनर्निर्माण में जुट गये। उनका साथ दे रहे थे वे समस्त सोवियत नौजवान, जो अभी तक कोम्सोमोल में भर्ती नहीं हुए थे। साइबेरिया, उत्तर और सुदूर-पूर्व में दानवाकार नये निर्माण कार्यों का बीड़ा उठाया गया है। उन सभी में नौजवानों की सक्रिय हिस्सेदारी एक नियमित अंग रही है। इसी युवा सहयोग को इन क्षेत्रों में २२ नगरों और १४० बस्तियों के निर्माण का श्रेय है।

अजरबैजान में कैस्पियन सागर के एक रेगिस्तानी तट पर सुमगेत, "युवा-नगर", का निर्माण किया गया जहां के नागरिकों की औसत आयु २८ वर्ष थी। पिछले दो दशकों में लगभग २० लाख नौजवान पुरुषों और स्त्रियों ने नगर के अपने आरामदेह फ्लैट और सुविधाओं को छोड़ा है, और वे नयी निर्माण प्रायोजनाओं के स्थानों में जा बसे हैं, जहां वे विकास कार्य में संलग्न हैं। साइबेरिया के सघन जंगलों (टाइगा) और सुदूर उत्तर के बर्फानी प्रदेशों की विषम परिस्थितियों से भी वे डिगे नहीं, अपितु उन्हें और भी अधिक प्रयत्न करने की प्रेरणा मिली। १९६७ में सोवियत संघ की यात्रा के बाद

१९४४ का ग्रीष्म. पेत्रोजावोद्स्क, नाजी यातना शिविरों में से एक, जिसमें सोवियत नागरिक कैद थे. उसके शिकार बहुत सारे बच्चे भी हुए.

लिखित अपनी पुस्तक में एक विख्यात ब्रिटिश पत्रकार अलैक्जेंडर वर्थ ने लिखा है कि सुदूर-पूर्वी टाइगा में स्थित कोम्सोमोल-आन-अमूर नामक औद्योगिक केन्द्र के कोम्सोमोल ने तीसरे दशक में जो निर्माण कार्य अपने जिम्मे लिया था, उसमें नौजवान उत्साहियों का एक बड़ा हिस्सा प्रथम शीत में भूख और स्कर्वी (शीत-रोग) से आक्रान्त होकर मृत्यु का शिकार हो गया था। निर्मित नगर उनके आत्म बलिदान, साहस और मातृभूमि के प्रति प्यार का प्रतीक है।

छात्रों की यह परम्परा हो गयी है कि वे ग्रीष्म अवकाश मे आराम के साथ-साथ श्रमस्थलों पर कार्य भी करते हैं। वे जत्थे बनाकर साइबेरिया और सुदूर-पूर्व मे निर्माण प्रायोजनाओं और राजकीय फार्मों में जाते हैं, अथवा बड़े नगरों के इर्द-गिर्द सामूहिक फार्मों के खेतो मे काम करते हैं। छात्रों को अपने काम के बदले वेतन दिया जाता है, मगर वे पैसे के लिए नही बल्कि अपने उच्च सार्वजनिक कर्त्तव्य से प्रेरित होकर काम पर जाते है। १९६८ के दौरान छात्रों द्वारा अर्जित धन का आधा भाग वियतनाम की जनता के लिए सहायता कोष मे दान कर दिया गया था। ४.२ करोड हेक्टेअर (१ हेक्टेअर-२.४७ एकड़) परती जमीन तोड़ने में ७,००,००० लाख से अधिक युवकों और युवतियों ने भाग लिया है। साइबेरिया क्षेत्र में बिजलीघर, खदानें और कारखाने भी नौजवानो ने बनाये हैं। पिछले वर्ष नयी निर्माण प्रायोजनाओ मे ३० लाख से अधिक युवक और युवतिया कार्य कर रहे थे, जिनमें से लगभग दस लाख कोम्सोमोल के सदस्य हैं। इसलिए कोई ताज्जुब नही कि २५ नगरों और मजदूर बस्तियों तथा सैंकड़ों औद्योगिक संस्थानो, सामूहिक और राजकीय फार्मों, स्कूलों तथा कुछ जहाजों तक पर कोम्सोमोल का नाम मिलता है। अनेक कोम्सोमोल सदस्यों को श्रमवीर की उपाधि प्रदान की गयी है।

अन्य क्षेत्रों में

राष्ट्रीय जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नही जिसमे कोम्सोमोल की अपनी गतिविधिया न हो। इसके सदस्य शिक्षा, स्वास्थ्य, विश्राम, खेलकूद, संस्कृति नगरों और ग्रामीण इलाको में उत्पादन के क्षेत्रों मे व्यापक कार्य करते हैं।

कोम्सोमोल सदस्य स्कूल भवनों के निर्माण, उनकी प्रयोगशालाओं और वर्कशाप को सुसज्जित करने में मदद करते हैं। वे पत्राचार द्वारा और सान्ध्य स्कूलों के माध्यम से शिक्षण का प्रसार करते हैं तथा नौजवानो के लिए व्यावसायिक शिक्षा का इन्तजाम करते हैं। उच्चतर स्कूल चयन समितियों और वैज्ञानिक परिषदों मे उनके प्रतिनिधि रहते हैं, वे व्यायाम तथा खेल-कूद को युवा समुदाय मे लोकप्रिय बनाने मे सक्रिय भूमिका निभाते हैं। १५,००० से अधिक कोम्सोमोल सदस्य विभिन्न खेल-कूद सोसाइटियों के प्रबंधकमंडलों में चुने गये हैं।

क्लब, संस्कृति प्रासादों और पुस्तकालयों जैसे सांस्कृतिक और शैक्षिक संस्थानों में भी उनकी स्थिति इसी प्रकार है। मे इन संगठनों में नौजवानों के व्यापक हिस्से को आकृष्ट करते हैं। कोम्सोमोल के सदस्य रोचक मुलाकातें, शौकिया प्रतियोगिताएं, उत्सव, "युवा कैफो" में विचार-विमर्शों के आयोजन में स्वयं पहलकदमी करते हैं। उनका लक्ष्य यह है कि पांच दिन के कार्य-सप्ताह के प्रचलन से प्राप्त अवकाश के समय को जितने अच्छे ढंग से हो सके, उपयोग में लाना चाहिए। कोम्सोमोल केन्द्रीय समिति उन आयोजकों में से एक है जो अखिल संघीय शौकिया कला उत्सवों का आयोजन करते हैं।

राष्ट्रीय अर्थतंत्र के क्षेत्र में, कोम्सोमोल नौजवान मजदूरों के बीच प्रति-स्पर्धा आन्दोलन आयोजित करती है जिसके फलस्वरूप सभी नयी प्रायोजनायें ठीक समय पर चालू हो जाती हैं। विशिष्ट कार्यलक्ष्य कोम्सोमोल के सदस्यों और नौजवानों के कठोर परिश्रम के फलस्वरूप समय से पहले ही पूरे हो जाते हैं।

१९६२ में "कोम्सोमोल सर्च लाइट" नामक एक युवा आन्दोलन शुरू किया गया था। इसके कार्यक्रम के अनुसार युवा कोम्सोमोल सदस्य उत्पादन इकाइयों के निरीक्षण का कार्य करते हैं जिनका उद्देश्य मौजूदा खामियों को दूर करना होता है। तीस लाख से अधिक युवजन इस आन्दोलन में भाग ले रहे हैं। एक और अधिक महत्वपूर्ण आन्दोलन जिसमें कोम्सोमोल भाग लेता है, वह है अखिल संघीय तकनीकी अनुसंधान प्रदर्शनी जिसमें कि नौजवान अन्वेषक, आविष्कर्ता और यंत्रों के विकासकर्ता भाग लेते हैं। पिछले साल २० लाख से ज्यादा युवक और युवतियों ने अपनी तकनीकी उपलब्धियों का प्रदर्शन किया था। उनमें से ८ लाख उपलब्धियों को क्रियान्वित किया जा चुका है जिसके फलस्वरूप ७० करोड़ रूबल की बचत हुई है। प्रदर्शनी के ६०० से अधिक भागीदारों को सोवियत संघ आर्थिक उपलब्धि प्रदर्शनी के पदक प्रदान किये जा चुके हैं।

ऐसे विशिष्ट योगदान का जिक्र करते हुए सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने १९६८ में कोम्सोमोल कांग्रेस को उसकी पचासवीं सालगिरह के अवसर पर भेजे गये बधाई संदेश में टिप्पणी दी थी: "हमारे मेहनतकश नौजवान सोवियत संघ के वीर मजदूर वर्ग की वरिष्ठ पीढ़ियों की क्रान्तिकारी परंपराओं के सम्मान को ऊंचा उठाते हैं; वे धुरंधरों की, उत्पादन के उस्तादों की, कला पर महारत हासिल करते हैं। नवयुवक और नवयुवती श्रमिकों के सुनहरे हाथ देश की संपदा को बढ़ाते हैं जो कि जनता के जीवन को बेहतर बनाने का आधार प्रदान करता है, वे हमारे वैज्ञानिकों और डिजाइनरों के साहसिक विचारों को क्रियान्वित करते हैं।"

नौजवान कम्युनिस्ट लीग की पहलकदमी पर हाल में एक देशव्यापी आन्दोलन शुरू किया गया है जो १९१७ के तूफानी दिनों में और उसके बाद के वर्षों में, गृहयुद्ध और विदेशी हस्तक्षेप के वर्षों में तथा नाजियों के खिलाफ युद्ध की हाल की अवधि में पुरानी पीढ़ियों द्वारा किये गये संघर्ष के बारे में सब कुछ पता लगायेंगे। हजारों टुकड़िया बनायी जा चुकी हैं जो उन दिनों के युद्ध मार्गों का अन्वेषण करती हैं और उन पर मार्च करती हैं, तथा लड़ाकू योद्धाओं की वीरता के बारे में सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरण एकत्र करती हैं। नौजवान लोग समाधि स्थलों को और शहीद सैनिकों की कब्रों को ठीक-ठाक करते हैं, गुमशुदा लोगों का सुराग लगाते हैं। वे शहीदों के सम्मान में नये स्मारक और स्मारक पट्टियां भी लगाते हैं। इस तरह के १५,००० स्मारक अब तक बन चुके हैं। नौजवान लोग जीवित योद्धाओं से भी मिलते हैं और उन युद्धों की प्रेरक कथाएं सुनते हैं जिनमें उन्होंने तथा उनके संगी-साथियों ने हिस्सा लिया था। कोम्सोमोल के सदस्य इस आन्दोलन को 'मार्ग के अन्वेषक' कह कर पुकारते है, क्योंकि वे उन रास्तों का पता लगाते हैं जिन पर से उनके मां-बाप और पितामहों ने इतनी बहादुरी के साथ कूच किया था।

नौजवानों में अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करते हुए कोम्सोमोल संसार भर की संघर्षरत जनता के समर्थन में एकजुटता के आन्दोलन संगठित करता है। अपने प्रवास के दौरान मैंने सैकड़ों नौजवानों से मुलाकात की और निरपवाद रूप में मैंने पाया कि अमरीकी हमलावरों के विरुद्ध वियतनाम जैसा छोटा-सा देश जो पराक्रमी युद्ध छेड़े हुए है, उससे वे आन्दोलित हैं। वियतनाम के प्रतिरोध पर प्रणीत पुस्तकें, उनके प्रयाण-गीतों के संगीत रेकार्ड, युद्धरत वीरों की जीवनगाथाएं वे लाखों की तादाद में खरीदते हैं। अनेक नौजवानों ने उस महासमर के बारे में मुझे गीत सुनाये। बहुत अच्छी तरह से मुझे याद है कि गाते समय वे कितने गहन रूप से विचलित थे। उनके चेहरे भावना के चढ़ाव से तने हुए थे। मास्को के स्कूल के एक लड़के को, जिसके गले में तकलीफ थी, तभी संतोष हुआ जब गाने की जगह कम से कम एक वियतनाम प्रयाण-गीत की धुन को सीटी बजाकर उसने सुना दी।

नौजवान संगठनों की पहलकदमी पर वियतनाम की सहायता के लिए एक कोष स्थापित किया गया है। सोवियत युवक और युवतियां साइबेरियाई निर्माण प्रायोजनाओं, परती जमीनों, कारखानों और संयंत्रों में, सभी जगह, श्रम और एकजुटता के दिवस मनाते हैं। वे उन दिनों बिना वेतन के काम करते हैं और उन दिनों की अपनी मजदूरी सहायता कोष में दे देते हैं। इस धन से खरीदे गये चिकित्सा उपकरण, विभिन्न औषधियां और नुस्खे, कपड़े तथा भोजन, और शिक्षा संबंधी उपकरण नियमित रूप से वियतनाम भेजे जाते
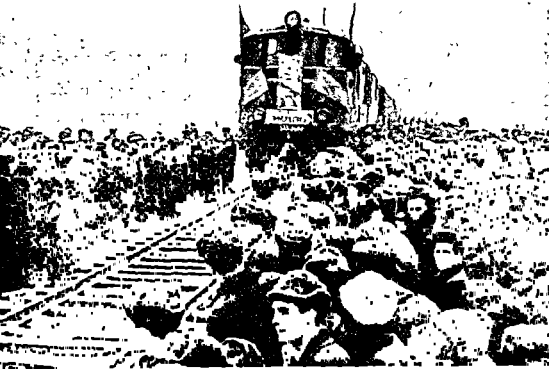
आखिर वह दिन आ ही पहुंचा जब कि पहली ट्रेन लाइन पर दौड़ चली जिसे युवकों ने साहस की राह ("रूट आफ करेज") कहा.

है। नौजवान संगठनों की समिति और सोवियत संघ छात्र परिषद ने वियतनाम जनवादी गणराज्य के ऐसे अनेक बाल-गृहो का संरक्षण अपने जिम्मे ले लिया है, जहां युद्ध मे मृत देशभक्तों के बच्चों की देखभाल की जाती है। स्कूल के बच्चे रद्दी धातु एकत्र करते है, उसे बेचते हैं, तथा इस प्रकार प्राप्त धन से पुस्तकें, कागज-पेंसिल और खिलौने वियतनामी बच्चो के लिए खरीदते हैं। हजारों लोग अपने रक्त का दान करते है।

जब अल्जीरिया आजाद हुआ था, उसकी नयी सरकार को पता लगा कि उनकी दस लाख हेक्टेअर जमीन पर फ्रांसीसी औपनिवेशिक सेनाएं विस्फोटक सुरगें छोड़ गयी है। अल्जीरिया के अनुरोध पर सोवियतजनों ने उन सुरगों की सफाई का जिम्मा ले लिया। नौजवानों को बड़ी तादाद में वहां इस खतरनाक काम के लिए भेजा गया। एक ऐसा ही स्वयं सेवक निकोलाइ प्यास-कोर्स्की एक सुरंग के विस्फोट होने पर वहीं मर गया और अन्य अनेक सोवियत स्वयं सेवक घायल हो गये। नौजवान सोवियत विशेषज्ञ अपनी धरती से लाखों मील दूर अफ्रीका, एशिया और लातीनी अमरीका के विकासशील देशों तथा क्यूबा और मंगोलिया आदि समाजवादी देशों में राष्ट्रीय प्रायोजनाओं में काम करते रहे हैं।

कोम्सोमोल के संगठन और आन्दोलन के एक अंग के रूप में उसका अपना एक सशक्त तथा व्यापक प्रेस है। यह १६५ कोम्सोमोल और बाल अग्रदूतों के अखबार २५ भाषाओं में निकालता है। यह ३८ पत्रिकाएं बच्चों के लिए और २५ नौजवानों के लिए भी निकालता है। इन पत्रिकाओं के विषयों की व्यापक भूमि उनके नामों से स्पष्ट है: युनोस्त (युवक), युनी तेखनीक (युवा तकनीशियन), युनी नातुरालिस्त (युवा प्रकृति प्रेमी), वेस्योलिये कार्तिंकी (जीवंत चित्र), मोलोदोइ कोमुनिस्त (युवा कम्युनिस्ट), स्मेना (युवा पीढ़ी), वोक्रुग स्वेता (विश्व भ्रमण)।

ऐसे प्रकाशन गृह भी है जो पुस्तकें भारी मात्रा में प्रकाशित करते हैं। नीति के तौर पर, वे उदीयमान युवा लेखकों की साहित्यिक कृतियां निरंतर प्रकाशित करते रहते हैं। मोलोदाया ग्वार्दिया (युवा प्रहरी) नामक कोम्सोमोल के सबसे बड़े प्रकाशन गृह ने पिछले ४ वर्षों में २०० आरंभकर्ताओं को ऐसा अवसर दिया है। इसी अवधि में १२ करोड़ प्रतियों में १,५०० पुस्तकें इसी प्रकाशन गृह ने प्रकाशित की हैं। कोम्सोमोल्स्काय प्रावदा नामक केन्द्रीय युवा दैनिक पत्र अपने आप में एक संस्था है, जिसकी ७५ लाख प्रतियां बिकती हैं। इसमें १७"×२३" के औसत समाचारपत्रीय आकार के चार पृष्ठ होते हैं, और अन्य सोवियत पत्रों की भांति इसमें भी कोई विज्ञापन नहीं होते। इसके नियमित फीचरों में युवा समस्याओं पर लेख, कोम्सोमोल की गतिविधियों

ग्रीष्म की जलती धूप हो या शीतकालीन पाला, युवा कुशल-निर्माता कार्यरत हैं।

की खबरें, खेलकूद और फिल्म, देश के अर्थतंत्र की समस्याएं, विदेशों के युवा आन्दोलन तथा नवीनतम घटनाओं के विश्व-समाचार होते हैं। इनके अलावा, सपादक के नाम पत्रों में से सबसे रोचक और महत्वपूर्ण पत्र प्रकाशित किये जाते हैं, जिनके लिए युवजनों के हजारों की संख्या मे रोज आने वाले पत्रो में छंटनी करनी होती है। अखबार के स्तंभों में इन पत्रों पर बहसें शुरू हो जाती है—अत्यावश्यक सार्वजनिक मामलों पर—जिनमें छात्रों और युवा मजदूरो के साथ-साथ डाक्टर, इंजीनियर, लेखक अकादमीशियन तथा मत्रीगण हिस्सा लेते हैं।

कोम्सोमोल्स्काया प्रावदा ने अपनी एक जनमत संस्था कायम की है जो राजनीति, अर्थशास्त्र, संस्कृति और नीति के समसामयिक प्रश्नों पर नियमित रूप से नौजवानों के मतसंग्रह करती है। १९६१ में १७,४४६ लड़को और लड़कियों के बीच एक महत्वपूर्ण मतसंग्रह किया गया था, जिनमें इन नौजवानों से कहा गया था कि वे आज के सोवियत नौजवानों के सबसे प्रातिनिधिक गुणों को परिभाषित करें। निम्नलिखित दस गुण अधिकाश उत्तरदाताओ ने बताये थे :

देशभक्ति
उच्च नैतिकता
सत्यपरायणता
अध्यवसाय
कम्युनिज्म के विचारों के प्रति समर्पण
ज्ञान की पिपासा
सामूहिकता
सक्रियता
नवीनता की तलाश
शांति-प्रेम, अंतर्राष्ट्रीयतावाद।

यह अखबार प्रति वर्ष कविता-प्रतियोगिता करता है जिसमें शौकिया रचनाकारो की सर्वोत्तम कविता पुरस्कृत होती है: कई हजार प्रतियोगी इसमें हिस्सा लेते हैं और पुरस्कृत कवियो की कविताएं अक्सर ही आगे चलकर बहुत लोकप्रिय हो जाती है। १९६४ मे जो कविता पुरस्कृत हुई थी वह मानव के अदम्य जीवट का उद्घोष करती है। उसका भावार्थ इस प्रकार है :

अन्धा आदमी रोषपूर्वक नहीं देख सकता,
गूंगा गुस्से से चीख नहीं सकता,
लूला हथियार नहीं उठा सकता,
लंगड़ा आगे नहीं बढ़ सकता।

मगर अन्धा गुस्से से चिल्ला सकता है,
गूंगा रोषपूर्वक देख सकता है,
लगड़ा हथियार उठा सकता है,
और लूला आगे बढ़ सकता है।

तरुणाई पर विश्वास

युवजनों की शक्ति और क्षमताओं पर सोवियत संघ में अपार विश्वास पाया जाता है। युवजनों को सरकारी निकायों में भाग लेने के अवसर जिस तरह प्रदान किये गये हैं उससे इस विश्वास की अभिव्यक्ति स्पष्ट हो जाती है। संविधान ने कोम्सोमोल को चुनाव के लिए उम्मीदवार नामांकित करने का अधिकार दिया है। पिछले चुनाव मे विभिन्न स्तरों पर चार लाख से अधिक नौजवान लोग चुने गये थे। उनमें से १८२ सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत—सर्वोच्च विधायक निकाय—के सदस्य बने थे। सोवियतों में हिस्सेदारी न केवल युवजनों के बुनियादी हितों के लिए काम करने का अवसर प्रदान करती है बल्कि राजकीय मामलों के प्रबन्ध का प्रशिक्षण भी।

कोम्सोमोल के प्रतिनिधि विभिन्न मंत्रालयों और राज्य समितियों में हैं; इसके सचिव उच्चतर तथा विशेष सेकेंडरी शिक्षा के मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय समेत अनेक मंत्रालयो के मण्डलों के सदस्य हैं। यह समसामयिक तथा दीर्घकालीन आर्थिक विकास की योजनाओं, वैधानिक तथा युवजनो से सम्बद्ध अन्य कानून का मसविदा बनाने और विचार-विमर्श में भाग लेता है पिछले चार वर्षों मे नौजवानों के जन्म, शिक्षा और अवकाश की समस्याओं के संबंध मे लगभग १०० सरकारी प्रस्तावों और निर्णयों को नौजवान कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति की पहलकदमी और हिस्सेदारी में पारित किया जा चुका है। इन प्रश्नों मे सेकेंडरी स्कूल पूरा कर चुकनेवालों को रोजगार, सांध्य स्कूलों में अध्ययन करने वाले युवा मजदूरों की सुविधायें, निर्माण स्थलों पर सांस्कृतिक और खेल-कूद की सुविधाओं की व्यवस्था, युवा मजदूरों तथा किसानों के लिए सांध्य स्कूलों की स्थापना आदि शामिल थे। स्थानीय से लेकर सर्वोच्च स्तर तक की सोवियतें युवजनों के मामलों पर स्थाई प्रतिनिधि समितियां गठित करती हैं। इनके कोम्सोमोल सदस्य युवजनों के जीवन से सम्बद्ध विभिन्न प्रश्नों पर निरन्तर पहल करते हैं। कोम्सोमोल के अस्तित्व के पांच दशकों के दौरान लगभग दस करोड़ युवजनों ने इसकी पांतों में राजनीतिक और सांगठनिक अनुभव प्राप्त किया है।

युवा आन्दोलन और उसके दृष्टिकोण की आधिकारिक व्याख्या पाने के लिए मैंने गेन्नादी यानाएव से मुलाकात की, जो कि युवा संगठन की सोवियत

संघ समिति के अध्यक्ष हैं। यह सार्वजनिक संस्था, कोम्सोमोल, तरुण अग्रदूत (यंग पायनियर), सोवियत संघ छात्र परिषद, लेखकों, संगीतकारों, कलाकारों की यूनियनों की युवा परिषदों, विदेशों के साथ मित्रता की सोवियत सोसायटियों की यूनियन, सोवियत शांति समिति, अखिल-संघीय ट्रेड यूनियन समिति और खेल-कूद संगठनों के युवा आयोगों समेत विभिन्न युवा समूहों को ऐक्यबद्ध तथा उनके बीच समन्वय स्थापित करती है। यह १३० देशों के एक हजार से अधिक युवा संगठनों के साथ सम्पर्क रखती है। एक हॉल मे, जिसकी आलमारिया सोवियत संघ और विदेशों के बारे में प्रणीत पुस्तको से भरी हुई थी, यानाएव मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके बगल में एक सतर्क नौजवान, उनका दुभाषिया, बैठा हुआ था। मैं पहले ही अनेक प्रश्न बनाकर इस युवा नेता को दे चुका था ताकि वह सोवियत युवजनों के क्रियाकलाप के बारे में मुझे ठीक-ठीक जानकारी दे सकें। श्री यानाएव ने कहा :

"सोवियत युवजनों की समस्यायें, क्रियाकलाप और विचार, विदेशों के उन युवजनों से गुणात्मक रूप में भिन्न है, जिन्हें आमतौर पर युवा पीढ़ी की बेचैनी कहा जाता है। हमारे देश में हमें अपने अग्रजों और उनकी क्रान्तिकारी परम्पराओं पर आस्था है। हम अपने समाजवादी अर्थतंत्र और संस्कृति के सभी क्षेत्रों मे काम करते हुए अपने देश के निर्माण में संलग्न हैं। श्रमशक्ति के रूप में उद्योग में हमारी सख्या पचास प्रति शत, निर्माण प्रायोजनाओं में ५७ प्रति शत, इलक्ट्रानिक्स जैसे नये वैज्ञानिक क्षेत्रों में ६५ प्रति शत है। हमारे अग्रज हमारे अनवरत कार्य और समाजवादी मानदंडों, आदर्शों तथा परम्पराओं के प्रति हमारी निष्ठा के लिए हमें प्यार करते हैं। नाजियों के खिलाफ युद्ध मे हमारे नौजवान हर जगह युद्ध के मोर्चों और प्रतिरोध आन्दोलन में अग्रिम पंक्ति में थे। युद्ध में मृत कुल दो करोड़ लोगों में, २८ वर्ष से कम उम्र वाले शहीद युवक और युवतियो की सख्या ६५ लाख थी, लगभग आधी।

अन्य देशों मे युवा आन्दोलनों की धाराओं को सोवियत युवजन किस रूप मे देखते हैं, मेरे इस प्रश्न के जवाब में यानाएव ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि नौजवानो की जबर्दस्त उथल-पुथल और बलिदानों के साथ ही साथ कुछ बुनियादी रूप से गलत विचार भी उनके मस्तिष्क पर हावी हो रहे हैं, उनमें से एक उग्रवामपंथक है जो कि अराजक है, जो समस्त मूल्यों को अस्वीकार करता है। दूसरी धारा है समस्त राजनीति से दूर भागने और केवल गैर-राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की। एक तीसरी धारणा है युवा वर्ग को, एक ताजा और उर्वर शक्ति के रूप में, किसी भी पार्टी पर निर्भर न रहने वाली तथा पूंजीवादी दुर्गुणों से प्रभावित न होनेवाली शक्ति के रूप में महिमा मण्डित करने की। पूंजीवादी लोग युवा आन्दोलनों को निष्प्रभाव

दिशाओं में धकेल देने के लिए इन धाराओं का कुशलतापूर्वक उपयोग कर रहे हैं।

अपनी बात जारी रखते हुए यानाएव ने कहा : "हमारे यहां शक्ति-पूजा नहीं है, सेक्स के प्रचारक नहीं हैं, निद्रा-वीरों के समर्थक नहीं हैं।" मैंने पूछा, "ये निद्रा-वीर कौन हैं ?" युवा नेता हंस पड़े और बोले : "नौजवानों का एक वर्ग जो वास्तविक जीवन से कोई सम्पर्क न रख अपने कमरों में बंद रहते हैं लेकिन हरदम सोचते यह हैं कि वे सब कुछ जानते हैं।" मेरा अगला प्रश्न था, "चीन और चे ग्वेवारा के बारे में क्या सोचते हैं ?" यानाएव गम्भीर हो गये और बोले "जहां तक चीन का संबंध है हमारी पक्की धारणा है कि वहां की सरकार की नीति मार्क्सवाद-विरोधी, क्रान्ति-विरोधी है। लेकिन हमें आशा है कि अन्ततः वह बदलेगी और चीन के साथ हमारे संबंध फिर से अच्छे हो जायेंगे। एक चीनी कहावत है : भगवान जिसे मिटाना चाहते हैं उसे पहले पागल कर देते हैं। लेकिन नेतृत्व हमेशा यही नहीं रहेगा। चे ग्वेवारा के बारे में, *सोवियत युवजनों के मन में उनके जीवन में प्रतिफलित ईमानदारी, आत्म*-बलिदान और क्रान्तिकारी भावना के लिए आदरभाव है। हम प्रति वर्ष उनकी शहादत को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए सभायें करते हैं। लेकिन हम उनकी गुरिल्ला कार्यनीतियों से सहमत नहीं हैं।" मैंने सुझाव दिया कि ऐसे समारोहों को पैट्रिस लुमुम्बा और भगतसिंह जैसे एशिया और अफ्रीका के वीरों को प्रति वर्ष श्रद्धांजलि अर्पित करके व्यापक बनाया जा सकता है, जो कि समाजवादी ध्येय के लिए लड़ते हुए शहीद हुए थे।

बाद में जब मैं युवा संगठनों की समिति के प्रेस विभाग के प्रमुख, दिमित्री पोलंस्की से मिला, तो उनसे पहला वाक्य मैंने यह सुना कि सोवियत युवजन—किसी भी नौकरशाही—प्रवृत्ति के प्रबल आलोचक हैं। इसके बाद उन्होंने मुझे विस्तार से समझाया कि युवजनों की पत्र-पत्रिकायें, जिनकी बिक्री दसियों लाख है, किस प्रकार युवा वर्ग के संगठक और प्रबोधक के रूप में कार्य कर रही हैं। युवा लेखकों को लेख और सम्पादक के नाम पत्रों के रूप में अपने विचार मुक्त भाव से प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिनमें वे अपने देश के समाजवादी पुनर्निर्माण की ज्वलन्त समस्याओं और बुनियादी सिद्धांतों का विवेचन करते हैं। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ाने के लिए युवजनों की गतिविधियों के बारे में विस्तृत समाचार प्रकाशित किये जाते हैं।

संगठन

कोम्सोमोल एक स्वायत्त सामाजिक राजनीतिक संगठन है जो सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन में अपने क्रियाकलाप संचालित करती है।

कोम्सोमोल के सदस्य स्वयं को कम्युनिस्टों के सहकारी मानते हैं। तरुणों के संगठन (पायनियर्स), स्कूल और व्यक्तिगत कम्युनिस्टों को कोम्सोमोल की सदस्यता के लिए लोगों की सिफारिश करने का हक प्राप्त है। सदस्यों को उनकी सदस्यता का कार्ड क्रान्तिकारी संघर्ष के धुरंधरों की उपस्थिति में, अमूमन किसी क्रान्तिकारी स्मारक स्थल पर आयोजित समारोह में पूर्ण गम्भीरता के साथ प्रदान किया जाता है। युवजन उम्मीद के साथ इस दिन का इंतजार करते हैं और इसे अपने जीवन में एक महान सम्मान तथा बड़ी घटना मानते हैं। मैं एक प्रोफेसर से मिला जो अपने छात्र जीवन में सदस्यता के प्रश्न को लेकर उलझन में पड़ गया था। जब वह केवल १४ वर्ष का था, तभी वह किसी तरह कोम्सोमोल मे प्रविष्ट हो गया था जबकि प्रवेश की न्यूनतम आयु १५ वर्ष होती है। इस दोष का पता लग गया और उसे असत्य के आरोप का सामना करना पडा। उसने झूठ क्यों बोला? यह प्रश्न पूछा गया। अपराध भाव से रोते हुए उसने जवाब दिया कि वह कोम्सोमोल बनने के लिए आतुर था और जल्द से जल्द उस संगठन मे पहुंचना चाहता था। उसके स्कूल शिक्षकों की सिफारिश पर, जिन्होने प्रमाणपत्र दिया कि क्लास में उसका रिकार्ड बहुत अच्छा था, उसका निष्कासन रद्द कर दिया गया।

स्थल सेना और जल सेना के लगभग ७० प्रति शत व्यक्ति कोम्सोमोल के सदस्य हैं। उसका आदर्श आचरण सशस्त्र फौजों के कार्य संपादन का स्तर उन्नत करता है। उनके संगठन कोम्सोमोल, युवा मजदूरो और किसानों के स्थानीय असैनिक संगठनो के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रखते है। इससे सेना के लोगों को जनता के ही आदमी होने और सैनिकों के रूप में किसी अलग-थलग समूह के व्यक्ति न होने मे तथा एक सही दृष्टिकोण अर्जित करने में मदद मिलती है। औद्योगिक संस्थान, सामूहिक फार्म और संस्थाएं अनेक सैनिक टुकड़ियों तथा जलसैनिक जहाजों के संरक्षण का भार अपने ऊपर ले लेती हैं और इससे नागरिकों तथा सैनिकों के बीच संबध की कड़ी मजबूत होती है।

प्रत्येक स्कूल में एक कोम्सोमोल सचिव और प्रत्येक कक्षा में एक कप्तान होता है। वे प्रशासन और छात्रों के बीच मध्यस्थ का कार्य करते हैं। सचिव, जो प्रति वर्ष चुना जाता है, अनेक स्कूलों मे स्कूल की शैक्षणिक परिषद् का सदस्य भी होता है। उस हैसियत से वह स्कूल जीवन से सम्बद्ध प्राय: सभी मामलो पर बहस-मुबाहसे में हिस्सा लेता है। सोवियत स्कूलों में अलग से कोई राजनीतिक शिक्षा नहीं दी जाती। यह कार्य मुख्यतः स्वयं संचालित अपने ही राजनीतिक स्कूलों में कोम्सोमोल सगठन करते हैं, जिनमें मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में उसके प्रयोग की शिक्षा दी जाती है।

अपने राष्ट्र की जो सेवा कोम्सोमोल संगठन ने की है, उनके सम्मान में सोवियत सरकार ने उसे छः उपाधियां प्रदान की हैं। उसे कम्युनिस्ट पार्टी के लिए सदस्यों की सिफारिश करने का अधिकार प्रदान किया गया है। पार्टी की सदस्यता-प्रार्थियों में लगभग आधे लोग कोम्सोमोल की पांतों से आते हैं।

कोम्सोमोल की सोलहवीं कांग्रेस मई १९६६ मे मास्को में हुई थी। उसमे लगभग पाच हजार प्रतिनिधि आये थे। उनमे से ४२ प्रति शत प्रतिनिधि युवा मजदूर और सामूहिक किसान थे। महिलाएं ४५ प्रति शत थी। ९४ प्रति शत प्रतिनिधि उच्चतर अथवा सेकेंडरी शिक्षा प्राप्त थे। उनमें ७५ डाक्टर और मास्टर आफ साइंस, २३ सोवियत संघ के वीर और ३५ समाजवादी श्रमवीर, और ४, २९५ सोवियत उपाधियों और पदकों से विभूषित थे। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव एल. आई. ब्रेझनेव ने एकत्र नौजवानों को सम्बोधित करते हुए कहा :

"आपका भवितव्य है कि आप उसकी रक्षा करें जो आपके अग्रजों ने जीता है, और कम्युनिस्ट निर्माण की भव्य योजनाओ को क्रियान्वित करें। यह एक सम्मानित, दायित्वपूर्ण और प्रेरक कर्तव्य है। और विश्वास कीजिये, वह वक्त आयेगा जब आपके बच्चे और नाती-पोते आठवें दशक के नौजवान लोगों के कृत्यों और उपलब्धियो से ईर्ष्या करेंगे।

"समय के अपने नियम होते है जो वह लोगों से मनवाता है। युवजन वृद्धों से विरासत पाते हैं। परिवार में यही होता है और समाज में भी यही होता है। पीढ़ियों के परिवर्तन मे विभिन्न आयु के लोगो का संयुक्त, हाथ से हाथ और कंधे से कंधा मिला कर, कार्य शामिल होता है। प्रत्येक पीढी को समाज के जीवन में सर्वोच्च पदों तक पहुंचने का अवसर आता है। समय आपके लिए भी यही कर रहा है। पुराने साथियों को आपमें निष्ठा है और वे आपसे नये वीरतापूर्ण कार्यों तथा नयी श्रम विजयो की अपेक्षा करते हैं।

"हम नौजवान लोगों की हिस्सेदारी के बगैर देश के सामाजिक-आर्थिक जीवन में सफल प्रगति नही कर सकते। सोवियत कोम्सोमोल एक जबर्दस्त ताकत है। आज इसकी पांतों में मजदूर, छात्र, सामूहिक किसान, वैज्ञानिक, अन्तरिक्षयात्री और शिक्षक ऐक्यबद्ध हैं। पार्टी इसका ध्यान रखती है कि कम्युनिज्म के युवा निर्माता सुशिक्षित और रचनात्मक चिंतन करने वाले व्यक्ति बनें।"

उसी कांग्रेस में एक अन्य वक्ता थे कांस्तांतिन फेदिन, जो कि सोवियत संघ के एक अग्रगण्य नेता और अखिल संघीय लेखक यूनियन के पदाधिकारी हैं। उन्होंने कहा : "हमारे लक्ष्य समान हैं—कम्युनिस्ट निर्माण में सक्रिय हिस्सेदारी और नये मानव को लगातार गढ़ते जाना। तो आइये, हम अन्त तक अपने

उदात्त कर्तव्यपूर्ण विजय तक मनुष्यों को शिक्षित करने और कम्युनिज्म का निर्माण करने के प्रति सच्चे रहें।"

समाजशास्त्रीय अध्ययन

१९१३ और १९१४ के आरम्भ में जारशाही रूस के कुछ अखबारों ने अपने पाठक के नाम एक प्रश्नमाला प्रकाशित की थी, जिसमें सुख के अर्थ और आदर्श से सम्बद्ध प्रश्न थे। उत्तर देने वाले ५५० में से ९७ लोगों ने कहा कि वे सुखी हैं, १६४ ने कहा कि वे दुखी हैं। नयी भाषाओं की छात्रा एक २४ वर्षीया लड़की ने कहा : "'सुख' नामक शब्द को हमारे शब्दकोष से निकाल दिया जाना चाहिए, क्योंकि सुख जैसी कोई चीज होती ही नही है।" उससे सहमत साइबेरिया के एक नौजवान कर्मचारी ने लिखा : "जीवन में न तो सुख है न कोई अर्थ। जब हर व्यक्ति अपनी सुरक्षा का महल दूसरे की बदनसीबी पर खड़ा कर रहा हो, तो सुख कहां हो सकता है। अन्ध-विश्वासी (उनका सुख सच्चा है!) और वे लोग जो जानवरों से भी बदतर हैं तथा जिनके क्रूर हृदय दूसरो को भूखे या मरते देखते हुए भी नही पिघलते, वही सुखी हो सकते हैं।"

प्रश्नों का जवाब देते हुए एक २७ वर्षीय शिक्षक ने कहा : "सुखी होने के लिए मुझे वह आदर्श चाहिए जो मेरे हृदय और मस्तिष्क को भर दे तथा मुझे प्रेरणा दे।" १९१३-१४ के मत सर्वेक्षण की सामग्री दिखाती है कि क्रान्ति पूर्व रूस के अधिसंख्य युवजनों का विश्वास था कि सुख का आदर्श धन में निहित है। २० वर्ष की एक लड़की ने कहा : "सुख का अर्थ संपत्ति, पैसा और सिर्फ पैसा—यही सच्चा सुख है। धन ही वह साधन भी है जो जीवन के सर्वोच्च मूल्य उपलब्ध करा सकता है।" १७ वर्षीया एक अन्य लड़की ने कहा : "सुख धन, धन, धन ही है।"

सोवियत युवजनों के हाल के समाजशास्त्रीय अध्ययनों के दौरान प्राप्त जवाब तीव्र रूप में इसके विपरीत है। १७,४४६ लोगों में से केवल ४०६ ने उस मत सर्वेक्षण में कहा कि सुख की मुख्य शर्त धन है। जिनसे प्रश्न किये गये थे, उनमें वे नगण्य थे। कोम्सोमोल ने एक और सर्वेक्षण कराया, जिसने इसकी पुष्टि की। नौजवानों से सवाल किया गया था, "आप किस चीज को सुख के लिए सबसे आवश्यक मानते हैं ?" उनके जवाब से प्रकट है कि सबसे आवश्यक है कोई रोचक कार्य सुलभ होना (५४.१ प्रति शत), फिर परिवार के साथ अच्छे संबंध (४८.६ प्रति शत), उसके बाद अन्य लोगों से सम्मान आदि पाना, और पांचवें स्थान पर भौतिक सुरक्षा (३६.९ प्रति शत)।

"आपके समवयस्कों के कार्यों के मुख्य प्रेरक उद्देश्य आपकी राय में कौन से हैं ?" नौजवानों द्वारा इसका जवाब आज सोवियत युवजनों के आदर्शों को प्रकट करता है उनमें से अनेक (३७.२ प्रति शत) ने यह जवाब दिया : "जनता के लिए सर्वाधिक उपयोगी होने की उनकी आकांक्षा," और केवल ८.६ प्रति शत ने कहा, "महत्वाकांक्षा और स्वार्थपरायणता।"

गोर्की सभाग के नौजवानों के एक दैनिक ने अपने पाठकों से कहा कि वे अपने जीवन के बारे में सक्षेप में लिख भेजें, और इसके जवाब में अनेक पत्र आये जो वैविध्य तथा दिलचस्पी से भरे थे। वी. येरमाकोव ने लिखा : "मैं २२ वर्ष का हूं और मुझे अभी ही ऐसा लगने लगा है मानों मैंने परिपूर्ण जीवन जिया है, हालांकि उसमें ऐसा कुछ नही है जो सामान्य से अलग हो और मैंने कभी कोई महान चीज नही की है। मैं महज एक मजदूर हूं जिसे अपने काम पर गर्व है। ८ वर्ष की शिक्षा के बाद, १६ की आयु में मैं एक प्रशिक्षार्थी धातु-मजदूर बन गया और सांध्य स्कूल में अपनी शिक्षा जारी रखी। आज मैं ट्रालीबस डिपो मे एक अच्छी तरह योग्यता प्राप्त धातु मजदूर हूं।" तात्याना श्वेत्सोवा के पत्र मे लिखा था : "मैं एक दुकान में सेल्स असिस्टेंट हूं जिसमे कार के सामान और कल-पुर्जे बिकते है। कुछ लोग सोचते हैं कि दुकान मे काम करना आसान होता है—आपको सिर्फ जोड़ घटाना और ग्राहकों को देख मुस्कराना आना चाहिए और बस। लेकिन यह सच नहीं है। आज दुकान के सहायकों को उससे कही अधिक, जो कि मात्र सेकेंडरी शिक्षा समाप्त करने पर नही प्राप्त होती है, सर्वांगीण शिक्षा पाना जरूरी है। जैसा कि मैंने काम शुरू करते ही जान लिया था। यही वजह है कि मैं अब सोवियत व्यापार संस्था में एक बाहरी छात्रा के रूप में अध्ययन कर रही हूं।"

एक डाक्टर, अलेक्सेइ कोरोल्योव ने बताया कि उसने चिकित्सा की लाइन क्यों चुनी है। उसके पत्र मे लिखा था : "प्रत्येक के पास आदर्श होते हैं, और प्रत्येक नौजवान जीवन प्रारम्भ करते समय किसी आदर्श व्यक्ति को सामने रखता है, जिससे उसे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करनी है। सौभाग्य से मुझे अपने परिवार में ही एक ऐसा व्यक्ति मिल गया—मेरा पिता, प्रोफेसर बोरिस कोरोल्योव, जो एक सर्जन हैं और सोवियत सघ मेडिकल साइंसेज की अकादमी के सदस्य है।.. जब उन्होंने एक आपरेशन में मदद करने के लिए मुझसे पहली बार कहा, तो मुझे महसूस हुआ कि वह मुझ पर कितनी आस्था रख रहे हैं।...इस वर्ष मैं तीस का हो जाऊंगा। अपने युवा जीवन में मैंने उच्चतर शिक्षा प्राप्त की है, चिकित्सालय मे ६ वर्ष तक काम किया है और लगभग ५०० आपरेशन किये हैं। अब मैं एक स्नातकोत्तर थीसिस तैयार कर रहा हूं।" एक पाठक अनातोली सावेंकोव ने लिखा : "जीवन हमे सब पाठ पढ़ाता

है और प्रायः ही आपको उन्हें आजमाने और छांटने में अपना सिर खपाना पड़ता है। लेकिन एक बात का मुझे पक्का यकीन है, जीवन में सबसे उपयोगी चीज है जनता के लिए उपयोगी हो पाना। यही मेरा आदर्श है इस शब्द के सर्वोच्च अर्थों में। जीवन और अपने अनुभवों ने मुझे यही सिखाया है।"

पत्र लेखकों में से एक, एक बैले नर्तकी, लियोनारा ज्लोबिना भी थी। उसने कहा : "संक्षेप में 'अपनी पीढी' का वर्णन कर सकना कठिन है, क्योंकि इसमें लाखों नौजवान और नवयुवतियां है, जिनमें से हरेक के अपने-अपने जीवन लक्ष्य हैं। लेकिन इसके बावजूद एक चीज हम सभी में समान है—हम सभी कुछ न कुछ स्पृहणीय पाने के लिए यत्नशील हैं। मसलन, मुझे ही लीजिए। मैं सदा से एक बैले-नर्तकी बनना चाहती थी। मैंने भीषण कठोर श्रम किया और अंत मे बैले स्कूल मे प्रवेश की परीक्षा पास कर ली। मैं अब सात वर्षों से रंगमच पर कार्य कर रही हूं। नयी-नयी भूमिकाओं के श्रमसाध्य, दिलचस्प कार्य के सात वर्ष से। अभी भी नयी भूमिकाओं में नृत्य करने की मेरी असंख्य योजनाएं है और अपने व्यवसाय में नयी उपलब्धियों के लिए यत्नशील हूं, जो कि मुझे प्रिय है और जो असख्य दर्शकों को आनन्द प्रदान करता है।"

इल्या एहरेनबुर्ग

सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक इल्या एहरेनबुर्ग ने, जो कि अपने रूढि-विरोधी और स्वतंत्र विचारो के लिए विख्यात थे, अपने देश के युवा समुदाय का विवेचन करते समय, मृत्यु से कुछ समय पहले, कहा था :

"स्पष्ट कहू कि दुनिया के किसी भी भाग में पीढ़ियों के बीच किसी भी प्रकार का विरोध है ऐसा मैं नही सोचता। पश्चिम में वर्ग विरोध है। पिताओं और बच्चों की समस्याओ को मैं आदतों और रुचियों मे परिवर्तन से अधिक कुछ नही मानता। जब मै युवा था, खेल-कूद में इतना उत्साह नही दिखाता था जितना कि आज के नौजवान दिखाते हैं। और हम दूसरी तरह के नृत्य करते थे। यदि आज मैं यह मांग करूं कि युवजन आज वही नृत्य करें जो मेरी जवानी के दिनो में मुझे प्रिय थे, तो निश्चय ही मुझे ठढ़ा जवाब मिलेगा। कला मे भी रुचियां बदलती हैं। बहुत-सी चीजें जिनकी मैं १५ वर्ष की आयु में सराहना करता था, आज केवल ऐतिहासिक महत्व की रह गयी हैं। ये परिवर्तन बिलकुल स्वाभाविक है। यदि हम कहे कि युवतर पीढी हमारी अपनी पीढी से बिलकुल भिन्न नही है, तो यह सोवियत सघ के आधी सदी के अस्तित्व को नकारने के समान होगा।

"मैं अपने नौजवानों की जो बात सबसे ज्यादा पसन्द करता हूं वह है जीवन के प्रति उनका आलोचनात्मक दृष्टिकोण। नये लोग अपने आस-पास

हो रही चीजों का मूल तत्व समझने और स्वयं उन घटनाओं को प्रभावित करने के लिए आतुर हैं। मैं प्रायः ही विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों और स्कूल के शिक्षकों से यह शिकायत सुनता हूं कि युवजनों से निबटना बहुत मुश्किल है। यह एक खास अर्थ में है। युवतर पीढ़ी अन्धभाव से किसी भी चीज को नही स्वीकारती। मेरी राय में यह एक अद्भुत चीज है। इसके अलावा, नये लोग संस्कृति के मामले मे पुरानी पीढ़ी से बहुत बेहतर स्थिति में हैं। आज जो मां-बाप हैं, वे सब जवान थे, तब संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाने की प्रक्रिया शुरू हुई थी और जब संस्कृति समूचे समाज की संपत्ति बन जाती है तो उसका विकास पहले-पहल सतह पर होता है—वह गहराई के बजाय व्यापकता में बढ़ती है। गहराई के मूल्य पर व्यापकता मे संस्कृति का यह विकास प्रायः (विश्व) युद्ध तक जारी रहा। युद्ध के बाद परिमाणात्मक संस्कृति गुणात्मक बन गयी, यानी, औसत सोवियत नागरिक अधिक गहन रूप से सुसंस्कृत व्यक्ति बन गया। यह प्रक्रिया अभी भी चल रही है और फलस्वरूप छठे और सातवें दशक के युवजनों का सांस्कृतिक स्तर उनके माता-पिता से बहुत ऊंचा है।

"नये लोगों में कमजोरियां भी हैं। सोवियत संघ के इतिहास में पहली बार युवजन अपेक्षाकृत सरल जीवन बिता रहे हैं, और युवजन बहुत जल्दी उसके आदी हो जाते हैं। उनके अग्रज अक्सर सोचते हैं कि वे बिगड़े हुए लाड़ले हैं। लेकिन हम चीजों को पूरी तरह से सही ढग से नहीं देखते हैं। मैं एक संपादकीय मंडल का सदस्य था जो युद्ध में मारे गये युवा कवियों की कृतियों का प्रकाशनार्थ चयन कर रहा था। इन कवियों को भी उनके मां-बाप से बेहतर रहन-सहन का स्तर प्राप्त हुआ था, और मुझे याद आता है कि उन्हें "सुकुमार" भी माना जाता था। पर युद्ध ने दिखा दिया कि वे फौलाद जैसे कठोर थे। वे नैतिक रूप से अपूर्ण भी नहीं थे। मुझे लगता है कि पांचवें और छठे दशक के युवा कवियों में कुछ समानता है। यदि जरूरत पड़ी तो बाद वाले दिखा देंगे कि वे अपने पिताओ से कम दृढ़ और अडिग नही थे। युवजनों ने अग्रज पीढ़ी से समाज के रूपांतरण के बारे में क्रान्तिकारी विचारो की विरासत पायी है। दोनों पीढ़ियों में इस पर कोई मतभेद और विवाद नही है कि सोवियत समाज कैसा होना चाहिए। नये लोग यह जानते हैं कि इस नये समाज के शिल्पी वे नही हैं—इसकी परिकल्पना और निर्माण उनके माता-पिताओं ने किया है। उनका कर्तव्य इमारत को अधिक आरामदेह और आनन्ददायक बनाना है। इस मामले मे हमारे नौजवानों का उनके माता-पिताओं से अधिक साम्य है, बनिस्बत पश्चिम के नौजवानों के, जिनसे कि उनका सिद्धांत के अनेक प्रश्नों पर मतभेद है।

"ऐसा कोई समाज नहीं है जो प्रगति नहीं करता, और कोई भी पीढ़ी मात्र उसी के बल पर जिन्दा नहीं रह सकती जो उसने अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से विरासत में उपलब्ध किया है। ऐसी पीढी तो जातमृत होगी। हमने जबर्दस्त दिक्कतों के बावजूद समाज की इमारत खड़ी की है। कुछ ने उसे नष्ट करने की कोशिश की, और युद्ध के दौरान हमने घोर यातना भुगती। जब युद्ध खत्म हुआ, तो हमें फिर से शुरूआत करनी पड़ी। एक बार फिर से हमें नीव और निर्माण की वस्तुओं के बारे मे सोचना पड़ा। अब हालात भिन्न हैं। नयी पीढी को सोचना है कि वह इस भवन में कैसे रहे, इसे किस तरह सुन्दर बनाये और इसमे क्या जोडे। नये जमाने ने नयी समस्याओं को जन्म दिया है। जब हम माग्नीतोगोस्क बना रहे थे या खंदकों में लड़ रहे थे, हमें सबसे पहले अपनी दैनिक रोजी-रोटी के बारे में सोचना पड़ता था। लेकिन यह कल्पना करना मूर्खता होगी कि युवा वर्ग अन्य समस्याओं से, जो हमसे भिन्न है, निपटने में समर्थ नहीं होगे। इनमें से एक है नयी नैतिकता। कम्युनिस्ट नैतिकता को जनता के बीच नये संबंध स्थापित करना चाहिए; यह एक जटिल और गम्भीर काम है जिसे महज नारे लगाकर नही किया जा सकता। जरूरत है वक्त की और सर्वांगीण विश्लेषण की; गम्भीर प्रयत्न और प्रेरणा की। और जब नौजवान लोग इस समस्या से निबट लेंगे तो हम मा-बापों को उनसे ईर्ष्या होगी।"

न हिप्पी, न विद्रोह

पश्चिमी देशों को देखने पर युवजनों में अलग-अलग नामों—टेडी ब्वायज, मॉड्स, रौकर्स, बीटल्स, स्किनहेड्स, हिप्पीज—से अजीब-अजीब नये पंथ बढ़ते दीखते हैं। हिप्पी समुदाय अमरीका में बहुत बढ रहा है। काफी संख्या में ये दुनिया के विभिन्न देशो में जा बसे हैं। सभी समूहों में कुछेक समान लक्षण है। वे व्यवहार में अराजक, वेशभूषा, चाल-चलन और जीवन के रहने के तरीकों में वे स्वच्छन्द हैं। हिंसा की ओर खासा रुझान है। वे स्वीकृत नैतिक मूल्यों या सामाजिक आचरण की मर्यादाओं की जरा भी परवाह किये बगैर, आनन्द लूटने के लिए यहां-वहां भटकते है। प्रायः ही वे एक निराकार और निष्प्रेम सेक्स में प्रवृत्त होते हैं, और सनसनी के लिए तथा नैदिन बोरियत से पलायन करने के लिए लालायित रहते हैं। नशाखोरी उनकी आदत है। ये समूह कुछ हद तक युवजनों के अन्य समुदायों को दूषित कर रहे हैं। नशाखोरी और तस्करी जो उन्होने शुरू की है, दूर-दूर तक फैल गयी है और अफ्रीका में यह एक राष्ट्रीय समस्या बन गयी है।

कांग्रेस (अमरीकी संसद) को भेजे एक विशेष संदेश में राष्ट्रपति निक्सन ने

पिछले साल बताया कि पिछले कुछ वर्षों में नशाखोरी के अपराध में बन्दी किशोरों की संख्या ८०० प्रति शत बढ़ी है और कहा कि नशीली दवाओं के बढते हुए उपयोग से अमरीका के आम जन-कल्याण को अधिकाधिक खतरा होता जा रहा है। उन्होने लक्षित किया कि कई लाख अमरीकी कालिज छात्र मारिजुआना, चरस, एल. एस. डी, एफेटमाइन या बार्बिटुरेट आदि नशों और दवाओ का प्रयोग करते हैं। कभी-कभी इसके कितने बर्बर नतीजे होते हैं, यह बात अमरीकी ऐसोसियेटेड प्रेस एजेंसी की एक खबर से प्रकट है जो उसने १९७० में नार्थ कैरोलिना में हुई एक भयानक घटना के बारे में दी थी। तीन पुरुष और एक गोरी युवती, इन चार हत्यारों ने लालटेन लेकर एक डाक्टर की पत्नी और उसकी दो छोटी-छोटी लडकियों का, जो ६ और २ वर्ष की थी तथा अपने बेड रूम में सोयी थी, कत्ल कर दिया। अपनी पिशाच लीला में वे "तेजाब महान" है और "सूअरों को मार डालो" की धुन लगाये हुए थे, जबकि बार-बार छुरे चलाते जा रहे थे। इन हत्याकों में दुस्वप्नदायी नशीली दवा 'तेजाब' के नाम से मशहूर है।

इंगलैंड मे हाउस ऑफ कॉमन्स ने मार्च १९७० में, नशाखोरों पर प्रहार करने के लिए एक नशीली दवा नियत्रण कानून पास किया है। ब्रिटेन की एक विशेषज्ञ समिति ने एल. एस. डी. नामक दवा पर अपनी खोजबीन को प्रकाशित कर बताया है कि यह दु:खद (ट्रैजिक) है कि एल. एस. डी. के मौजूदा उपयोग कर्ताओं मे से अधिकांश लोग २५ से कम उम्र के हैं। समिति ने आगे नोट किया है कि इस दवा से हत्या की आकांक्षा पैदा होती है, और यह कि एल. एस. डी. की ज्यादातर मात्रा अमरीका से कैप्सूल या गोली की शक्ल में, "बैंजनी कोहरा" या "नीली किलकार" जैसे आकर्षक नामों के साथ तस्कर होती है।

हिप्पी प्रपंच का जिक्र करते हुए भारत में अमरीकी राजदूत केनेथ बी. कीटिंग ने एक प्रेस सम्मेलन में कहा: "कुछ हिप्पी जिनसे मैंने बातें की वे आदर्शवादी और बुद्धिजीवी है, ऐसा मैने पाया। वे बहुत सी चीजें पसंद नहीं करते जो हमारी पीढ़ी कर रही है। मैं हिप्पियों की एकांगी भर्त्सना नहीं करूंगा। वे जीवन से जुदा हो गये हैं और निरुद्देश्य भटक रहे हैं।" राजदूत ने यह नही बताया कि "आदर्शवादी और बुद्धिजीवी" नौजवान क्यों जीवन से जुदा होने का निश्चय करते हैं। अमरीका के एक सरकारी प्रतिनिधि होने के नाते वे ऐसा नही कर सकते थे।

अमरीका मे अधिकांश नौजवान आज उस समाज से उकता चुके हैं जो उनके चारों ओर मौजूद है, ऐसा समाज जिसमे घनघोर असमानताएं, बढती हुई बेरोजगारी, अनैतिकता और नस्ली भेदभाव हैं। वे देखते हैं कि उनके अग्रज

सांसारिक सफलता के साधन के रूप में भ्रष्टाचार का निरंतर सहारा ले रहे हैं, और अन्य लोगों पर हुकूमत चलाने के लिए सत्ता हथिया रहे हैं। ऐसे खोखले जीवन के प्रति नौजवान अलग-अलग तरीकों से प्रतिक्रिया करते है। अल्पसंख्यक खुद समाज से ही भाग जाते है। उनके लिए हिप्पी और वैसे ही अन्य जीवन मार्ग पलायन का रास्ता खोल देते है। लेकिन उनमें से अधिकाश ने पीछे हटने के इस रास्ते को नहीं अपनाया है। उन्होने पूरे जोश के साथ विद्रोह किया और कभी-कभी अपनी जान की बाजी लगा कर भी उस व्यवस्था से बगावत की है जिसे वे अन्यायी मानते हैं, १९६८ मे पश्चिमी योरप और अमरीका में छात्रों के विद्रोह की जबर्दस्त लहर आयी थी। अमरीका मे विश्वविद्यालय के प्रागणों मे छात्रों ने एक बेहतर और सोद्देश्य शिक्षा की, तथा कालिज प्रशासन में छात्रों की भागीदारी की माग करते हुए, पुलिस से हाथा-पाई की। वे हजारो की तादाद में, वियतनाम मे युद्ध और अपने देश में नीग्रो लोगों के दमन के विरुद्ध आवाज उठाने, सड़को पर भी निकल आये।

फ्रांस में छात्र आन्दोलन, जो शिक्षा सुधारो के लिए शुरू हुआ था, शीघ्र ही समूची जनता के सशक्त आन्दोलन मे बदल गया, जो देश में उदार जनवादी शासन की माग करने लगा। इसी तरह की बगावत पश्चिमी जर्मनी के छात्रों ने भी संगठित की थी।

छात्रो के जबर्दस्त उभार को पीढ़ियों के संघर्ष की उपज बताना मात्र एक सतही रवैया अपनाना होगा। इसके गहनतर कारण हैं। यह बुनियादी तौर पर नौजवानो की बगावत है जो अंधेरे में टटोल रहे है, जो उन दमघोंटू भौतिकवादी मूल्यों के खिलाफ है जो उन पर थोपे जा रहे हैं, और वह भी एक अविराम शब्दाडम्बर और पाखड की आड़ मे। द न्यूयॉर्क टाइम्स में प्रकाशित सोवियत संघ में अमरीका के एक भूतपूर्व राजदूत जार्ज केन्नान ने एक बेलाग बयान मे अपने देश के युवा वर्ग के बारे मे लिखा था :

"...मेरा मंतव्य उस भावना की तीव्रता का मखौल उड़ाना नही है जो वामपंथी छात्रों पर छायी हुई है, अमरीका के राष्ट्रीय जीवन मे ऐसा गम्भीर, ऐसा खतरनाक, ऐसा नाजुक समय मैंने कभी भी अनुभव नहीं किया है। न ही मैं यह कह रहा हूं कि मेरे जैसे लोग इस असन्तोष को किसी दम्भी ऊंचाई पर बैठकर तटस्थता के साथ देख सकते हैं। हममें से किसी को भी इन लोगों के साथ संसर्ग स्थापित करने का हक तब तक नही है जब तक कि हम उनकी बेचैनी के औचित्य को देखने के साथ-साथ, इसकी रचना मे अपनी खुद की जिम्मेदारी को भी स्वीकार न करें, और हम उनसे की जाने वाली अपील के साथ ही, बेहतर जवाब पाने के प्रयत्न में उनके साथ हो जाने की तत्परता की घोषणा न करें।

मैं जानता हूं कि इन तमाम अतिवादों के पीछे—तमाम दार्शनिक भूलों, तमाम स्वकेन्द्रिकताओं और वेशभूषा तथा चाल-ढाल में तमाम विचित्रताओं के पीछे—हमें यहां परेशान और अक्सर ही बेहद आकर्षक लोगों से बर्ताव करना है, जो बुद्धिमानी से या ग़ैर-बुद्धिमानी से ही सही, मगर ईमानदारी और आदर्शवाद से प्रेरित होकर, एक अर्थहीन जीवन और उद्देश्यहीन समाज को स्वीकार करने की अनिच्छा के कारण यह सब कर रहे हैं। कितना अच्छा हो यदि हम और वे एक ओर अनुभव और दूसरी ओर ताकतवर शक्तियां समन्वित कर लें।"

सोवियत संघ में न हिप्पी, न ही छात्रों के उफान दीखते है, क्योंकि यहां की परिस्थितियां नितांत भिन्न हैं। युवजनों के सामने अनंत क्षितिज खुले हुए है जिनका वे अपने जीवन में अन्वेषण कर सकते है। युवक और युवतियां महसूस करते हैं कि वे अपनी नियति के स्वामी हैं, क्योंकि उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक कठिनाई नहीं है, न ही कोई सामाजिक परम्पराएं उनकी राह में रोड़ा डालती हैं। अपने मां-बाप और अग्रजों में उन्हें प्रिय मार्गदर्शक मिलते हैं जो उन्हें समस्त लोगो के आम लक्ष्य के साथ सार्थक जीवन बिताने में मदद करते है। स्कूलों और कालेज मे मुफ्त शिक्षा पाते हुए उन्हें सम्मान और प्यार मिलता है, उनकी शिक्षा को प्रभावित करने वाले सभी महत्वपूर्ण सवालों मे भाग लेने के उन्हे पूरे-पूरे अवसर मिलते हैं। अपना पाठ्यक्रम पूरा करते ही वे काम शुरू कर देते है जहां उनकी पहले से ही प्रतीक्षा हो रही होती है, क्योंकि सोवियत संघ में पिछले चालीस वर्षों से बेरोजगारी का नामोनिशान नही है। तब उनके कुंठित होने के लिए कौन-सा कारण मिल सकता है? दूसरी ओर, उनके आदर्शवाद और प्रफुल्ल जीवंतता को सार्थक दिशाओं मे प्रवाहित करने के लिए तैयार धाराएं मिलती हैं। वे केवल अपने वर्तमान के प्रति ही उत्साहित नही हैं, बल्कि बहुत दूर तक देख रहे हैं और भविष्य के स्वप्नो से परिपूर्ण हैं।

भविष्य

मास्को न्यूज नामक साप्ताहिक पत्र ने प्रश्न किया था : "भविष्य का संसार कैसा होगा?" विभिन्न पेशे वाले नौजवानों ने इसके बेहद दिलचस्प जवाब दिये थे। एक युवा किरगिज लेखक मोलोन मामितोव ने लिखा :

"वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के कारण हमारा जीवन अब इतनी तेजी से बदल रहा है कि अगले पचास वर्षों के बारे में भी भविष्यवाणी करने में मुझे डर लगता है। पर मैं जानता तथा मानता हूं कि भविष्य के लोगों का जीवन सुन्दर और संपन्नतर सारतत्व वाला होगा। मेरे साथी देशवासी किर-

शाप तब रह जायेगा—विज्ञान विषाणुओं और रोगाणुओं से निबट लेगा... इसका अर्थ है कि लोग बहुत प्रसन्न और बहुत सुखी होंगे।"

मास्को के ब्लादिमिर इलियच इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग प्लांट में बॉइलर-आपरेटर ल्युबोव चेर्केसोवा ने कहा है :

"भविष्य का संसार एक ऐसा विश्व है जिसमें न युद्ध होंगे और न शोषण, जिसमें वह सब धन जो आज हथियारों पर खर्च हो रहा है, जनता की भलाई के लिए खर्च किया जायेगा, रोगों से लड़ने के लिए और बाह्य अन्तरिक्ष पर विजय पाने के लिए, जहां शायद लोग 'हनीमून' मनाने जाया करेंगे। हमारे पिता और बाबा हमारी पीढ़ी के लिए समाजवाद की अमूल्य विरासत छोड़ गये हैं। और हम अपने बच्चों के लिए, मेरे पुत्र साशा के लिए, मैं, कम्युनिज्म—धरती पर सबसे न्यायपूर्ण समाज—छोड़कर जाऊंगा। श्रम की उत्पादकता ऊंची होगी, और भौतिक संपत्ति का बाहुल्य होगा। कम्युनिज्म के तहत, श्रम बोझिल नहीं होगा, यह प्रत्येक के लिए एक आवश्यकता और आनन्ददायक वस्तु बन जायेगा। ...काम के घंटे न्यूनतम हो जायेंगे, और घरेलू कार्य मशीनों के द्वारा अपने आप हो जाया करेंगे। इससे सब परिवार के लिए, बच्चों की देख-भाल के लिए, अपने व्यक्तित्व का उन्नयन करने के लिए, कला और साहित्य मे अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को परिपूर्ण बनाने के लिए अपार अवकाश सुलभ होगा। परिवार बड़े-बड़े होंगे। मा-बाप का एक-दूसरे से विमुख होने का कोई कारण नही रह जायेगा। उस हर सतही चीज का प्रेम में कोई स्थान नही रहेगा जिसे शोषण के संसार ने, अधिकारों से प्रवंचना ने और अस्तित्व के युगों पुराने संघर्ष ने जन्म दिया है। दो प्रेमी हृदयों के लिए दृढ़ और स्थायी प्रेम भावनाएं ही भविष्य में सामान्य रूप से प्रचलित हो जायेंगी।"

अग्रदूत

कोम्सोमोल के नीचे बाल अग्रदूतों का संगठन है जो सारे सोवियत संघ मे फैला हुआ है। इसमें १० से १४ वर्ष के लडके-लडकियां होते हैं। कोम्सोमोल की भाति इसकी भी शुरूआत क्रान्ति के पश्चात छोटे-से पैमाने पर हुई थी। ५२ लड़कों और लड़कियो ने १९२२ में मास्को मे पहला अग्रदूत ग्रुप बनाया था। इन प्रारंभिक दिनो मे इन बाल अग्रदूतो को स्कूली अध्ययन के अलावा अन्य अनेक महत्वपूर्ण कार्य करने होते थे, जिनमे से अनेक का महत्व तो राष्ट्रीय स्तर का था। धातु की कमी थी और अग्रदूतों ने कबाड़ (स्क्रैप) एकत्र किया। उन्होंने सामूहिक फार्म बनाने मे मदद की। अपने मा-बाप को पढ़ना-लिखना सिखाया। फिर भी, उन कठिन दिनों में भी बच्चे खेल-तमाशों और खेल-कूद में भाग लेते थे।

फासिज्म के खिलाफ युद्ध वयस्कों और बच्चों दोनों के लिए अग्नि-परीक्षा जैसा था। हवाई हमलों के दौरान अपने मा-बाप की तरह ही वे भी दाहक बमों के धुएं से भरी छतों पर चौकसी करते थे। नन्हें-मुन्ने बच्चे अपने बचाये हुए तांबे के सिक्के टैंक और हवाई जहाज बनाने के लिए दे रहे थे। यह कोई प्रतीकात्मक योगदान मात्र नहीं था। मोर्चे पर ऐसे-ऐसे टैंक मौजूद थे जिनकी आर्मर प्लेट्स पर यह खुदा होता था : "मास्को बाल अग्रदूत", "बश्कीरियाई बाल अग्रदूत।" अनेक अग्रदूतों ने गुरिल्ला दस्तों में शिरकत की और सैकड़ों को पदक तथा अलंकरणों से विभूषित किया गया। दो अग्रदूतों को सोवियत संघ वीर का पदक प्रदान किया गया था। १४ वर्षीय लियोनिद गोलिकोव को इसके लिए सम्मानित किया गया था कि उसने एक ऐसे प्रमुख जर्मन जनरल को गिरफ्तार कराया था जिसके थैले में आक्रमण की योजनाएं मौजूद थी।

आज २५० लाख अग्रदूतों के बीच उनके आयु-समूह का प्रायः प्रत्येक बालक मौजूद है। अब संगठन-शैली और आचरण नियम निश्चित हो चुके हैं। सर्वोच्च अग्रदूत निकाय है केन्द्रीय परिषद, जो कोम्सोमोल केन्द्रीय समिति के मातहत है। सभी स्कूलों में बाल अग्रदूत दल संगठित हैं जो टुकड़ियों और दस्तों में विभक्त हैं, जिनका संचालन स्वय-शासी निर्वाचित निकायों की तरह होता है, सिवाय इसके कि इनके नेता अमूमन युवा शिक्षक होते हैं। अग्रदूतों के अपने प्रतीक चिह्न और अलंकरण होते हैं, जिनमें अग्रदूत ध्वज, लाल टाई, अग्रदूत तमगा, बिगुल, ड्रम आदि शामिल हैं। उनकी अपनी सलामी, और आवश्यक अभिवादन—"तैयार हो जाओ!"—"हमेशा तैयार है"—होता है। त्रिकोण लाल नेक-टाई तीनों पीढ़ियों की एकता की प्रतीक है : कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य, कोम्सोमोल के सदस्य और अग्रदूत। अग्रदूतों की आचरण संहिता में यह उद्घोषित है :

"बाल अग्रदूत अपने देश से प्रेम करता है।

"बाल अग्रदूत हमारे देश की आजादी की लड़ाई में शहीद हुए लोगों की स्मृति का आदर करता है।

"बाल अग्रदूत संसार के सभी बच्चों का दोस्त है।

"बाल अग्रदूत अध्यवसायी, अनुशासित और विनम्र है।

"बाल अग्रदूत श्रम-प्रिय होता है और राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा करता है।

"बाल अग्रदूत एक अच्छा साथी होता है, छोटे बच्चों का ध्यान रखता है और बड़ों की मदद करता है।

"बाल अग्रदूत निर्भीक बनता है, मुश्किलों से भयभीत नही होता।

"बाल अग्रदूत प्रकृति-प्रेमी होता है। हरियाली, उपयोगी पक्षियों और पशुओं की वह रक्षा करता है।

"बाल अग्रदूत सभी बच्चों के लिए आदर्श होता है।"

अग्रदूत संगठन खेलकूद, सौदर्य-बोध शिक्षा, सामाजिक रूप से उपयोगी कार्य, संगीत, नाटक, साहित्य, मनोरंजन, पद यात्रा आदि विविध गतिविधियों मे भाग लेते हैं। यह अपने सदस्यों की पहलकदमी को बढ़ावा देता है और उन्हें ईमानदार, साहसी तथा सुखी बनने में मदद करता है। यह उन्हें उनके प्रथम नागरिक कर्तव्य सिखाता है, उन्हें अपनी क्षमता भर सार्वजनिक मामलों को स्वयं अपना मानना सिखाता है।

ये कार्य पूरे करने हेतु इस संगठन के पास ६,००० ग्राम्य शिविर, ४,००० बाल अग्रदूत प्रासाद, गृह और क्लब, १ हजार से अधिक तकनीकी केन्द्र और सैकड़ों प्रकृति-स्थल, घुमक्कड़ केन्द्र, खेलकूद स्कूल, स्टेडियम, बच्चों के लिए प्रेक्षागृह, पार्क, रेलरोड और पानी के जहाज हैं।

नगर और गावों मे सभी जगह अग्रदूत जन कार्यों में हिस्सा बंटाते हैं। वे फसल काटने, स्कूल के चौगिर्द वृक्ष लगाने, स्टेडियम बनाने, बाग और पार्क लगाने, जड़ी-बूटिया एकत्र करने तथा धातु की छीलन बटोरने, कृषिगत कीड़े नष्ट करने और किंडरगार्टन तथा नर्सरी में मदद करने का कार्य करते हैं। मां-बाप प्रायः ही अग्रदूत की सभाओं की तैयारी करते हैं और उनमें भाग लेते हैं, वे अपने बच्चों के कार्य को गभीरता और सम्मान के साथ देखते है। उनमें से प्रायः सभी अपने बचपन में अग्रदूत रह चुके हैं और वे अपने बेटे-बेटियों को सामाजिक जीवन में प्रथम कदम उठाते देख प्रसन्न होते हैं। वे संतोष के साथ यह देखते हैं कि "हमने यह किया", "हम यह करना चाहते हैं", "हम करेंगे", "हमारी इकाई", "हमारी टुकड़ी", "हमारा गाना" आदि अभिव्यक्तियां बाल अग्रदूतों के अपने कार्यों के वर्णन के दौरान अधिकाधिक सुनाई पड़ती हैं।

अग्रदूत शिविरों मे स्थायी घर या तंबू होते हैं, जो रमणीक ग्राम्य क्षेत्रों मे बने हैं, जहां सात से १४ वर्ष के बच्चे अपना अवकाश बिताते है। हरेक शिविर में एक खुला प्रेक्षागृह, पुस्तकालय, खेल के मैदान, स्नान तट नदी या झील या समुद्र के किनारे, फलों का बगीचा, प्रयोगशाला और वर्कशाप होती हैं। ये सब ट्रेड यूनियनों, स्कूलों और सामूहिक फार्मों की संपत्ति होती हैं। अनुभव के आधार पर ये शिविर अब दो श्रेणियों में बांट दिये गये हैं: एक स्पोर्ट टाइप और दूसरा सैनेटोरियम टाइप। शारीरिक रूप से तंदुरुस्त बच्चे और ऊंची कक्षा के छात्र पहली किस्म के शिविरों में जायेंगे। वे शिविरों में रहेंगे, कई तरह के खेलकूद में हिस्सा लेंगे, पदयात्राएं करेंगे। दूसरी किस्म में लघुतर और कमजोर बच्चों के लिए विश्राम गृह होंगे। यहां सही पथ्य, पोषक आहार, चिकित्सा, पर जोर दिया जायेगा; इससे उन बच्चों के स्वास्थ्य और सामान्य परिस्थितियों में सुधार आयेगा जो शरीर से कमजोर हैं, खासकर जो गंभीर

आपरेशन या बीमारी के बाद ऐसे हो गये हैं। ग्रीष्मकालीन अवकाश लगभग तीन महीने का होता है। कुछेक शिविर ३०-३० दिन की तीन पालियां करते हैं और अन्य शिविरों में ४० या ४५-४५ दिन की दो पालिया होती हैं। १९६८ में लगभग १६० लाख बच्चों ने इन शिविरों में ग्रीष्म अवकाश बिताया था। जो बच्चे शहरों में रह जाते हैं, उनके लिए हरित क्षेत्रों और पार्कों में विशिष्ट शहरी शिविर स्थापित किये जाते हैं। बाल अग्रदूत कैंपों में आवास १० प्रति शत बच्चों के लिए बिलकुल मुफ्त है। पचास प्रति शत बच्चों को ६ रूबल प्रति माह और ४० प्रति शत को १८ रूबल ६० कोपेक प्रति माह देना पड़ता है। ये श्रेणियां मां-बाप की आमदनी के अनुसार निर्धारित हैं। बाकी सारा खर्च, जिसमें बच्चों को शिविर तक लाने-ले जाने और सांस्कृतिक सेवाओं का खर्च आता है, ट्रेड यूनियनें तथा राज्य अपने सामाजिक बीमा कोष मे से करता है।

सोवियत संघ के उत्तरी क्षेत्रों मे रहने वाले बच्चे प्रायः अपना ग्रीष्म अवकाश देश के दक्षिणी हिस्सों में बिताते हैं। समुद्र तटीय विश्राम स्थलों में उन्हें धूप और उष्णता सुलभ हो जाती है, क्योंकि जहां वे रहते है वहा सर्दी बहुत कड़ी होती है और ६-६ महीने तक बनी रहती है। इस समय आर्कटिक सर्किल के उस पार के क्षेत्र के निवासी अपने बच्चों को सोवियत सघ के २५ दक्षिण संभागीय शिविरों और बाल केन्द्रों मे भेज सकते हैं। विशेष विमान और रेलगाड़ियां उन्हें जून के आरंभ में ही दक्षिण की ओर ले जाती हैं। स्कूल के बच्चों को किराये में ५० प्रति शत की कटौती मिलती है। इन्हीं शिविरार्थियों में रेनडियर-पालकों और शिकारियों के बच्चे होते हैं। वे सुदूर उत्तर और ध्रुवीय द्वीपों से हजारों-हजार किलोमीटर दूरी तय करके आते हैं। वे रेडियो पर अपने मां-बाप से बातचीत करते है। काले सागर के क्रीमियाई और काकेशियाई तटों पर विशेष अंतर्राष्ट्रीय अग्रदूत तथा युवा शिविर आयोजित होते है जहा सभी देशों के बच्चे एकत्र होते हैं और उन्हें अंतर्राष्ट्रीय रहन-सहन का पर्याप्त अनुभव मिलता है। सुप्रसिद्ध आर्तेक शिविर इन्हीं में से एक है जिसकी आयोजना ४० वर्ष पहले पहली बार हुई थी। राज्य अरबों रूबल की धनराशि खर्च करता है ताकि बच्चों के आराम और मनोरंजन को आनंददायक, स्वास्थ्यवर्धक और अनुभव-सपन्न बनाया जा सके। इस हेतु डाक्टर, शिक्षक, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता और समस्त सोवियत जनता मुक्त हृदय से योगदान करती है।

ये शिविर थोड़ी अवधि के लिए होते हैं। पर वर्ष भर ऐसे ४,००० अग्रदूत क्लब चालू रहते हैं जहां हजारों स्कूली बच्चे अपने अवकाश के घंटे बिताते हैं। बड़े नगरों में ये क्लब बहुत बड़े होते हैं और इन्हें अग्रदूत प्रासाद कहा जाता है। किसी भी सामान्य क्लब की गतिविधियों में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं, नृत्य, गायन, और नाट्यमंडलियां, साहित्यिक और तकनीकी

सम्मेलन, कला और तकनीकी प्रदर्शनियां, पिकनिक और शौकिया मंडलियां, पुरातत्व से लेकर अंतरिक्ष समूहों तक सम्मिलित होते हैं। जो भी गतिविधि अथवा साहसिक-कार्य बच्चे की स्वास्थ्य अभिरुचि को प्रोत्साहित करता है, उसे यहां उतने ही बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया जाता है, जो बच्चे की प्रतिभा और क्षमता के अनुकूल हो। अलग-थलग व्यक्तिगत मनोरंजन या कार्य को निरुत्साहित किया जाता है, यदि किसी खास काम के लिए यह जरूरी हो तभी इसकी इजाजत दी जाती है। हमेशा ही सामूहिक जीवन, सामूहिक कार्रवाइयों पर जोर दिया जाता है। एक रूसी कहावत के अनुसार, इस मामले में यह सिद्धांत प्रचलित है :

एक काम बोओ—और एक आदत काटो
एक आदत बोओ—और एक चरित्र काटो
एक चरित्र बोओ—और भाग्य काटो।

विश्व संस्कृति की स्मरणीय तिथियों पर अग्रदूत क्लब विशेष संध्याओं, सम्मेलनों और प्रदर्शनियों का अक्सर आयोजन करते हैं। मास्को के अग्रदूतों के एक स्कूल ने महान परी-कथा-लेखक हांसएंडरसन के सम्मान में एक बड़ा समारोह आयोजित किया था जिसके लिए उन्होंने उनके जीवन की एक कथा तैयार की थी, उनकी कुछ कृतियों का पाठ और रंगमंच पर प्रस्तुतीकरण किया, तथा उनकी कहानियों के विषयों पर बनायी रेखाकृतियों की प्रदर्शनी की। एक अन्य स्कूल के बच्चों ने अमरीकी लेखक लागफेलो और हेमिंग्वे के जीवन और कृतित्व को समर्पित एक साहित्य-संध्या तथा एक बड़ा रेडियो कार्यक्रम आयोजित किया था। मास्को स्कूल नं. ७२ की रचनात्मक कला के स्टूडियो के बच्चों की कृतियां जर्मन जनवादी गणतंत्र, टर्की, ब्राजील, चेकोस्लोवाकिया, संयुक्त राज्य अमरीका, युगोस्लाविया, जापान, इटली और १६ अफ्रीकी देशों में दिखायी जा चुकी हैं। बच्चे अन्य देशों के अपने समवयस्कों से पत्र-व्यवहार करते हैं। शौकिया कला क्लबों में वे आधुनिक पश्चिमी चित्रकला और अफ्रीकी तथा दक्षिणपूर्व एशियाई देशों की कल्पनात्मक कला और हस्तकलाओं के बारे में व्याख्यान सुनते हैं।

लेनिनग्राद अग्रदूत क्लब में ३०० कमरे, दर्जनों प्रयोगशालाएं, ८०० तकनीकी और अन्य शौकिया मंडल तथा स्टूडियो हैं, जिनकी कुल सदस्य संख्या २२,००० है। इसका अपना रंगमंच, और विशेष शीतकालीन बाग भी है। सबसे बड़ा है मास्को बाल अग्रदूत प्रासाद, जो लेनिन पहाड़ियों पर स्थित है। मैंने जब इसके भव्य ऊंचे प्रवेश द्वार से प्रवेश किया तो मुझे लगा कि जैसे मेरे साथ आया गाइड मुझे किसी परी लोक में ले आया है। इस महल में कांच

और कंक्रीट की सात एक-दूसरे से जुड़ी हुई सुंदर स्थापत्य वाली इमारतें हैं। सबसे पहले एक रम्य बगीचा है जिसके तालाब में सुनहरी मछलियाँ तैरती रहती हैं। विभिन्न गतिविधियों के लिए ४०० कमरे और हॉल हैं। मेरे पास सीमित समय था, अतः मैं केवल शिल्प और चित्रकला के कला स्टूडियो तथा अंतर्राष्ट्रीय क्लब का हॉल ही अच्छी तरह देख पाया। एक चुस्त कोम्सोमोल सदस्य ने, जो सेकेंडरी स्कूल का सीनियर छात्र था, मुझे समझाया कि किस प्रकार सेमिनार, व्याख्यान, कक्षाओं आदि के माध्यम से वे अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम को जानते हैं, और किस प्रकार वे अपने तरीके से, वियतनाम, अफ्रीका तथा अन्य स्थानों के संघर्षरत जनगणों को समर्थन देते हैं। इस क्लब का ४० देशों के बच्चों से घनिष्ठ संबंध है। उसने मुझे यह भी सगर्व बताया कि इस विराटकाय भवन का निर्माण उनके संगठन, मास्को कोम्सोमोल, ने बाल अग्रदूतों को भेंट के बतौर, १९६२ में किया था। उसने आगे जोड़ा कि उसी अहाते में एक अग्रदूत होटल भी बनाया जा रहा है जिसमें उनके विदेशों से अभ्यागत किशोर मित्र ठहरा करेंगे।

इस अग्रदूत संगठन का अपना खुद का प्रेस भी है। इसके दैनिक पत्र पायोनेर्स्काया प्रावदा की दुनिया के अखबारों में सबसे ज्यादा बिक्री—१ करोड़—होती है। इसकी मुख्य संपादक नीना चेर्नोवा से एक इंटरव्यू में पूछा गया था: "आपके अखबार की खास विशेषताएं क्या है?" उन्होंने जवाब दिया: "मैं कहूंगी कि सर्वप्रथम तो यह अपने पाठक समाज की मांगों की त्वरित आपूर्ति करता है। बच्चे रूढ़ि और आडंबर से नफरत करते है, वे कभी भी बेईमानी को क्षमा नहीं करते, तथा उबाऊ, प्रतिभाशून्य शिक्षकों से जल्दी ही ऊब जाते हैं।" दूसरा प्रश्न और उत्तर इस प्रकार था:

आपने अभी-अभी बेईमानी के बारे में कुछ कहा है। तो, क्या यह शिक्षाशास्त्रीय तौर पर सही होगा कि बच्चों को उन सभी जटिल चीज़ों के बारे में, जीवन में प्रत्यक्ष अंतर्विरोधों के बारे में साफ-साफ बता दिया जाए? क्या बड़े लोगों की आलोचना करने से उनके प्रभाव में कमी नहीं आयेगी?

हमने इन 'खतरों' पर बारंबार विचार करने के बाद ही यह निश्चय किया कि यही हमें करना है और करना ही चाहिए, क्योंकि बच्चा हमारे अखबार पर तभी विश्वास करेगा जब पहले हमारा अखबार बच्चों पर विश्वास करे। वे हमें पत्र लिखते हैं और सलाह मांगते हैं। प्रत्येक पत्र का जवाब देना और [illegible] करना भी हमारा कर्तव्य है। जब वयस्क लोग—चाहे वे [illegible] न हों—बच्चों से गलत बर्ताव करते हैं, तो हम प्रतिष्ठा के [illegible] के कारण उन्हें बख्शते नहीं। कभी-कभी हमारी आलोचना [illegible] नहीं होती। तब हम इस आलोचना में और आलोचना [illegible]।

लेनिनग्राद में युवा अग्रदूतों (यंग पायोनियर्स) के ज्दानोव प्रासाद का प्रवेश द्वार.

पायोनेर्स्काया प्रावदा के गुजारिश नामक विशेष स्तंभ में प्रकाशित होती है। हमारे अनुरोध पर प्रावदा, इजवेस्तिया और युवापत्र कोम्सोमोल्स्काया प्रावदा ने यह स्तंभ शुरू किया है। (प्रावदा सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का केन्द्रीय मुखपत्र है और इजवेस्तिया सोवियत सरकार का सरकारी अखबार।)

आठ वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बच्चों के अधिकारों की यह घोषणा पास की थी कि बच्चों को सामान्य रूप में बढ़ने और विकसित होने का, शिक्षा पाने का तथा शोषण से मुक्त रहने का अधिकार मिलना चाहिए। जबकि इन मानवीय सिद्धान्तों पर सोवियत संघ जैसे समाजवादी देशों में पूरी तरह अमल किया जाता है, दुनिया के विशाल क्षेत्रों में बच्चों की स्थिति दयनीय है। यूनेस्को के अनुसार, ६० करोड़ बच्चे भूख और रोग के शिकार हैं। करोड़ों बच्चों ने कभी भी दूध, मांस या चीनी को चखा तक नहीं है। न्यू यॉर्क, वाशिंगटन और सान फ्रांसिस्को में सड़कों पर बच्चे बूटपालिश करते देखे जा सकते हैं। कन्सास में ५ वर्ष का बच्चा भी अपने मां-बाप के साथ खेतों में काम करता है। किशोर अपराधों पर अमरीका की एक सीनेट समिति ने प्रमाण दिये हैं कि अमरीका में प्रति वर्ष ४५,००० बच्चे बेच दिये जाते हैं, और उनकी कीमत एक से दस हजार डालर तक होती है। इस पेशे में ऐसी कंपनियां लगी हुई हैं जिनमें डाक्टर और वकील भी नौकर हैं। कुछ लातीनी अमरीकी देशों में श्रम शक्ति का लगभग १० प्रति शत हिस्सा १५ वर्ष से कम के बच्चों का है। एक पादरी पाल कैस्पी कहते हैं कि ब्राजील के उत्तर-पश्चिम में उन्होंने झुंड के झुंड बच्चों को भोजन की तलाश में भटकते देखा है, जो चूहे और झींगुर तक, जो भी उन्हें मिल जाये, खा लेते हैं। इस पादरी ने अल्टिमा ओरा नामक पत्र में यह वक्तव्य दिया था। यह सारी ट्रैजेडी डा. माटेसरी के वे प्रसिद्ध वचन याद करा देती हैं जो उन्होंने तीखी पीड़ा के साथ कहे थे : दुनियां के बहुत सारे देशों में बच्चा अभी भी "विस्मृत नागरिक" ही बना हुआ है जिनका वे दौरा कर चुकी हैं।

अध्याय ३

अनवरत प्रक्रिया

शिक्षा, जो कि किंडरगार्टन (शिशु विद्यालय) से शुरू हो जाती है और सेकेंडरी स्कूल तथा कालिज में जारी रहती है, किसी छात्र द्वारा रोजगार में लग जाने के बाद खत्म नहीं हो जाती। सोवियत शिक्षा व्यवस्था पूंजीवादी समाज की तरह नौजवानों को केवल उत्पादन में भागीदारी के लिए आवश्यक अधिकतम ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि एक जीवन-व्यापी शिक्षा देने का, न केवल कार्यदक्ष मजदूर बनाने का, बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण—लोगों को समाजवादी देश का ऐसा सुयोग्य नागरिक बनाने का, जो नये समाज के मूल्यों से ओत-प्रोत हों, प्रयत्न करती है। सोवियत अवधारणा में एक अच्छा कैरियर मात्र बना लेने के संकीर्ण उपयोगितावादी विचार का कोई स्थान नहीं है। उसका लक्ष्य बहुत व्यापक है—लोगों को संपूर्ण व्यक्तियों के रूप में विकसित होने में मदद करना, जिनके जीवन का क्षितिज व्यापक हो और मानवीय आकांक्षाओं तथा लालसाओं के आंतरिक संसार की जिन्हें गहरी समझ हो।

इस पर जोर दिया जाता है कि ज्ञान के संचय और मेधा के तीव्र होने के साथ-साथ, खंडित व्यक्ति से, अपनी खास लाइन के पेशे के विशेषज्ञ से, भिन्न एक सर्वांगीण व्यक्तित्व के समरूप विकास के लिए, भावनाओं और आदर्शों का संतुलित अभिवर्धन भी होना चाहिए। इसी उद्देश्य से सोवियत समाज में शिक्षा को एक एकीकृत आत्म-शिक्षण की अनवरत प्रक्रिया बना दिया गया है। साहित्य, कला, संगीत, फिल्म, टेलीविजन, रंगमंच, संग्रहालय, प्रेस और रेडियो आदि सभी माध्यमों से, जनता का आत्मिक स्तर ऊंचा उठाने के लिए, सारे समय शिक्षा प्रदान की जाती रहती है। यह इतनी लचीली और वैविध्यपूर्ण है कि लगभग प्रत्येक व्यक्ति को उसके जीवन के प्रत्येक क्षण में वह अपने घेरे में ले लेती है। इस अनौपचारिक शिक्षा को संस्कृति के क्षेत्र में कार्य का नाम दिया गया है, और इसमें योगदान करने वालों—लेखक, फिल्म कलाकार, संगीतकार और अन्य—को समाज के सांस्कृतिक क्षेत्र का 'मजदूर' कहा जाता

है। अपनी विशिष्ट योग्यता के लिए, राज्य का सर्वोपरि पुरस्कार, समाजवादी श्रम वीर की उपाधि, इस क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को दी जाती है।

१६६८ में शिक्षक कांग्रेस मे ब्रेझनेव ने अपने भाषण में, इस भूमिका को रेखांकित करते हुए, कहा था :

"हम उनके भी प्रशंसक हैं जो ऐसी फिल्में बनाते हैं जिन्हें लोग पसंद करते हैं, जो तरुणों को क्रान्तिकारी परंपरा में दीक्षित करती हैं, और जो हमारे जीवन के पराक्रमी पहलू का गुणगान करती हैं। बच्चों और नौजवानों की शिक्षा में एक उल्लेखनीय योगदान सोवियत रंगमंच के कार्यकर्ता कर रहे हैं, जो महान नागरिक तथा मानववादी विषयवस्तु वाले नाटक रच रहे हैं... हर वह चीज जो वैचारिक और कलात्मक दृष्टि से मूल्यवान है—पुस्तकें और फिल्में, नाटक, चित्र, शिल्प और संगीत रचनाएं—सभी की पहुंच के भीतर हैं।...हम कलाकार के व्यक्तित्व को समतल करने के किसी भी प्रयत्न के खिलाफ हैं। पार्टी और जनता केवल एक चीज चाहती है कि कला की कृतियां सोवियत जनता के पराक्रम के चमत्कारों की महानता दिखाते हुए, सभी लोगों को उदात्त कम्युनिस्ट आदर्शों की भावना मे दीक्षित करते हुए, तथा उन्हें ये आदर्श साकार करने मे मदद करते हुए जीवन के सत्य को प्रतिबिंबित करें।"

समाजवादी यथार्थवाद

ऐसी व्यापक शिक्षा के सिद्धांतों पर क्रान्ति के बाद के वर्षों में विचार-विमर्श हुआ था। सोवियत कला और साहित्य ने स्वयं अपने विचार, चित्रण के सिद्धांत, बिंब, विषय विकसित किये जो स्वयं जीवन से उद्भूत थे। १६३४ मे सोवियत लेखकों की प्रथम कांग्रेस में बोलते हुए मैक्सिम गोर्की—सोवियत साहित्य के संस्थापक—ने इन सभी पहलुओं को उनकी संपूर्णता मे एक नाम "समाजवादी यथार्थवाद" दिया था। उन्होंने लक्षित किया कि जीवन के प्रति वफादारी इसका बुनियादी गुण है। उसके बाद से तत्संबंधी विचार और भी ठोस हुए हैं। एक समकालीन सोवियत प्रवक्ता के अनुसार :

"समाजवादी यथार्थवाद की पद्धति, जिसकी मूलभूत मांग यह है कि जीवन के सत्य को उसके क्रान्तिकारी विकास मे दिखाया जाय, कलाकार को मनुष्य के आंतरिक संसार को सचाई के साथ उद्घाटित करने मे समर्थ बनाने मे अत्यंत कारगर है। यथार्थ को उसके अंतर्विरोधों की समस्त विविधता के साथ प्रतिफलित करता हुआ, समाजवादी यथार्थ, उसके साथ ही साथ ऐसे तथ्यों, प्रक्रिया और गुणों को देख सकना, उन पर आवश्यक जोर देना तथा उनके साथ कलात्मक न्याय करना संभव बनाता है जो कि प्रगतिशील विकास की प्रवृत्ति को सर्वोत्तम अभिव्यक्ति देते हैं। यह सोचना गलत होगा कि यह

कलात्मक व्यक्तित्व, शैली इत्यादि को सीमित करता है। समाजवादी यथार्थ-वाद के प्रत्येक कलाकार का अपना स्वयं का अनुभव, अपने चुने हुए विषय और शैली, अपना स्वयं का रचनात्मक निजीपन होता है। और तब भी वह समान वैचारिक तथा सौदर्यात्मक सिद्धांतो के जरिये अपने सहकर्मियों से ऐक्यबद्ध होता है।...सच्ची कला की विषयवस्तु और मूल्य उस हर चीज में रहता है जो मानव व्यक्तित्व को बढने में मदद करता है, उसके क्षितिजों को विस्तृत करता है, उसे उदात्त आदर्शों की प्रेरणा देता है, उसे नैतिक तथा बौद्धिक रूप से ऊंचा उठाता है, विश्व का एक सौंदर्यबोधमय दर्शन विकसित करता है, शुभ और अशुभ को बेहतर ढंग से अलगाने तथा तदनुसार प्रतिक्रिया करने में मदद करता है—वह सब जो व्यक्तित्व को विकसित करता है, जीवन के प्रति एक स्वतंत्र सक्रिय दृष्टिकोण को बढ़ाता है, और मनुष्य के वास्तविक मानवीय गुणों को प्रकाशित करता है। ये सब गुण समाजवादी यथार्थ की कृतियों के विशिष्ट लक्षण हैं।"

सोवियत संघ मे ये विचार प्रायः सभी के हैं, इसलिए अमूर्त कला को वहा बेहद नापसंद किया जाता है इसमें कोई आश्चर्य नहीं। अमूर्त कला को सच्ची कला के सिद्धांतों का उल्लंघन समझा जाता है, क्योंकि वह आत्म-अभिव्यक्ति के नाम पर यथार्थ से दूर चली जाती है। जो बिंब बनाये जाते हैं वे बेहूदे और अधिसंख्य लोगों को समझ में न आ सकने वाले होते हैं। कभी-कभी ये पेंटिंग्ज और शिल्पकृतियां निश्चित रूप से बदसूरत होती हैं या उनमें कोई सौदर्य नही होता। सोवियत आलोचक पूछते है कि ये जनता को, उनके मन को और मस्तिष्क को कौन-सा संदेश दे सकती हैं तथा वे लेनिन का उद्धरण देते हैं जिन्होंने ऐलान किया था : "कला जनता की संपत्ति है। वह अवाम द्वारा समझी और प्यार की जानी चाहिए। उसे उनकी भावनाओ को ऐक्य-बद्ध और उन्नत करना चाहिए।...उसे उन्हे कर्म के लिए प्रेरित करना चाहिए और उनके भीतर कला-प्रतिभा को विकसित करना चाहिए।"

लेखक

सोवियत लेखक कला को अपनी सत्यपूर्ण रचनाओं के माध्यम से जन-जन तक ले जाने का निष्ठापूर्वक प्रयत्न करते रहे हैं। जीवन का उनका चित्रण जीवंत और अवाम को अपील करने वाला होता है क्योंकि वह लेखकों के वास्तविक अनुभव से लिखा जाता है, जो कि देश के सर्वसाधारण स्त्री-पुरुषों की पांतों में आते हैं। १९१९ मे लेनिनग्राद के मजदूर-किसान विश्वविद्यालय में भाषण करते हुए गोर्की ने छात्रों से कहा था : "जैसा कि संभवतः आप सभी जानते हैं, मैं आम आदमियों में से आया हूं और मैं न तो स्कूल गया और न

किसी विश्वविद्यालय में मैंने अध्ययन किया। मैंने सभी कुछ प्रत्यक्षतः जीवन से सीखा है, पहले सड़कों पर विज्ञापन पढ़-पढ़कर, फिर पुस्तकें पढ़कर, लेकिन मुख्य रूप से लोगों का निरीक्षण करके।" और एक अन्य मौके पर उन्होंने कहा : "अपने ऊपर एक 'दरिद्रता-ग्रस्त असहनीय' जीवन के दबाव के कारण, तथा इसलिए कि मेरे पास इतने सारे अनुभव थे कि मैं लिखे बगैर नहीं रह सकता था, मैंने लिखना शुरू किया था।"

मिखाइल शोलोखोव, क्रान्ति के बाद के विख्यात लेखक, का भी अपनी किशोरावस्था में अत्यंत कठिन जीवन रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान फासिस्ट बमों ने उनकी मां की हत्या कर दी और गाव का उनका घर नष्ट कर दिया। १९६५ में स्टाकहोम में नोबेल पुरस्कार लेते समय उन्होंने अपने भाषण मे कहा : "मैं उस यथार्थवाद की बात कर रहा हूं जो मनुष्य के लिए जीवन को नया रूप देने का, जीवन का पुनर्निर्माण करने का विचार रखता है। जाहिर है, मैं उस यथार्थवाद की बात कर रहा हूं जिसे अब हम समाजवादी (यथार्थवाद) कहते हैं। इसका अनूठापन इसमें है कि यह एक ऐसी विश्व दृष्टि है जिसे न तो समाधि और न ही यथार्थ से पलायन स्वीकार्य है, जो मनुष्य की प्रगति के लिए संघर्ष का आह्वान करता है, करोड़ों लोगों के प्रिय लक्ष्यों को हासिल करना सभव बनाता है, तथा उनके लिए संघर्ष के पथ को आलोकित करता है।"

मृत्यु से कुछ दिन पूर्व एक इंटरव्यू में इल्या एहरेनबुर्ग ने कहा था : "मैं महज एक इंसान हूं, और मेरी बातों की अत्यंत साधारणता को क्षमा किया जाय। जो कुछ भी मानवीय है, वह मेरे लिए असंगत नहीं है।" बोरिस पास्तरनाक ने, जिन्होंने १९५८ में नोबेल पुरस्कार को इसलिए अस्वीकार कर दिया था कि उसने रूस में प्रतिकूल आलोचना को जन्म दे दिया था, विदेशों मे छपे अपने पत्रों में से एक मे कहा था : "बलिदान के बिना कोई कला नहीं हो सकती। मैं वैसे ही रह रहा हूं जैसा कि मैं चाहता हूं।" पुरस्कार पर विवाद के दिनों मे लिखे एक अन्य पत्र मे, जो उन्होने सोवियत प्रधानमंत्री को भेजा था, लिखा था : "मैं अपने जन्म, जीवन और कार्य से रूस से आबद्ध हूं। मैं उससे अलग और बाहर अस्तित्व की सोच भी नहीं सकता।" कांस्तांतिन फेदिन ने, जो उन आठ प्रमुख सोवियत लेखकों में से एक हैं जिन्हें १९६७ मे समाजवादी श्रम वीर की उपाधि मिली थी, उस वर्ष अखिल सघीय लेखक कांग्रेस मे अपने उद्घाटन भाषण में कहा था : "सोवियत लेखक सोवियत क्रान्ति से जन्मे हैं, उसमें रह रहे हैं। कला मे उनका क्रीडो (सिद्धांत) यही क्रान्ति है।"

सत्य के लिए आवेग की, ललक की और अन्वेषण की यही भावना नयी पीढ़ी के उन लेखकों में दिखायी देती है जो साहित्य के क्षेत्र में उभर रहे हैं।

युवा लेखकों के पांचवें अखिल-संघीय सम्मेलन में जो १९६६ में मास्को में हुआ था, मास्को न्यूज साप्ताहिक ने सम्मेलन में आये कुछ लोगों को अपनी योजनाएं, प्रयत्न और दृष्टिकोण के बारे मे तथा उनके क्षेत्र के साहित्य के बारे मे भी, बोलने के लिए आमंत्रित किया था। यूरी भोतोव ने कहा था : "मैं साइबेरिया का हूं। मैं वहीं पैदा हुआ, विश्वविद्यालय से स्नातक बना और सुदूरवर्ती एक ताइगा (वन्य) समुदाय में शिक्षक के रूप में काम करने चला गया। वहां मैंने जो चीजे देखीं उन्हीं से मुझे लिखने की पहली प्रेरणा मिली। स्वाभाविक बात थी कि मेरी पहली कहानियां साइबेरियाई गांवों के लोगों के बारे मे थी।...मेरे पात्र सामान्य लोग—मछुवारे और मजदूर—हैं। अब मैं कालिनिनग्राद में रहता हू जहां मैं अभी भी समुद्र के संपर्क मे हूं—जो कि अनंत प्रेरणा की वस्तु है।...क्षेत्रीय प्रकाशन गृह युवा लेखकों की कृतियां आतुरता के साथ स्वीकार करता है और उनकी पुस्तकें तेजी से बिक जाती हैं।

उक्रेइन की स्वेतलाना योवेन्को ने कहा : "मेरी पहली कविताएं १९६० मे छपी थी, जब मैं किएव विश्वविद्यालय की छात्रा थी। उसके बाद से मैंने अपनी कलम को चैन नहीं लेने दिया। मेरा मुख्य विषय और पात्र नारी, अपने बच्चों के सुख तथा शांति के उसके सपने है।...मैंने इस पुस्तक का नाम आवाज रखा है। यह अकेली मेरी आवाज नहीं है, बल्कि सोवियत नारी की, शांति मागने वाली एक मां की आवाज है।"

मोर्दोवियाई स्वायत्त गणराज्य के सर्गेई किन्याकिन ने कहा : "मेरा घर मोर्दोविया है। मैं वहां के विश्वविद्यालय से स्नातक हुआ, एक प्रकाशन गृह मे काम करने लगा और अपनी पहली पुस्तक **जीवन और प्रेम** लिखी। अपने अन्य सभी लोगों की तरह, मेरे पास जो कुछ है वह सोवियत सत्ता का दिया हुआ है। अक्तूबर क्रान्ति से पहले हमारे पास लिखित भाषा तक नहीं थी। अब हमारे पास सारांस्क मे विश्वविद्यालय है, हमारा अपना बुद्धिजीवी समुदाय, हमारे अपने लेखक हैं, जिनकी कृतियों का अनुवाद न केवल हमारे देश की अन्य भाषाओं मे, बल्कि विदेशी भाषाओं में भी किया गया है।"

एक युवा कवि बोरिस ओलेइनिक ने कहा : "मैं जब किशोर था तभी से मैंने कविता लिखना शुरू कर दिया था, और स्कूल छोड़ने के बाद मैंने किएव विश्वविद्यालय मे पत्रकारिता विभाग में अध्ययन किया। स्नातक बनने के बाद मैंने कुछ समय तक मोलोदाया उक्रेइना अखबार मे काम किया और फिर एक युवा मासिक पत्र मे। मैं कविता की तीन पुस्तकें प्रकाशित कर चुका हूं। अभी हाल मे साहित्य मे नवागंतुकों का काफी बड़ी संख्या में आगमन हुआ है। उदाहरण के लिए, स्वेतलाना योवेन्को, जो यहां मौजूद हैं, इस नयी पीढ़ी

की हैं। उनकी कृति निजी और नागरिक विषयों का सुखद समन्वय है। हमारे युवा साहित्य का एक लाक्षणिक गुण है जीवन और घटनाओं के प्रति उसकी प्रबल संवेदनशीलता।"

,, एक अन्य कवि पावेल अलेक्सांद्रोव ने कहा : "मैंने पहली कविता तब लिखी थी जब मैं सेकेंडरी स्कूल मे था। उसके बाद मैं जल सेना मे शामिल हो गया और समुद्र ने मुझे पूर्णतः मोहित कर लिया तथा मेरा व्यसन बन गया। मेरी कविताएं समुद्र के बारे में, नाविकों की दोस्ती के बारे मे हैं और पत्रिकाओं तथा अखबारों मे प्रकाशित हुई हैं।"

आबखाजियाई स्वायत्त सोवियत समाजवादी गणराज्य के व्लादिमिर अंकवाव ने कहा : "आबखाजियाई एक बहुत पुरानी कौम है. जिसका साहित्य इतना नया है कि वस्तुतः वह सोवियत सत्ता के अधीन ही विकसित हुआ है। आज आबखाजियाई उपन्यासकारों और कवियों की पुस्तकें किसी भी संघीय गणराज्यों में पायी जा सकती हैं। हम, नौजवान लेखकों के पास अपने व्यावसायिक हुनर और जीवन की सही समझदारी के मामले में अनुकरणीय आदर्श हैं। हमारे आसपास हो रही घटनाएं जबर्दस्त महत्व रखती हैं, जिनसे दुनिया की पुनर्रचना, जनता के पुनर्निर्माण और कम्युनिस्ट आदर्शों वाले नये मानव को आकार देने के कार्य जुड़े है। लेखकों का उदात्त और महत्वपूर्ण कर्तव्य है इन जटिल सामाजिक घटनाओं को प्रतिबिंबित करना। हमारी पुस्तकें जनता को शिक्षित करने मे, उनके मन मे करुणा, मानवीयता, देशभक्ति और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की स्थापना करने मे उपयोगी होनी चाहिए।"

लेखक संघ

लेखकों और अन्य क्षेत्र के कलाकारों की संघीय तथा संभागीय स्तरों पर अपनी यूनियनें हैं। वे समय-समय पर अपनी समस्याओं और सदर्भों पर विचार-विमर्श के लिए सम्मेलन करते है। अखिल-संघीय लेखक संघ में लगभग ६,००० सदस्य है। प्रत्येक प्रकाशन गृह अपने लाभ का एक अच्छा-खासा हिस्सा संघ के "साहित्य कोष" को देता है। किसी भी जरूरतमंद लेखक को इस कोष से पर्याप्त इमदाद मिल जाती है। इसके अलावा, संघ के आरामदेह विश्राम गृह शांत स्थानों मे बने हुए हैं जहा लेखक स्वास्थ्य-लाभ के लिए अथवा अपना काम करने के लिए जा सकते हैं।

सोवियत सघ के लेखक भावना और विचारधारा, दोनों रूपों मे अपने समाज से गहन रूप मे जुड़े है। इसीलिए जब हिटलर का हमला इस देश पर हुआ, तो उनमे से हजार से भी अधिक लोग सैनिकों की वर्दी धारण करके युद्ध के मैदान मे जा पहुंचे। इन सैनिकों में शोलोखोव, अलेक्सेइ तोलस्तोय,

अलेक्सांदर फादेयेव और इल्या एहरेनबुर्ग थे। उनमें से एक-तिहाई से भी अधिक युद्ध से वापस नहीं लौटे। लड़ते हुए मारे गये अनेक लेखकों के नाम केन्द्रीय लेखक क्लब, मास्को के प्रवेश द्वार पर संगमर्मर की शिला पर स्वर्णाक्षरों में खुदे हुए हैं। संघीय गणराज्यों के लेखक क्लबों में भी ऐसे शिलालेख हैं। लगभग ३,००० साहित्यिक जनों को सैनिक उपाधियों और पदकों से विभूषित किया गया था तथा कुछेक को सोवियत संघ के वीर का उच्च अलंकरण भी मिला था।

साहित्य

साहित्य के मर्मज्ञ और प्रोफेसर डा. ई. चेलीशेव से मैंने इस पुस्तक के मुख्य विषय पर मास्को में बातचीत की थी। उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि मैं अपनी पुस्तक के एक अध्याय में मानव संबंधी उस अवधारणा के विकास की रूपरेखा दूं जो सोवियत जनों को १९वीं सदी के मानवतावादी रूसी लेखकों से प्राप्त हुई थी और क्रान्ति के पश्चात अनेक दशकों में वह आगे विकसित हुई। मैंने प्रोफेसर को धन्यवाद दिया और इस प्रस्ताव का स्वागत किया, क्योंकि मैं इस पर सहमत था कि सोवियत जीवन का—इसके संघर्षों तथा बलिदानों, उपलब्धियों, आशाओं और आकांक्षाओं का—सर्वोत्तम प्रतिफलन इसके साहित्य में ही हुआ है।

सोवियत संघ में साहित्य और कला एक निरंतर प्रवाह तथा पुनर्नवीकरण की अनवरत स्थिति में है। ऐसी शाश्वत विषयवस्तुओं के साथ-साथ, जिनका आकर्षण कभी भी खत्म नहीं होता, कलाकारों की प्रत्येक नयी पीढ़ी आधुनिक और समसामयिक विषयवस्तुओं से निबटने की तथा वर्तमान समय की आत्मा के व्याख्याकार के रूप में सामने आने की चेष्टा कर रही है। हालांकि सोवियत लेखक एक आम लक्ष्य के लिए ऐक्यबद्ध हैं, मगर शैली, रूप और अंतर्वस्तु का उनकी साहित्यिक कृतियों में वैविध्य मिलता है। यह बात प्रख्यात लेखकों और नये, अपेक्षाकृत कम प्रख्यात लेखकों, दोनों की रचनाओं से स्पष्ट है।

निकोलाई आस्त्रोव्स्की की पुस्तक अग्नि-दीक्षा अत्यंत लोकप्रिय पुस्तकों में से एक है। अब तक यह ४६५ बार छप चुकी है और इसकी १६० लाख प्रतियां बिक चुकी हैं। यह एक आत्मकथात्मक उपन्यास है—सोवियत मानव का, उसके अदम्य साहस और संकल्प का, एक "साहित्यिक स्मारक" है। लेखक की मृत्यु ३२ वर्ष की आयु में, क्रान्तिकारी के एक संक्षिप्त मगर सक्रिय जीवन के बाद, १९३६ में हो गयी थी। जब वह बिस्तर से लगा हुआ और जीवन के अंतिम आठ वर्षों में नेत्रहीन था, उसने समाजवाद के ध्येय के हेतु अपने नवीन लेखन-कार्य के रूप में इस पुस्तक का प्रणयन शुरू किया। अडिग संग्राम के एक

ख्यातिप्राप्त लेखक निकोलाई आस्त्रोव्स्की.

क्षण में इस पुस्तक का नायक पावेल कोर्चागिन कहता है : "मनुष्य का सबसे प्रिय स्वत्व जीवन है, और यह उसे केवल एक बार जीने के लिए मिलता है। उसे ऐसे जीना चाहिए कि उसे निरुद्देश्य वर्षों का यन्त्रणादायक पश्चाताप न करना पड़े, एक तुच्छ और क्षुद्र अतीत की धधकती शर्म उसे महसूस न करनी पड़े; इस तरह जिये कि, मरते समय, वह कह सके : मेरी सारी जिन्दगी, मेरी सारी ताकत दुनिया के उत्कृष्टतम ध्येय को समर्पित रही—मानवजाति की मुक्ति के लिए संग्राम को !"

धीरे बहे दोन रे, अपने घर-सागर की ओर दोन, और अछूती धरती का उद्धार नामक अपने महाकाव्यों से शोलोखोव को विश्व ख्याति मिली है। उनकी बाद की कृति इंसान का नसीबा भी अपनी मार्मिक अपील के कारण प्रायः उसी प्रकार लोकप्रिय हो गयी है। इसमें एक रूसी सैनिक की कहानी है, जिस पर विपत्तियों के पहाड़ इस कदर गिरते जाते हैं कि बलिष्ठतम मनुष्य भी उससे टूट जाय। मगर वह तमाम विपदाओं को झेलने की ताकत पा जाता है। वह फासिस्ट बंदीगृह के दुःस्वप्न से गुजरता है, उसका परिवार नष्ट हो जाता है (पुत्र की मृत्यु बर्लिन पर लाल सेना की चढ़ाई के समय होती है)। दुःख उसे वृद्ध कर देता है मगर मनुष्यों के लिए उसके प्रेमभाव को कठोर नहीं बना पाता, उसे छुड़वा नहीं पाता। वह अपने जैसे ही एक और एकाकी प्राणी को—युद्ध में अनाथ हुए एक शिशु को—अपना लेता है। उसकी जिंदगी फिर से शुरू होती है। वे दोनों साथ-साथ चलते हैं।

मकारेंको की पुस्तक जीवन की ओर उल्लेख्य ग्रंथ है। यह सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री १९२० से ८ वर्ष तक बेघर बच्चों की एक बस्ती के सगठन और संचालन में लगा रहा था। तीन खंडों में इस पुस्तक के लिखने में १० वर्ष लग गये। यह वास्तविक अनुभवों पर आधारित है। यह आख्यान मानव में अंतर्निहित अपार शक्तियों और क्षमताओं का उद्घाटन करता है। यह दिखाता है कि समाजवादी परिस्थितियों में नौजवानों का जीवन किस प्रकार रूपांतरित हो जाता है, जनकल्याण के आनंददायक कार्य के माध्यम से किस प्रकार "ऊर्ध्वमुखी आत्मा आगे और आगे बढ़ती जाती है, ऊंचे और ऊंचे उठती जाती है।"

चगेज आइत्मातोव नामक किरगिज लेखक का पहला उपन्यास जमीला व्यापक रूप से सराहा गया। इसका अनुवाद सभी रूसी भाषाओं में हो चुका है और इस पर फिल्म भी बन चुकी है। मध्य एशिया उत्तप्त मैदानों (स्टेपीज) के परिवेश में, तारों भरे आकाश-तले, दिन भर के कठिन परिश्रम के बाद दो संवेदनशील आत्माएं साथ-साथ विचरण करती हैं। उनमें से एक जीवन के आनंद और अपने देश के सौंदर्य का गान करता है। लड़की जमीला सुनती है, सिर हिलाती है और सहमत होती है। दोनों को महसूस होता है कि

उनकी आत्मा एक है और वे एक-दूसरे का हाथ थाम कर आगे के रास्ते पर बाहों मे बाहें डाले बढ़ने लगते है—उनका एकाकीपन दूर हो जाता है ।

सोवियत लेखकों की क्लासिक समझी जाने वाली कृतियों में उल्लेख्य ये हैं : द्मित्री फर्मानोव का उपन्यास चापायेव, जो क्रांति तथा गृहयुद्ध के एक शूरवीर नायक के बारे में है; अलेक्सांदर सेराफिमोविच की लौह ज्वार; अलेक्सांदर फादेयेव की पराजय, जो गृहयुद्ध के बारे में है; फ्योदोर ग्लादकोव की सीमेंट, जो क्रान्ति के बाद के प्रथम वर्षों पर है; अलेक्सेई तोलस्तोय की अग्नि-परीक्षा (१९२१-४१), जो महान क्रान्तिकारी उथल-पुथल की एक कलात्मक व्याख्या है; और फदेयेव की तरुण गार्ड, जो उन युवा सोवियत देशभक्तों के बारे मे है जिन्होने अपनी मातृभूमि के नाजी-अधिकृत भूमि के फासिस्टों के खिलाफ पराक्रम युक्त युद्ध किया था ।

नायक

इन सभी कृतियों मे प्रत्येक लेखक अपने नायक की सृष्टि अपने सचित जीवन-अनुभव के मानव के अपने आदर्श के प्रकाश मे व्याख्या के साथ करता है । सोवियत लेखक नये मानव का प्रतिनिधित्व करने वाले सकारात्मक नायकों की सृष्टि की जरूरत को स्वीकार करते हैं जो अपने आदर्श से लाखों लोगो को अनुप्राणित करें । उन्होने पुराने जमाने के उस साहित्य से संबंध तोड़ लिये हैं जो राजाओं और रानियो के, संतों और दुष्टों के—केवल ऊपरी तबके के चंद लोगों के क्रियाकलाप का वर्णन करता था, तथा उनके बारे में चुप रहता था जो अपना सारा जीवन श्रम करते हुए गुजार देते थे और अंत में विलीन हो जाते थे । सोवियत पुस्तकों मे नायक धरती का पुत्र होता है, मजदूर या किसान या कोई लालसेना का सैनिक या कोई सामान्य बुद्धिजीवी ।

धीरे बहे दोन रे में प्रमुख चरित्र एक सीधा सादा किसान है जिसने किसी विश्वविद्यालय में कोई अध्ययन नही किया है । उसका किसी पांडित्य का दावा नही है पर उसके बारे मे सबसे मार्के की बात यह है कि वह उदात्त और सौंदर्य की ओर बढ रहा है, तथा उसमें देदीप्यमान नैतिक गुण हैं ।

अछूती धरती का उद्धार मे शोलोखोव ने उसी टाइप का नायक दावीदोव पेश किया है, जो ग्राम्य क्षेत्र मे समाजवादी क्रान्ति के ध्येय के प्रति अपार निष्ठा रखने वाला, एक सामूहिक फार्म का अध्यक्ष है । इसी विषय पर लिखते हुए विल लिपातोव ने, जो विख्यात लेखक और गोर्की साहित्य संस्थान में प्राध्यापक हैं, कहा है : "सकारात्मक नायक की समस्या के बारे में रूस के लेखकों की राय से मैं पूर्णतः सहमत हूं । मुझे ड्राइवर, आम मजदूरों, लकड़हारों, और ट्रैक्टर ड्राइवरों में सैकड़ों ऐसे लोग मिलते हैं जो अनुकरणीय सौंदयपरक

तथा सामाजिक नमूने बन सकते हैं, हालांकि साहित्य अपने लिए यह कर्तव्य नहीं निर्धारित करता है कि वह इस सिद्धांत की वकालत करे, 'मेरी तरह चलो !' जब मैं अपने नायकों की बात करता हूं तो मेरे दिमाग में उनके वे उच्च नैतिक मानदंड होते हैं जिन्हें किसी भी व्यापक रूप से परिकल्पित सकारात्मक नायक के आधार के रूप मे प्रयुक्त किया जा सकता है।"

समाजवादी यथार्थवाद, जिसका एक सकारात्मक पहलू नायक की यह अवधारणा है, कुछेक नकारात्मक पहलुओं का विरोध करता है। यह मनुष्य को अमानवीय बनाने का कट्टर विरोधी है, जोकि पूंजीवादी देशों की कई कृतियों में देखने को मिलता है। सोवियत लेखक कहते हैं कि पश्चिमी देशों के काफी सारे लेखकों का, खासकर अमरीका में, क्रूरता का सम्प्रदाय रचना, लंपटता और अनास्था का उपदेश देना, तथा नैतिकता का तिरस्कार करके जीवन मे सफलता पाने वाले मनुष्यों की मोहक तस्वीरें पेश करना जोकि बुरे ढंग से प्राप्त पैसे के बल पर सेक्स और निम्नकोटि के आनंदों में लीन रहते हैं, ऐसा चित्रण निश्चित रूप से गलत, तथा मानवता के लिए नुकसानदेह है।

बहुराष्ट्रीय साहित्य

सोवियत साहित्य का एक महत्वपूर्ण गुण है इसका बहुराष्ट्रीय स्वरूप। सोवियत साहित्य केवल रूसी भाषा का साहित्य नही है; यह एक अखिल-संघीय साहित्य है जिसमें, अपनी-अपनी राष्ट्रीय पहचान लुप्त किये बगैर, विभिन्न कौमो और राष्ट्रीयताओं वाले बीसियों साहित्य समाहित हैं जो सोवियत संघ में रहते हैं। अब सोवियत साहित्य, सोवियत संघ के जनगणों की ६० से अधिक भाषाओ मे रचा और छापा जाता है। लगभग प्रत्येक सोवियत राष्ट्रीयता की अब अपनी साहित्यिक विभूतिया है और उनके नामों से सभी सोवितत पाठक परिचित हैं क्योंकि उनकी कृतियां न केवल मूल भाषाओं मे, बल्कि रूसी में भी छपती हैं। सोवियत साहित्य में इस समय दो समानातर प्रक्रियाए घटित हो रही है, जो विषयवस्तु और पद्धति के द्वारा ऐक्यबद्ध हैं और रूप मे बहुराष्ट्रीय हैं। एक ओर राष्ट्रीय परंपराओं का पुनरुत्थान और नवीकरण हो रहा है, तथा दूसरी ओर, विभिन्न राष्ट्रीय साहित्यों के बीच क्रिया-प्रतिक्रिया, पारस्परिक प्रभाव और पारस्परिक समृद्धि, आम विचारों तथा आम लक्ष्यों के आधार पर उनका समीकरण हो रहा है। सोवियत जनों का विश्वास है कि देशीय भूमि में जड़ों के बिना कोई भी कला और संस्कृति विकसित नही हो सकती। अतएव प्रत्येक राष्ट्रीय संस्कृति का व्यक्तित्व कायम रखा जाना चाहिए, और लोक कलाएं जो लोगों के जीवन को अत्यंत उदात्त और नाजुक रूप में प्रतिबिंबित करती हैं, उन्हें संरक्षण मिलना चाहिए।

क्रान्ति से पहले, रूस की छोटी-छोटी कौमों का अपना एक भी पेशेवर लेखक नहीं था। अब वहां ५०० से अधिक लेखक ६३ भाषाओं मे लिख रहे हैं। देश के अनेक सीमावर्ती क्षेत्रों की जनता को यह कल्पना भी न थी कि उनकी भाषा को वर्णमाला के संकेतों से व्यक्त भी किया जा सकता है। १९१७ के बाद से सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान इन लोगों को अपनी लिखित भाषा ही नहीं, *अपना साहित्य भी मिला है। तूवा भाषा में (आबादी एक लाख)* सोवियत सत्ता के वर्षों में अब तक १,३६२ पुस्तकें छपी हैं, जिनकी ५५ लाख प्रतियां बिकी हैं। चुकची भाषा बोलने वाले केवल ११,००० लोग हैं, पर वहां २७७ पुस्तकें छपी हैं। पिछले ४० वर्षों में चेचेन, लाक्स, लेजगिन और कबार्डियन भाषाओं के साहित्य के रूप मे, जो लगभग केवल १० लाख काकेशियाई लोग बोलते हैं, ७,००० पुस्तकों की २.२५ करोड़ प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

अनेक प्रतिभावान लोक-कथा गायकों को, जिन्होंने इन जनगणों के साहित्य की नींव रखी है, और जिन्हें क्रान्ति के पश्चात ही अपनी वर्णमाला मिली है, अपने इलाकों में सोवियत सत्ता की स्थापना के बाद ही साहित्यिक नाम कमा सके। इन जनगणों के साहित्य का परिमाण और सफलता सचमुच विस्मयकारी है। इन नये आगतुकों द्वारा जो साहित्य विकसित हो रहा है वह बृहत्तर क्षेत्रों की साहित्यिक कृतियों के कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। एक बश्कीर कवि (कुल आबादी लगभग दस लाख) लिखता है : "मेरा यही क्रीडो (सिद्धांत) है—मेरी राष्ट्रीय बांसुरी सभी के लिए गाये, समस्त सागरों, पर्वतों और मैदानों के रागों को *आत्मसात करे।*"

आगे वह कहता है :

"कहने की जरूरत नहीं है कि प्रत्येक राष्ट्रीय साहित्य अपनी राष्ट्रीय लोकगाथा से विकसित होता है। लेकिन लोक परंपराओं का नये कलात्मक आविष्कारों, उपलब्धियों और अन्वेषण से अच्छा समन्वय तथा अन्य लोगों के अनुभव को आत्मसात करने पर ही किसी साहित्य का विकास और समृद्धि सुनिश्चित होती है तथा विचारधारात्मक और कलात्मक सुधार होता है। किसी बच्चे की अपनी अटपटी रेखाकृति उसे किसी सच्चे उस्ताद के चित्र से भी ज्यादा आनन्द देती है। हम बश्कीर, जिन्होंने केवल ४०-५० वर्ष पहले साक्षरता पायी है, अपने राष्ट्रीय साहित्य से आह्लादित हुए थे क्योंकि वह हमारा अपना था, हमारी अपनी देशी भाषा में लिखा गया था, और हमने स्वयं उसे लिखा था, भले ही वह कितना ही आदिम क्यों न रहा हो। यह स्वाभाविक ही था कि हमारी राष्ट्रीय स्वचेतना के विकास में यह दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण रोल अदा करता। ज्यों-ज्यों समय बीता, बश्कीरों ने समकालीन

विज्ञान और विश्व संस्कृति के बारे में अधिकाधिक सोचा। अब वे दांते और पुश्किन, गेटे और टैगोर, ह्यूगो और शेक्सपियर को पढ़ते हैं। वे विश्व के श्रेष्ठ लेखकों के नाटक देखने प्रेक्षागृह जाने लगे हैं, उन्होंने बीथोवन, चायकोव्स्की और वर्दी के संगीत को सराहा तथा समझा है। हमारे पाठकों की सौंदर्यपरक मांगे बढ़ी हैं और उनके सौंदर्यपरक क्षितिज विस्तृत हुए हैं। इसके अलावा, उन्होने न केवल अपनी राष्ट्रीय कला की समस्याओं, और राष्ट्रीय समस्याओं मे दिलचस्पी लेनी शुरू की है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं में भी, इस सदी की समस्याओं में भी, जिनका हल वे उन्हें दी जाने वाली कला और साहित्य की कृतियों में पाना चाहते हैं।"

रसूल गमजातोव नामक एक अन्य लेखक ने अपनी राय जाहिर करते हुए कहा है :

"किसी भी लेखक की क्षमता का निर्धारण उसके विचार, प्रतिभा, प्रेरणा और कुशलता से होता है। जो व्यक्ति राष्ट्रीय रंगों को गाढ़ा करता है, विशिष्ट चीज को रेखांकित करता है और राष्ट्रीय कला की कृति के रूप में एक बेहद मिर्च वाली मसालेदार चीज पेश करता है, वह कलाकार नहीं। कविता की लौ वहीं जलती है जहां राष्ट्रीय तत्व सार्वभौम हो जाता है। क्या इब्सन की महानता उसके जनगण के किन्ही विशेष लक्षणों के कारण है? या उमर खैयाम को लीजिये? राष्ट्रीय तत्व कलाकार को सृजनात्मकता का महान आनन्द देता है, जबकि राष्ट्रवादी व्यक्ति अपने भीतर एक संकीर्णता, कंजूसी, अन्य लोगों के प्रति अनादर भाव पैदा कर लेता है।"

सोवियत साहित्य न केवल बहुराष्ट्रीय है, बल्कि एक खास अर्थ मे वह अंतर्राष्ट्रीय भी है। क्रान्ति के बाद के आरंभिक दिनों में इस पर बहसें हुई थी कि नयी हुकूमत की कला और साहित्य किस दिशा में आगे बढ़ेंगे। बहुमत के विचार को वाणी देते हुए लेनिन ने लिखा था कि मजदूर वर्ग का ऐतिहासिक कर्तव्य किसी विशेष सर्वहारा संस्कृति की खोज करना नहीं, बल्कि मौजूदा संस्कृति के सर्वोत्तम आदर्शों, परंपराओं और निष्कर्षों को मार्क्सवाद के आधार पर आगे ले जाना है। उन्होंने जोर दिया कि कोई भी व्यक्ति सच्चा कम्युनिस्ट तभी होगा जब वह अपनी स्मृति को उस समस्त ज्ञान से समृद्ध करे जो मानवता ने संचित किया है। विरासत को अपनाने का अर्थ यह नहीं कि उसके चुनाव में और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रयोग मे तटस्थता बरती जाय। अतीत की संस्कृति का दाय स्वीकारने का अर्थ, लेनिन के अनुसार, यह है कि उन सभी चीजों को काट फेंका जाय जो सनही, प्रतिक्रियावादी, राष्ट्र-विरोधी हैं, और समाजवादी रचना की सेवा में उस हर चीज को लगा दिया जाय जो मूल्यवान, पुख्ता और जनवादी है।

इन्हीं विचारों की प्रतिध्वनि सोवियत संस्कृति मंत्री येकातेरिना फुर्तसेवा के एक ताजे प्रेस इंटरव्यू में मिलती है। वह कहती हैं:

"हमारे कलाकार जीवन से निरंतर सीखते रहते हैं, और वे देशी तथा विश्व की यथार्थवादी कला के सर्वोत्तम नमूनों पर पालित-पोषित हुए हैं। आडंबरपूर्ण कलात्मक समाधान उनके लिए उसी तरह अग्राह्य है जिस तरह कि दुर्बोध तकनीकी और शैलीगत युक्तियां, प्रश्न के लिए प्रश्न करना तथा यथार्थ का निष्क्रिय चिंतनपरक अनुकरण करना।"

कवि

इन विचारों के प्रति निष्ठा अनेक युवा कवियों के कृतित्व मे दृष्टिगत होती है। सोवियत समाज का एक चमत्कारी गुण यह है कि लोग बड़ी संख्या मे एकत्र होकर अपने कवियों के मुंह से कविताए सुनते हैं। जब खेलकूद प्रासाद मास्को जैसे बड़े-बड़े हाल में, जिनमें १८,००० दर्शक बैठ सकते है, ऐसे कार्यक्रम आयोजित होते हैं, तो एक भी सीट खाली नहीं रहती। कविगण अपनी तरुणाई-भरी ताजगी और आवेग अपनी पक्तियो में व्यक्त करते है तथा दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। युवा लेखकों के पांचवे सम्मेलन में पिछले वर्ष अनेक कवियों ने अपनी कविताएं पढ़ी थी, जिनमे ये भी थी:

जैसे सागर सागर-सा होता है, लोग लोगों जैसे होते है—
देखो—सतह पर मनुष्यों की केवल आत्माएं एक-सी दीखती हैं,
मगर उनकी गहराई में, आवेग में, आकांक्षा और भाव में,
विस्तार, संवेदनशीलता, उष्णता, जोश, पसंद-नापसंद में
अंतर होता है।

—रूडोल्फ रिमेल (एस्तोनिया, बाल्टिक तट से)।

झूम-झूम कर गाओ, चारण!
कोई बंधन नहीं यहां।
खेल नहीं है यह जहां गेंदें फेंकी जाती है।
मनुष्य तो आकाश गंगा है, और अनेक
और विविध हैं उसके रहस्य-लोक।
पसीना बहाते रहो अपनी शक्तियों को
बेकार न बैठने दो, झूमो और गाओ
और ठंडे मत बनो, आवेगहीन मत बनो।
कवि, जितनी कठिन होगी यंत्रणा तुम्हारी,
तुम्हारी लौ भी उज्ज्वलतर, उष्णतर होगी।

—गेन्नादी याकुशेंको (रूसी संघ के ताम्बोव नगर से)

युवा कवि व्लादिमिर सोकोलोव ने, जिसे एक सर्वोत्तम समसामयिक रूसी कवि माना जाता है, एक प्रेस-इंटरव्यू में कहा था :

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं किसके बारे में लिख रहा हूं, फूलों के बारे में या ड्रेन-पाइप (पेंट) के बारे में, मैं दरअसल प्रेम के बारे में लिखता होता हूं। क्योंकि जब कभी प्रेम या उचित सम्मोहन पैदा होता है, लोग तत्काल इस भावना को झूठ से, गंदगी से, बचाने के लिए बढ़ते हैं और उस हर चीज को ऊपर उठाते हैं जो मनुष्य में सचमुच मानवीय होती है। मैं छोटी कविताएं ज्यादा पसंद करता हूं। जब आप प्रेम की घोषणा करते हैं, आपको कभी भी पर्याप्त शब्द नहीं मिलते और पंक्तियों के बीच में तथा शब्दों के बीच में हमेशा बहुत कुछ पढ़ा जा सकता है। मैं कविता में सनातन सत्यों को पुष्ट करना चाहता हूं ताकि ये सत्य कभी भी अपना मूल्य न खोयें, ताकि नैतिक ईमानदारी और खरापन सामान्यता और तुच्छता पर विजयी हो।"

इसी प्रकार का विचार एक लेखक कांग्रेस में कवि वासिली फ्योदोरोव ने व्यक्त किया था। उन्होंने कहा था : "जो व्यक्ति अपने खुद के लोगों को प्यार नहीं करता और उन्हें नहीं समझता, वह अन्य लोगों का प्यार, उनकी संस्कृति, बेहतर भविष्य के लिए उनके संघर्ष को कभी नहीं समझ सकेगा।"

जी. सेरेब्रियाकोव नामक एक साहित्य-आलोचक ने आज की प्रवृत्तियों का मूल्यांकन करते हुए लिखा है :

"हमारे जमाने की तेज गति जाहिर है। आधुनिक मनुष्य सामाजिक घटनाओं के एक तेज प्रवाह, एक वात्याचक्र में, तूफानी राजनीतिक जीवन और विज्ञान तथा इंजीनियरी की अपूर्व उपलब्धियों के प्रवाह और वात्याचक्र में जीता है। हमारी युवा कविता में हमारे जमाने का प्रतीक गति बन गयी है, जो हाल की घटना है। और इसलिए हमने अपनी कविताओं में घनघनाते स्कूटर और घड़घड़ाती मोटरसाइकिलें ठोस सुपर-राजमार्गों पर चलते सुनीं; अल्युमीनियम के हवाई जहाज सन्नाटा तोड़ते हुए व्योम में उड़ान भरते हुए सुन पड़ते हैं और देश तथा महाद्वीप मानो एक कैलीडोस्कोप में प्रकट और लुप्त होते दीखते हैं। बहुत कम समय बीता और अचानक ही यह प्रकट हुआ कि जिन कवियों ने अपना ध्येयवाक्य गति को बना लिया था वे साहित्यिक विकासों में पृष्ठभूमि में चले गये। उनकी जगह युवा कवियों की आत्मविश्वासी और वर्धमान तथा बलदायक टुकड़ी आ गयी, जिनमें जीवन के प्रति एक हड़बड़ी से रहित तथा विचारपूर्ण दृष्टिकोण था, जिनमें देश के इतिहास और जनता द्वारा सर्जित सांस्कृतिक समृद्धि के भीतर पैठने की दृष्टि थी, जिनमें चीजों तथा घटनाओं के सारतत्व तक पहुंचने की आकांक्षा थी, और जिनमें इन मानदंडों का स्पष्ट विवेक था, जैसे कविता में सामाजिकता का गुण तथा

जनता की वह किस प्रकार सेवा करे यह... [illegible], मानव सुख की खोज—ऐसा है वह मुख्य पथ जिस पर युवा [illegible] की कविता आज घटनाओं के ज्वलंत प्रवाह में होकर, हमारे जमाने की त्वरित गतिशीलता में से होकर, गुजर रही है।"

पुस्तकें

सोवियत संघ में संस्कृति के क्षेत्र में पुस्तकों का स्थान एक जबर्दस्त शिक्षाप्रद शक्ति के रूप में सबसे पहले आता है। मनुष्य के बचपन से बुढ़ापे तक वे साथियों, सलाहकारों और मित्रों की भांति साथ रहती है। यूनेस्को के आकड़ों के अनुसार सोवियत संघ पुस्तक उत्पादन और अनुवाद में अनुपम है। आज दुनिया में प्रत्येक चौथी पुस्तक सोवियत पुस्तक होती है। पिछले पांच दशकों में २० लाख से ज्यादा पुस्तकें तीन हजार करोड़ प्रतियों में छप चुकी हैं। ये पुस्तकें १४३ भाषाओं में थी—८९ भाषाएं सोवियत संघ की और ५४ भाषाएं विदेशियों की। हजारों नयी पुस्तकें हर वर्ष प्रकाशित होती हैं—१०० करोड़ प्रतियों से भी ज्यादा के संस्करण में। प्रत्येक नागरिक के लिए प्रति वर्ष ६ पुस्तकें छपती हैं, और प्रतिदिन तीस लाख से ज्यादा प्रतियां बिकती हैं।

२३० लाख, और शेक्सपियर की २८ भाषाओं में ६५ लाख प्रतियां बिक चुकी हैं। एक वर्ष में ही ह्यूगो की कृतियों की ७५ लाख प्रतियां बिक गयी थी।

भारतीय लेखकों के बारे में विवरण जानकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने देखा कि हमारी विरासत और हमारे लेखकों का अपार सम्मान तथा प्रेम वहां होता है। रवीन्द्रनाथ अपने विश्व मानव तथा मानवतावाद के विचारों के कारण सबसे अधिक लोकप्रिय है। उनकी कृतियों की २२ भाषाओं और १३५ सस्करणों में कुल ५० लाख प्रतिया बिक चुकी हैं। छठे दशक में जब उनकी कृतियों का पहला खंड निकला तो उसकी ६० हजार प्रतियां छपी थीं, जो ३ या ४ दिन में बिक गयी। पिछले २० वर्षों में भारतीय लेखको की कोई ७०० पुस्तकें ३४ भाषाओं में २५० लाख प्रतियों में प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तकों में उपनिषद, भगवद्गीता, पंचतंत्र, हितोपदेश, महाभारत, रामायण, कालिदास की कृतियां, बंकिमचंद्र, शरत्चंद्र, प्रेमचंद की कृतियां, वल्लतोल, श्री श्री, सुमित्रानंदन पत, अमृता प्रीतम और अली सरदार जाफरी की कविताएं, और आर. के. नारायण, भवानी भट्टाचार्य तथा यशपाल, मुल्कराज आनंद, कृश्न चन्दर, ख्वाजा अहमद अब्बास और सज्जाद जहीर जैसे प्रगतिशील लेखकों की पुस्तकें छप चुकी हैं। महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू की कृतियो के अनेक सस्करण छप चुके हैं। एक आधुनिक पौर्वात्य सीरीज में पूर्व के विकासशील देशों के साहित्य के सकलन प्रकाशित होते हैं। इस सीरीज की २३ पुस्तकों मे हाल मे दो भारतीय पुस्तकें भी जुड़ी हैं—हिन्दी और दूसरी बंगला की कहानियों की। एक अन्य दस खंडीय सीरीज मे विश्व साहित्य के इतिहास का विवेचन है।

बच्चो के लिए सभी भाषाओ में पुस्तके छापी जाती हैं। मलयाश (नन्हे-मुन्ने) और बच्चों का साहित्य अग्रगण्य प्रकाशक हैं। १९६८ मे उन्होंने बच्चो के लिए १८ करोड़ से ज्यादा पुस्तक-प्रतिया प्रकाशित की थी। विश्व साहित्य में जो कुछ श्रेष्ठ है उसे छापने का हमेशा प्रयत्न किया जाता है। हान्स एण्डरसन की परीकथाओं की २९ लाख प्रतिया छप चुकी हैं। साहित्य के स्कूली पाठ्य-क्रमों में लड़कों और लड़कियों को विश्व की उत्कृष्ट कृतियों से परिचित कराया जाता है। इन्हें प्रकाशक निरंतर प्रकाशित करते रहे हैं। बच्चो को पुस्तकों का बहुत शौक है और प्रायः उनके घरो मे उनका अपना एक छोटा-सा पुस्त-कालय का कोना रहता है।

पुस्तकों के निजी प्रकाशक यहा कोई नही हैं। प्रकाशन गृह ट्रेड यूनियनों, कम्युनिस्ट पार्टी, कोम्सोमोल, नोवोस्ती प्रेस एजेंसी और अन्य सार्वजनिक सगठनों के संरक्षण में कार्य करते हैं, जिनमें से प्रत्येक का कोई विशेष विषय होता है। धार्मिक समाज अपना खुद का साहित्य प्रकाशित करते हैं। सरकारी

प्रकाशन गृह भी वहां है। कुल दो सो से अधिक प्रकाशक हैं। लेखक को पुस्तकों के आकार, संस्करण और विषयों के अनुसार रायल्टी दी जाती है। छपी हुई पुस्तकें बेहद सस्ती हैं। पाठ्यपुस्तकों की औसत कीमत २६ कोपेक है, कृषि संबंधी पुस्तकों की २७ कोपेक, कथाकृतियों की ४० कोपेक और वैज्ञानिक पुस्तकों की ५२ कोपेक। जब २५ रूबल से अधिक की पुस्तकें खरीदी जाती हैं तो किस्तों मे भी पैसा पटाया जा सकता है।

पुस्तकों की इस विशाल संख्या के विक्रय के लिए १३,००० दूकानें और ३१,००० पुस्तक-कियोस्क देश भर में फैले हैं। काम मे सहायता के लिए कारखानों में और अन्य स्थानों में 'लोक पुस्तक भंडार' हैं, जिन्हें संबद्ध इकाई के स्वयं सेवक कार्यकर्ता चलाते हैं। सहकारी संगठन भी किसानों को प्रति वर्ष ४० करोड़ पुस्तकें बेचते हैं, जोकि क्रान्ति-पूर्व रूस में छपने वाली कुल पुस्तकों से चौगुनी होती हैं।

मास्को-प्रवास के दौरान मैंने लगभग पूरा एक दिन दो बड़ी पुस्तकों की दूकानों और सड़क किनारे बनी कुछेक पुस्तक-स्टेंडों पर बिताया। मै पुस्तक-घर में, जो कालीनिन एवेन्यू में स्थित दो मंजिला आधुनिक इमारत है और सोवियत संघ की सबसे बड़ी पुस्तक दूकान समझी जाती है, चार घंटे घूमता रहा। विभिन्न वर्गीकृत हिस्सों में पुस्तकें करीने से प्रदर्शित थी। साहित्य मे मैंने चार्ल्स डिकेन्स के ३० खंडों को आकर्षक सजिल्द संस्करणों मे देखा। एमिल जोला के १८ खंड और अनातोल फ्रांस के ८ खंड थे। भारत का एक अलग खंड था। कला-खंड मे संगीत, बैले, संगीतकार, आर्केस्ट्रा और कंडक्टर इत्यादि के लिए अलग से उपखंड था। अनेक शेल्फों मे लेनिन की कृतियां भरी हुई थी। कोम्सोमोल युवकों और बच्चों के लिए अलग खंड थे। मुझे एक भी पुस्तक सस्ते यौन और अपराध विषयों वाली नही मिली, जोकि अमरीका से हमारे देश समेत समस्त दक्षिण-पूर्व एशिया के बाजार मे छा गयी हैं और अपरिपक्व नौजवानों के दिमाग में जहर घोलती हैं। मानव-विरोधी, क्रूरता, लंपटता और निजी जीवन पर संवेदनशून्य दृष्टि के पथ की शिक्षा देने वाली पुस्तकों के आयात की कोई गुंजाइश नही है। शो-विंडो में मुझे एक भी पुस्तक का आवरण ऐसा नहीं दिखा जिसमें भोंडी मुद्रा मे नंगे वक्ष या नितंब दिखाये गये हों। अश्लीलता पर पुस्तकें, फासिज्म और जातीय भेदभाव की हिमायती पुस्तकों पर प्रतिबंध है। मैंने वैज्ञानिक गल्प के बारे में पूछा तो पता लगा कि खेलकूद की पुस्तकों के साथ ये भी नौजवानों मे बहुत लोकप्रिय हैं, और अमरीकी 'थ्रिलर्स' के विपरीत, इनके कथानक मानवता के लिए विज्ञान की अपार रचनात्मक संभावनाओं के इर्द-गिर्द रचे जाते हैं। कम कीमत वाली पुस्तकों के बारे में भी मेरा कुछ अनुभव हुआ। मैंने १६ पुस्तकें अपने संदर्भ के

लिए खरीदी थीं और यह जानकर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि सेल्समैन ने मुझे केवल ६ रूबल और कुछ कोपेक का बिल दिया।

एहरेनबुर्ग ने एक बार कहा था : "हमारे सोवियत साहित्य में सबसे अधिक महत्व की बात इस या उस पुस्तक की सफलता नहीं, बल्कि यह तथ्य है कि हमने करोड़ों बुद्धिमान और सच्चे आस्वादक पाठक तैयार किये हैं।" यूनेस्को के आकड़ों के अनुसार, सबसे अधिक पढ़ाकू लोग सोवियत संघ में हैं। लोग सिर्फ फ़ुर्सत के घंटों में ही घरों में नहीं पढ़ते। वे हर जगह पढ़ते रहते हैं। मैंने देखा कि मेट्रो में यात्रा करते समय, छायापथों पर या पार्कों मे बेंच पर बैठे लोग पढ़ते रहते हैं। मैंने देखा कि अपने होटल में लिफ्टों पर तैनात लड़कियां और अन्य काम करती हुई लड़कियां अपने काम के बीच कुछ समय निकालकर पढ़ना शुरू कर देती हैं। पाठकों की रुचि सक्रिय है। वे प्रायः ही लेखक सम्मेलन कहलाने वाली सभाओं में शामिल होते हैं जो क्लबों पुस्तकालयों या स्कूलों मे होते रहते हैं और जहां नवीनतम पुस्तकों तथा उनके लेखकों के बारे में मुक्त रूप से बहस होती है।

पुस्तकालय और संग्रहालय

पुस्तकालय और संग्रहालय शिक्षण और प्रबोधन के आंदोलन के अंग के रूप में चलाये जाते हैं। सोवियत संघ मे ३,७७,००० पुस्तकालय हैं, जिनमें २५० करोड़ पुस्तकें हैं और ११.५ करोड़ सदस्य। सदस्यता की कोई फीस नहीं लगती। इसके अलावा ३,००,००० चलते-फिरते पुस्तकालय कारखानों, सहकारी और राजकीय फार्मों पर सारे देश में चलते हैं। ग्रामीण इलाकों में ८६,००० पुस्तकालय हैं जिनमें ५० करोड़ से अधिक पुस्तकें हैं। लगभग २०० करोड़ पुस्तकें प्रति वर्ष पढ़ने के लिए वहां से ली जाती है। सोवियत संघ मे प्रति नागरिक के पीछे १०० पुस्तकालयीन पुस्तकें है। जारशाही रूस में यह संख्या ६ थी, जबकि अमरीका में केवल ११।

मास्को मे लेनिन पुस्तकालय सोवियत संघ में सबसे बड़ा पुस्तकालय है। इसमें २४० लाख पुस्तकें है, २,५०० सीटों वाले २२ अध्ययन कक्ष है। इसमें प्रति दिन दस हजार पाठक आते हैं। मैं जब पुस्तकालय में गया तो मैंने देखा कि ट्रांसमिशन बेल्ट से पुस्तकें और अखबारों की फाइलें काफी संख्या वाले पाठकों के लिए आ रही थी। भारतीय खंड में मैंने देखा कि दुर्लभ पुस्तकों मे से एक थी अर्जुन के साथ कृष्ण का वार्तालाप जो चार्ल्स विलिकिन्स की एक कृति के १७८८ मे हुए रूसी अनुवाद के रूप मे रखी है। पूर्वी भारत की बोलियों का व्याकरण जो १८०१ मे प्रकाशित हुआ था, और महाभारत विराट पर्व रूसी में है। आम तौर पर मैंने पाया कि भारतीय भाषा की पुस्तकों में अनेक ग्रंथ

हमारे स्वातंत्र्य आंदोलन के बारे में है, पत्रिकाओं में बंगला दैनिक आनंद बाजार पत्रिका भी है। एक कमरे मे माइक्रोफिल्म पुस्तकों के अध्ययन की व्यवस्था है। वहां मैंने नाइजीरियन अकादमी के एक नौजवान सुमेआन ओमोतायो को देखा। वह अफ्रीकी भाषाओं की सरचना पर शोध कर रहा था। उसी के पास बैठा एक रूसी युवक एक "दुर्लभ" पुस्तक को पढ रहा था। उसने मुझे बताया कि वह सुदूर पूर्व में कार्यरत एक पत्रकार है। दुर्लभ पुस्तकों का पठन उसका शौक है, स्कूली दिनों से ही। मैंने अपने साथ आयी पुस्तकालय-गाइड से कहा कि नौजवानो की पढने की प्रवृत्तियो के बारे में, उनके विषयो के चयन आदि के बारे में मुझे आंकडे बतायें। उसने मुझे बताया कि पुस्तकालय के समाजशास्त्री से मुझे इस तरह की जानकारी मिल सकती है। लेकिन समय के अभाव के कारण मैं इस बात को पूरा नही कर पाया।

मास्को में एक अन्य बड़ा पुस्तकालय विदेशी साहित्य पुस्तकालय है जहां १२८ भाषाओं की चालीस लाख पुस्तकें हैं। सोवियत संघ के संग्रहालयों की संख्या लगभग १ हजार है। ये संग्रहालय क्रान्तिकारी संघर्ष, इतिहास, कला, रंगमंच, संगीत और प्राकृतिक विज्ञानों को समर्पित हैं। इन संग्रहालयों की यात्रा करना स्कूली शिक्षा का एक नियमित अग है।

प्रेस

अपने लक्ष्य, विषयवस्तु और रूपसज्जा के मामले में सोवियत प्रेस का अपना विशिष्ट स्वरूप है, जो पूंजीवादी देशों के प्रेस से भिन्न है, दसियों लाख की संख्या में बिकने वाले अखबार वस्तुत: ही आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के विशाल पैमाने पर संगठनकर्ता हैं। ५ मई को, सोवियत प्रेस दिवस, पर लिखते हुए एक प्रमुख पत्रकार लियोनिद रेचमेदिन ने कहा था :

"हमारे अखबार और पत्रिकाएं समाज के लिए मनुष्य के रचनात्मक श्रम, सार्वजनिक सम्पत्ति के संरक्षण तथा प्रसार की उसकी चिंता को, उसकी सामूहिक भावना और साथीवत सहयोग को, लोगों के बीच मानवीय संबंधों तथा परस्पर-रुझान को, परिवार और बच्चों के पालन-पोषण की चिंता को, तथा समस्त देशों के मेहनतकश लोगों और समस्त राष्ट्रों के साथ एकजुटता को अपार स्थान देते है। दूसरे शब्दों में, अखबार दिखाते हैं उस नये मानव को जिसे समाजवादी समाज ने निर्मित किया है, जिसके नैतिक सिद्धांत नये हैं जो मानववाद के ध्येय और मानव जाति की आम प्रगति की सेवा करते हैं।"

सोवियत समाचारपत्रो में कोई सनसनीखेज सेक्स अथवा अपराध खबरें, व्यक्तित्वों अथवा नेताओं के बारे में गप्प, नही होती। फीचर्स मे कोई हास्यो-

त्पादक रेखाचित्र (कॉमिक स्ट्रिप्स) या वित्तीय तथा बाजार की खबरों के पृष्ठ नहीं होते। व्यावसायिक विज्ञापन नहीं होते। सनसनीखेजवाद पूर्णत अनुपस्थित है। अखबार अमूमन ४ से ६ पृष्ठ के होते हैं जिन्हें लोग सचमुच पढ़ते है, न कि बस नजर डाल कर हटा देते है।

केन्द्रीय दैनिक पत्रों मे प्रावदा (सत्य) है, जो कम्युनिस्ट पार्टी का मुखपत्र है, जिसका वितरण ८५ लाख है। इजवेस्तिया (खबर) सरकारी अखबार है, जिसकी बिक्री ७७ लाख है। त्रुद (ट्रेड यूनियन अखबार) का वितरण ३५ लाख, सेल्स्काया जिज्न (ग्रामीण जीवन) ६७ लाख; और सोवेत्स्कीय स्पोर्ट २५ लाख बिकता है। इस वितरण-संख्या की तुलना में अमरीका में अखबार कम बिकते हैं : *द न्यू यॉर्क न्यूज* २० लाख और *द न्यू यॉर्क टाइम्स* १५ लाख। प्रमुख अखबार प्रायः एक ही साथ ४१ शहरों से छपते हैं जहा हवाई जहाज से ब्लाक पहुंचा दिये जाते है। इर्कुत्स्क, ताशकंद इत्यादि १२ दूरस्थ और महत्वपूर्ण शहरों के लिए चंद मिनटों में ही अखबार के पूरे के पूरे पृष्ठ रेडियो-विधि से भेज दिये जाते हैं, जहा वे छप जाते है। कुल अखबार ८,००० हैं और पत्रिकाए चार हजार; ये ६५ भाषाओं में निकलती हैं। राबोतनित्सा महिलाओं की पत्रिका है जिसकी एक करोड़ प्रतियां छपती है। ज्दोरोव्ये (स्वास्थ्य) की भी लगभग इतनी ही बिक्री होती है। सोवियत संघ में अखबारों का कुल वितरण १२.५ करोड प्रतिया हैं, जोकि दुनिया भर मे छपने वाली अखबारी प्रतियों का लगभग एक-तिहाई होता है। हरेक सोवियत परिवार औसतन ४ अखबार और पत्रिकाए हर रोज खरीदता है। दैनिक पत्रों की कीमत (एक प्रति) २ कोपेक और पत्रिकाओं की १२ से ३० कोपेक है। पुस्तकों की ही तरह, अखबारो और पत्रिकाओं के प्रकाशन संस्थान या तो सरकारी या सार्वजनिक संगठन हैं।

जब मैं एक अग्रगण्य सोवियत पत्रकार वालेतिन कोरोविकोव से प्रावदा के गुणो पर बातें कर रहा था, मेरा ध्यान विशेष रूप से "संपादक के नाम पत्र" विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों की ओर खीचा गया। मुझे बताया गया कि प्रावदा, इजवेस्तिया और त्रुद के दफ्तरों मे औसतन प्रति दिन १,००० पत्र आते हैं। इस डाक मे प्रायः सभी विषय होते हैं। इसमें आज औद्योगिक संस्थानो, सामूहिक और राजकीय फार्म के कार्य के बारे मे, सोवियतो के क्रियाकलाप के बारे में, वैज्ञानिक और कला संस्थाओं के बारे में, प्रमुखतम मजदूरों के प्रयत्नों के बारे में सूचना पा सकते हैं, और इसके साथ-साथ, सभी खामियों की कटु आलोचना, और विदेश नीति तथा अंतर्राष्ट्रीय स्थिति की समस्याओं का व्यापक विवेचन पा सकते हैं। एक विशेष कार्यकर्ता-दल प्रत्येक पत्र पर ध्यान देता है। शिकायतें संबद्ध अधिकारियों के पास भेज दी जाती हैं

और उसके नतीजे अंत में पत्र भेजने वाले को सूचित कर दिये जाते हैं। अखबारों के ऐसे पत्रों पर तत्काल ध्यान दिया जाता है और जब कभी जरूरत होती है, उपचार की कारंवाई की जाती है। प्रावदा प्रति दिन के पत्रों के अलावा एक महीने में दो बार पत्रो के पूरे विशेष पृष्ठ प्रकाशित करता है। अफ्रीका, एशिया और लातीनी अमरीका की खबरों के लिए दैनिक विशेष स्तंभ सुरक्षित है।

क्रोकोदिल एक अत्यंत लोकप्रिय व्यंग्यात्मक साप्ताहिक पत्रिका है. जिसकी ५० लाख प्रतियां बिकती हैं। यह व्यग्य के जरिये उस किसी भी दोष की साहसपूर्वक आलोचना करती है जो उसे राष्ट्रीय जीवन में दिखायी देता है। इसके कार्टून देखने के लिए मैंने इसके १६ नये अंक एकत्र किये थे। वे अत्यधिक निष्ठुर और विविधापूर्ण थे। एक कार्टून मे माल की वैगनें कम माल भरे जाने पर रेल की पटरियों पर न चल कर हवा में उड़ती दिखायी गयी हैं। एक दूसरे कार्टून में, दक्षिण में व्यापारिक वितरण एजेंसी से दक्षिण के गर्म भागों में आने वाले बर्फ को हटाती हुई मशीनें दिखायी गयी है। इसके नीचे कैप्शन था : "उन्हें हमारे लिए बर्फ भेजनी चाहिए !" एक पिता को अपने पुत्र के प्रति अपना कर्तव्य याद आया तो वह स्कूल गया। जब वहा वह पहुंचा तो मालूम हुआ कि लड़का अब कालिज का छात्र हो गया है। एक कार्टून मे पत्नी अपने पति से पूछ रही है कि वह एक बर्फ की गुड़िया के आगे झुक क्यों रहा है। पति जवाब देता है, "किसे पता, मेरे आका के बेटे ने ही इसे बनाया हो।" एक कार्टून में मैनेजरों पर कटाक्ष था। एक मील लबे माल से लदे ट्रकों की लाइन में उनके ड्राइवर सो रहे है, क्योंकि लिफ्ट अभी तक आयी नहीं। मैंने पाया कि सभी कार्टून मुंहफट और मर्मभेदी है।

अन्य संचार-साधन

४ करोड़ रेडियो सेट और ३५० लाख से अधिक रेडियो रिले, जो जनता के पास है, के माध्यम से संघ की ६७ भाषाओ मे रेडियो कार्यक्रम प्रायः प्रत्येक घर में पहुंचता है। पांच सौ से अधिक रेडियो स्टेशन ये कार्यक्रम प्रसारित करते है। १३० टेलीविजन केन्द्र और ६०० रिले स्टेशन टेलीविजन कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। देश भर में कुल ४ करोड़ टेलीविजन सेट है। सोवियत संघ में किसी भी नयी फिल्म के शुरू होने के दस दिन बाद उसे टेलीविजन पर दिखा दिया जाता है। नन्हें मुन्नो के लिए मास्को टेलीविजन अपने एक कार्यक्रम में अमूमन हर शाम को एक परीकथा प्रदर्शित करता है, जिसे "शुभ-रात्रि, बच्चो !" नाम दिया गया है।

सोवियत संघ मे फिल्म का उत्पादन एक कला के रूप में किया जाता है;

न कि उद्योग के तौर पर। ये जनता की विकसित हो रही जिन्दगी का एक यथार्थ चित्रण करती है, जिससे उनकी जीवनस्फूर्ति और उपलब्धियों का उन्नयन होता है। सोवियत फिल्मो में—जैसा कि युद्धोपरात फिल्मो मे दीखता हैं जिनमे इंसान का नसीबा, एक सैनिक की वीर गाथा और द क्रेन्स आर फ्लाइंग उल्लेख्य है—सभी कहानियां सोवियत मानव के अनम्य चरित्र, मानवीय गुण और आत्मिक समृद्धि की सच्ची कहानियां होती है। सोवियत सिनेमा के कलाकार जेम्स बाड और इस जैसी फिल्मो की भर्त्सना करते है जो पर्दे पर गुडो को सफल बहादुर मनुष्यों के रूप मे, स्त्रियों को उस खेल में अपने सेक्स से आकर्षण पैदा करने वाले मोहरों के रूप में चित्रित करते है, और ऐसी कहानियों की उधेड़बुन करते हैं जो डाकुओं और हत्यारों को महिमा-मंडित करती हैं। दूसरी और सोवियत सिनेमा जीवन और मानव-जाति के प्रति एक सक्रिय दृष्टिकोण के बीज रोपता है, लोगो के भीतर उच्च नैतिक सिद्धांतो और सौंदर्य-बोध को पोषण देता है।

सोवियत सघ मे ४० फिल्म स्टूडियो हैं जहां प्रति वर्ष १२५ से १३० तक बड़ी फीचर फिल्में बनती हैं, इनमें बच्चों की विशेष २० फिल्में भी शुमार हैं। देश में सिनेमा घरों की सख्या १,४५,००० है। दूरस्थ स्थानों पर विशेष चलते-फिरते सिनेमाघरों के जरिये सिनेमा की सुविधा पहुंचायी जाती है। प्रायः ही टिकटें तीन श्रेणियों की होती हैं, जो १० से ५० कोपेक तक आ जाती हैं। सोवियत सिनेमा घरों मे विदेशो की अच्छी फिल्में भी दिखायी जाती हैं। बिमल राय, सत्यजित रे, राज कपूर और ख्वाजा अहमद अब्बास की भारतीय फिल्मों को काफी प्रशस्ति मिली है। १९६८ में औसतन प्रत्येक नागरिक ने वर्ष मे २० बार फिल्में देखीं। फिल्म के बाद रंगमंच बहुत लोकप्रिय हैं। ५०० पेशेवर नाट्य मंडलियां ४५ भाषाओं में कृतित्व प्रस्तुत करती हैं, जो प्रति वर्ष १० करोड़ दर्शकों द्वारा देखा जाता है। एस्चीलस, सोफोक्लीज और यूरीपिडीज के नाट्य मंच पर शेक्सपियर, शिलर, चेखव और गोर्की के साथ-साथ जीवित हैं। बच्चो के ४४ रगमच और १०० से अधिक कठपुतली घर भी हैं।

करोड़ों लोगों के लिए कला

अक्तूबर क्रान्ति ने घोषणा की थी कि कला जनता की है और इस पर अब निकम्मे धनिक वर्ग की इजारेदारी नहीं रहेगी। इस नीति का चरमोत्कर्ष आज शहरों और गावों मे शौकिया कला में अवाम की व्यापक भागीदारी में प्रकट है। जनता केवल दर्शक ही नहीं है। नाट्य, नृत्य, संगीत और बैले की शौकिया मंडलियां हर जगह बन गयी हैं। कुछेक मंडलियों के प्रस्तुतीकरण पेशेवर स्तरों तक जा पहुंचे हैं। शौकिया कला साझी प्रतिभा का एक अनन्त

स्रोत बन गयी है। इन मडलियों की तादाद लगभग ४ लाख है, जिनमें कुल १ करोड़ सदस्य हैं। १,२७,००० पूर्ण सज्जित क्लब, संस्कृति सदन और सस्कृति प्रासाद है, जो सहकारी फार्मों, ट्रेड यूनियनों, कोम्सोमोल आदि के अधीन है, और ये जन संगठन व्याख्यान तथा वार्ताओ, सगीत सम्मेलन और नाटको, चित्र प्रदर्शन, नृत्य तथा कार्निवाल और प्रदर्शनियों का आयोजन करते हैं तथा सभी सुविधाएं प्रदान करते हैं। समस्त तटस्थ प्रेक्षकों की नजर में इस क्षेत्र में समूची जनता की उपलब्धि सचमुच की एक सास्कृतिक क्रान्ति है।

अध्याय ४

तीन भूमिकाएं

मास्को की पुश्किन स्ट्रीट में २३ नंबर की एक विशाल इमारत में, जोकि सोवियत नारी समिति का मुख्य कार्यालय है, मैंने समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती लीडिया पेत्रोवा से मुलाकात की। उनकी उम्र साठ से ऊपर थी, मगर महिलाओं के ध्येय के लिए वह जो नियमित और श्रमसाध्य कार्य प्रतिदिन कर रही है, उसमे वृद्धावस्था बाधक होती नही दीखती। वह एक पुस्तक, अतीत और वर्तमान में नारी, लिखने में लगी हुई थी। एक घटे की बातचीत मे उन्होने बताया कि महिलाएं किस तरह से, योजनाबद्ध सोपानों में से गुजर कर, लगातार आगे बढी है। इतिहास और अर्थशास्त्र की प्रोफेसर होने के नाते आकड़े उनकी उगलियों पर थे। बुनियादी तत्वों को लक्षित करते हुए उन्होंने बताया कि (सोवियत) नीति "पारिवारिक संबध-सूत्रो को बलिष्ठ से बलिष्ठतर बनाने की है, जिसमें एक पति अपनी पत्नी को एक व्यक्ति के रूप में सम्मान दे, क्योकि दोनों में बराबर के व्यक्तियों वाला संबंध-सूत्र होता है। नारी केवल गृहलक्ष्मी नही होती। वह वृहत्तर समाज में अत्यावश्यक कर्तव्य भी निभाती है।"

अपने विचार-विमर्श के दौरान मैंने पति के प्रति पत्नी के कर्तव्यों का जिक्र करते हुए संयोग से 'सेवा' शब्द का प्रयोग कर दिया। तत्क्षण ही श्रीमती पेत्रोवा कुछ-कुछ उत्तेजित हो गयी और बोली, "नहीं! नहीं! वह केवल पति के बिस्तर के लिए नही होती।" मैंने स्पष्ट किया कि मेरा आशय यह कदापि नही था। मुझे ज्ञात हुआ कि अपनी किशोरावस्था में श्रीमती पेत्रोवा जारशाही के दिन देख चुकी है, जब महिलाओं की स्थिति नितात दयनीय थी। इसी अनुभव ने उन्हे ऐसे किसी भी विचार के प्रति अत्यत संवेदनशील और प्रतिरोधी बना दिया है, जो महिलाओं के नीचे और गैर बराबर दर्जे का संकेत देता हो।

जारशाही जमाने में महिलाएं

क्रान्ति-पूर्व रूस की तमाम कुख्यात बातों में सबसे ज्वलंत थी महिलाओं की अवमानना और शोषण से भरी स्थिति। जारशाही सरकार की नागरिक संहिता में विधान था कि "पत्नी अपने पति की आज्ञा सभी मामलों में मानने को बाध्य है और वह किसी भी रूप में उसके अधिकार की अधीनस्थता से अलग नहीं हो सकती।" प्राचीन चर्च का एक गार्हस्थ्य अध्यादेश था जिसमें, अवज्ञाकारिणी पत्नी को सुधारने के विस्तृत निर्देश देते हुए कहा गया था: "उसे चाबुक से पीटना उचित होगा...चाबुक कष्टदायक और कारगर, भय उपजाने वाला तथा फायदेमंद होता है।"

कोई भी महिला अपने पति की आज्ञा के बिना कोई नौकरी नहीं कर सकती थी। यह कानून था। यदि वह पति की आज्ञा के बगैर कहीं चली गयी, तो पुलिस उसे जबरन वापस ला सकती थी। जार के साम्राज्य में एशियाई क्षेत्रों की हालत तो और भी खराब है। वहां औरतों को पर्दा करना पड़ता था। नाबालिग लड़कियों को उनके पति के हाथ बेच दिया जाता था जिसकी अनेक पत्नियों में से एक वह भी होती, क्योंकि बहुविवाह की प्रथा ही प्रचलित थी। पति की मृत्यु होने पर विधवा, कानूनन अपने मृत पति के निकटतम संबंधी की संपत्ति हो जाती—बर्तन-भाड़े, मवेशी और उन तमाम चीजों के साथ, जो उसके पति की थीं, तथा उन्हीं चीजों की तरह बिक्री-योग्य, जिसे कोई भी खरीद सकता था। महिलाओं को अपनी रक्षा के लिए कोई कानूनी हक प्राप्त नहीं था। उनके साथ गुलामों-सा बर्ताव किया जाता था। पूरे देश की अधिसंख्य औरतें निरक्षर थीं। १८६७ की जनगणना से प्रकट हुआ कि मजदूरी करने वाली ५५ प्रति शत औरतें धनिकों और अफसरों के घरों में नौकर थीं। २५ प्रति शत औरतें भू-स्वामियों और धनी किसानों के खेतों में काम करने वाली मजदूरिनें थीं। केवल १३ प्रति शत औरतें कारखानों और निर्माण-स्थलों में काम कर रही थीं, तथा चार प्रति शत शिक्षा और चिकित्सा सेवाओं में।

१९१७ की अक्तूबर क्रान्ति ने इस सारी विषमता को धो डाला। इसने सोवियत राज्य द्वारा पारित प्रथम आदेशों में ही सिद्धांततः समाज और परिवार में स्त्रियों की बराबरी की उद्‌घोषणा कर दी। सोवियत संघ के वर्तमान संविधान की धारा १२२ कहती है: "सोवियत संघ में स्त्रियों को आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान अधिकार प्रदत्त हैं।"

यह व्यवहारतः महिलाओं को युगों पुराने उत्पीड़न से मुक्ति की घोषणा

है। लेकिन कागज पर कोई निर्णय लेना एक बात है और महिलाओं को इन अधिकारों के उपयोग में सक्षम बनाने की वास्तविक परिस्थितियां प्रदान करना बिल्कुल दूसरी। सोवियत राज्य, महिलाओं को पुरुषों की बराबरी में कार्य, अवकाश, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा का अधिकार प्रदान करके, संविधान के इस अनुच्छेद का महिलाओं के लिए क्रियान्वयन सुनिश्चित करता है। इस हेतु अतिरिक्त प्रयत्न के रूप में, राज्य ने महिलाओं को प्रसूति और शिशु संरक्षण, अनेक बच्चों वाली माताओं को वित्तीय सहायता, पूरे वेतन के साथ प्रसूति-अवकाश, और प्रसूति गृह, किंडरगार्टन और नर्सरी का विशाल पैमाने पर इंतजाम किया है। सोवियत संघ में वेतन में कोई भेदभाव नहीं है; पुरुष और स्त्रियां समान कार्य के लिए समान वेतन पाती हैं। ये सब कदम एक एकीकृत ढांचे के अंतर्गत उठाये गये हैं—ये जीवन के योजनाबद्ध पुनर्निर्माण के अंग हैं, जिसे कि समाजवादी दर्शन का अनिवार्य अंग माना जाता है। इसका लक्ष्य यह है कि स्त्री को पत्नी, मां और नागरिक की अपनी तीनों परस्पर-पूरक भूमिकाओं में पूर्ण और समृद्ध जीवन सुलभ हो।

श्रम के क्षेत्र में

देश की मुक्त हुई महिलाओं ने विकास की असीम संभावनाओं का भरपूर फायदा उठाया है। उन्होंने देश के समाजवादी अर्थतंत्र में कार्य करना शुरू करके, नागरिकों के रूप में अपने कर्तव्य पूरे करने के लिए विभिन्न पेशों में योग्यता अर्जित की है। पुरुषों की भांति ही वे कार्य के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय हिस्सा लेती हैं और कभी-कभी तो ऐसा होता है कि वे "बलिष्ठ जाति" के प्रतिनिधियों (पुरुषों) को "निकाल बाहर" करती हैं। सोवियत संघ में "विशुद्ध रूप से पुरुषोचित" और "विशुद्ध रूप से स्त्रियोचित" पेशों तथा धंधों की अवधारणा को समाप्त कर दिया गया है। आज महिलाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अत्यंत महत्व के पदों पर हैं। वे इंजीनियर, डिजाइनर, डाइरेक्टर और औद्योगिक संस्थानों, प्रयोगशालाओं तथा निर्माण स्थलों की प्रबंधक हैं।

इस समय संपूर्ण राष्ट्रीय अर्थतंत्र में महिला मजदूरों का प्रति शत ५०.५ है, जबकि उद्योग और कृषि में अलग-अलग उनकी संख्या क्रमशः ४८ और ४३ प्रति शत है। लेकिन अर्थतंत्र और संस्कृति में ऐसे क्षेत्र भी हैं जहां स्त्रियां अधिक हैं। शिक्षा में वे ७४ प्रति शत, व्यापार और सार्वजनिक भोजनालय में ७३ प्रति शत, वित्त में ७४ प्रति शत है। पर चिकित्सा के क्षेत्र में वे सर्वाधिक हैं—७५ प्रति शत डाक्टर महिलाएं हैं। अमरीका की तुलना में यह बहुत बड़ी संख्या है, जहां वे केवल ७ प्रति शत हैं और क्रान्ति-पूर्व रूस में केवल १० प्रति शत।

सामूहिक फार्म प्रणाली से किसान महिलाओं की स्थिति मे मूलगामी परिवर्तन आ गया है। इसने युगों पुरानी महिलाओं की नाबराबरी समाप्त कर दी है, उन्हे आजाद और आर्थिक रूप से स्वाधीन बना दिया है, उनके कर्मक्षेत्र को व्यापक बनाया है तथा उन्हें नये समाज के सक्रिय निर्माता में रूपांतरित कर दिया है। इस समय कृषि उत्पादन के क्षेत्र में महिलाओं का प्रभुत्व है। समर्थ शरीर वाले सामूहिक किसानों में से ५६ प्रति शत महिलाएं है; विशेषज्ञों—कृषिशास्त्रियों, चिड़ियाघर-तकनीशियनों और पशु-चिकित्सक सर्जनों मे, जिन्हें विशेषीकृत सेकेंडरी या उच्चतर शिक्षा प्राप्त है—में ४३ प्रति शत से अधिक महिलाए है। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति ने कृषि के कार्य का स्वरूप बदल दिया है। जिन महिलाओं ने विशेषज्ञता प्राप्त कर ली है, वे जटिल मशीनों और स्वचालित उपकरणों का संचालन करती है। बहुत सारी महिलाएं सामूहिक फार्म मंडलों की सदस्य और उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष के रूप मे कार्य करती हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में एक-तिहाई अधिकारी और विशेषज्ञ महिलाएं हैं। इंजीनियरों के मामले में भी यही है, जिनमे कुल ५० लाख के लगभग स्त्री इंजीनियर है। उच्चतर शिक्षा-प्राप्त अर्थशास्त्रियो में से ६३ प्रति शत महिलाएं हैं। २,६५,००० से अधिक महिलाएं सोवियत संघ में वैज्ञानिक शोध कार्य कर रही है। ४८,००० से अधिक महिलाओं के पास डॉक्टर और मास्टर ऑफ साइंस की डिग्रियां है, तथा एक हजार से अधिक महिलाएं प्रोफेसर, अकादमीशियन, या विज्ञानों की अकादमियों की अवैतनिक सदस्य है। न्यायाधीशों के रूप मे वे कुल ३२ प्रति शत पदों पर है और वकील तथा न्यायालय सलाहकारों के रूप में ४० प्रति शत। महिलाएं विज्ञान मे महान योगदान कर रही हैं। वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं मे उनकी संख्या ३८ प्रति शत है। सोवियत लेखक संघ में ७०० महिला सदस्य है, और पत्रकार सघ मे ४,००० से अधिक। लगभग २,५०० महिलाएं सोवियत सघ के कलाकार संघ की और उतनी ही वास्तुशिल्पियों के सघ की सदस्य है। सोवियत संगीतकार संघ के सदस्यो में २०० से अधिक महिला संगीतकार और सगीत समीक्षक है।

अनुमान किया गया है कि स्वस्थ-समर्थ सोवियत महिलाओं में से ८० प्रति शत महिलाएं समाजोपयोगी श्रम में लगी है और शेष अपने घरेलू कार्यों में या परिवार के उन छोटे-छोटे प्लाटों में, जो देहाती क्षेत्र मे सामूहिक किसानों या राजकीय फार्म के मजदूरों को मिलते हैं।

सोवियत राज्य की सेवा के प्रतिदान में दस लाख से अधिक महिलाओं को पदक तथा उपाधियों से अलंकृत किया जा चुका है। ३,८३४ महिलाओं को सोवियत श्रमवीर बनाया जा चुका है। उनमें से २४ को यह उपाधि दो या

तीन बार मिल चुकी है। उनकी स्मृति में उनके गांवों या शहरों में स्मारक बनाये जा चुके हैं।

काम क्यों ?

सोवियत महिलाओं के लिए काम करना केवल रोजी-रोटी का साधन नहीं है। यह उन्हें नागरिक स्वाभिमान और प्रतिष्ठा का बोध भी कराता है, तथा परिवार और समाज में समता के एक आर्थिक आधार का काम भी देता है। महिलाओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में भी काम एक सबसे महत्वपूर्ण शर्त है।

सोवियत महिला समिति के अध्यक्षमंडल की सदस्य मारिया ओव्स्यान्निकोवा, एम. एस-सी. (अर्थशास्त्र), ने एक प्रेस साक्षातकार (इटरव्यू) में कहा : "मैंने इस विषय पर, कि 'महिला को कार्य क्यों करना चाहिए?' हुए विचार-विमर्शों में अक्सर भाग लिया है। इस प्रश्न के समाजशास्त्रीय विश्लेषण भी किये जा रहे है। मुख्य निष्कर्ष यह है : महिलाओं के लिए कार्य करना परिवार के लिए अतिरिक्त पैसे पाने का साधन मात्र नही है। यह मानवीय गरिमा का प्रश्न है। सोवियत नागरिक का नया सामाजिक मनोविज्ञान हमारी महिलाओं द्वारा समाजोपयोगी श्रम में भाग लेने की आवश्यकता में परिलक्षित होता है।" एक लोकप्रिय मास्को पत्रिका **सोवियत नारी** ने अनेक महिलाओं से साक्षात्कार किया और निम्नलिखित दिलचस्प विचार प्रकाशित किये।

तामारा तिमोशेंको एक रासायनिक कारखाने मे रासायनिक औषधि-निर्माण (केमिको-फार्मास्युटिकल) विभाग की अध्यक्ष हैं। यह विभाग पहले कभी एक स्वतत्र कारखाना था और इसलिए यह अत्यंत विशाल है। वह २२ वर्षों से औषधि-निर्माण उद्योग में कार्य कर रही हैं और १० वर्षों से इस विभाग की प्रमुख हैं। वह एक अल्पभाषी, शांत, शायद कुछ-कुछ शुष्क भी, हैं। उन्होने कहा : "यह तथ्य कि मैं एक महिला हू, बाधक के बजाय सहायक ही है। क्योंकि यह विभाग एक तरह से गृहस्थी है और सभी जानते हैं कि महिलाए घर चलाने मे पुरुषों से अधिक निपुण होती हैं...महिलाएं किसी भी महिला-प्रबंधक की गलती को माफ नही करती, वे पुरुष की भूलों के लिए ज्यादा क्षमाशील होती हैं।"

गालिना प्रोगुनिना देश के दूसरे सबसे बड़े तम्बाकू कारखाने की सहायक प्रबंधक है। भूरी आंखों वाली गालिना एक जोशीली नवयुवती है। उसने कहा :

"मैं विवाहिता हूं, मेरे दो बेटे हैं। मेरा पति एक कैनिंग (पदार्थों को डिब्बा-बंद करने के) कारखाने में सहायक प्रबंधक है। स्वभावतः ही हम एक-दूसरे से परामर्श और एक-दूसरे की मदद करते हैं। हम चारों अपने घरेलू

कामों को बांट लेते हैं, इसलिए आप देख सकते हैं कि परिवार से मेरे कार्य में हस्तक्षेप नही होता, बल्कि इसके विपरीत मदद करता है। एकमात्र तकलीफदेह मुद्दा वह होता है जब मुझे काम से बाहर जाना पड़ता है, मेरा पति शिकायत करता है : 'मैं कब तक बच्चों को दूध पिलाने वाला बाप बना रहूंगा ?'

"मैं अपने काम से बहुत प्रसन्न हूं, खासकर जब मैं परिणाम देखती हूं। मैं हरेक को अर्थशास्त्री बनवा रही हूं। मैं अपनी छोटी बहन को इसके लिए राजी भी कर चुकी हूं...।"

अल्ला येवदोकिमोवा नगर सेवा विभाग की अध्यक्ष है। वह अपने इस काम में बहुत ज्यादा समय से नही है; इससे पहले वह एक रासायनिक कारखाने की मुख्य इंजीनियर थी। यह फुर्तीली और रम्य महिला ७,००० मजदूरों की इंचार्ज है—हेयर ड्रेसर, दर्जी, मोची, नर्स और फर्श पर पालिश करने वालों की। उसकी टिप्पणी थी :

"मैं सोचती हूं कि महिलाओं के लिए इंचार्ज होना अधिक कठिन कार्य है। वे अधिक भावुक होती हैं और गलतियों पर काबू पाने मे उन्हें अधिक कठिनाई होती है। लेकिन इसका एक अच्छा पहलू भी है : वे आत्मतुष्ट नही हो जातीं। एक इंचार्ज महिला को महिलाओं से संपर्क कायम करने में आसानी होती है, और उसके अधीनस्थ पुरुष अपनी सूरत-शक्ल तक सुधार लेते है।"

"मेरी पक्की मान्यता है कि सेवा सुविधाएं चलाने में महिलाएं अधिक योग्यता रखती हैं—उनकी अभिरुचि अधिक सुरुचिपूर्ण होती है और सुंदर तथा आरामदेह चीजों का उनमे अधिक विकसित बोध होता है।"

तातियाना निकिफोरोवा की उम्र ५० वर्ष से अधिक है। वह पिछले १५ वर्षों से एक कपड़ा मिल चला रही है। उसने बताया :

"कभी-कभी पतिगण पारिवारिक झगड़ों मे मुझसे मदद मांगने आते हैं। मैं यह नही बताऊंगी कि मैंने कितने परिवारों को पुनः उनके पैरों पर खड़ा किया है। मेरी एक बेटी मास्को मे है जिसकी लड़की स्कूल जाती है। वह मुझसे घर आने के लिए कहती रहती है : 'अब हमें एक नानी की जरूरत है, मैनेजर की नही।' पर मैं सोच भी नही सकती कि मैं कारखाना कैसे छोड़ दूं। मैं देहलीज पार करते ही इसमें पूरी तरह खो जाती हूं। महिला कर्मचारी मुझसे कहती है : 'तातियाना इवानोवना, हम सभी एक महीना आपकी नातिन की देखभाल मे क्यों न बितायें ? हम इसे बीस वर्षों से चला रही है!'"

अन्तिम इंटरव्यू ज्योर्गी चुखायेव के साथ था। वह तातियाना निकिफोरोवा के कारखाने में मुख्य इंजीनियर है। उसने कहा :

"मैं एक महिला प्रबंधक के साथ कैसे काम करता हूं ? मुझे कोई शिकायत नही है। तातियाना निकिफोरोवा अपने काम मे निपुण हैं। वह खुद से

और अपने साथ काम करने वालों से, विशेषकर अपने सहायकों से, काफी कार्य की मांग करती हैं।

"एक कहावत मशहूर थी : 'यदि खेत कोई औरत चलाये तो वह बुरा खेत होगा।' और उसका खंडन करने के लिए अभी तक कोई नयी कहावत नहीं बनी है। यह अफसोसनाक है, क्योंकि हल्के उद्योग का इचार्ज बनने में, जहां अनेक महिला कर्मचारी हों, महिला विशेष रूप में उपयुक्त होती है। उनके प्रति उसके दृष्टिकोण में कुछ ममतामय वस्तु होती है, और इसीलिए प्रबंध के सवालात के अलावा तमाम तरह की निजी समस्याओं को सुलझाना उसके लिए अधिक आसान होता है।"

उसी पत्रिका ने विद्युत-शून्य उपकरण कारखाने में एक जनमतगणना करायी थी, जिसमें दो-तिहाई मजदूर औरतें ही है। कुल मिलाकर १,७२० जवाब प्राप्त हुए थे।

"क्या आप अपने काम से संतुष्ट है ?" इस प्रश्न के जवाब में २४६ ने कहा—काफी संतुष्ट; ४२ ने—कुल मिलाकर सतुष्ट है; ६३ ने—हां और नहीं के बीच; २२ ने—असंतुष्ट-सी; १०—असंतुष्ट और ८ ने—पता नहीं। काफी महिलाओं ने बिना किसी टिप्पणी के 'हां' या 'नहीं' में जवाब दिया।

"आप काम क्यों करते है ?" इस प्रश्न के जवाब में जवाब मिले : २२७ लोगों के साथ रहना पसंद करती है; १८० पेंशन के लिए; १६० पारिवारिक आमदनी बढ़ाने के लिए; १४७ समाज के लिए उपयोगी होने के लिए। उन्होंने कहा कि काम करना रोचक है, और तनख्वाह अच्छी है। वे अपनी शिक्षा को काम में लाने और कुशलता को बढ़ाने के लिए वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर होना चाहती है।

अलेक्सांद्रा कुजमीना, जो कई वर्षों से कारखाने में काम कर रही है, ने कहा :

"यदि मैंने प्रश्नावली का जवाब दिया होता तो मैं कहती, मैं समाज के लिए उपयोगी होना चाहती हूं इसलिए काम करती हूं। सामूहिक कार्य करते हुए मैं लोगों के साथ, राष्ट्र के साथ घनिष्ठ सपर्क महसूस करती हूं...

"मैं ३१ साल से इस कारखाने में काम करती हूं। शाम को जब मैं सड़क की बत्तियां और खिड़कियां प्रकाशित देखती हूं, मैं अपने आप से कहती हूं, यह अंशतः मेरे कार्य का फल है।

"किसी जमाने में औरत की मुख्य चिंता यह थी कि वे अपने बच्चों को क्रेशे या किंडरगार्टन मे प्रवेश कैसे दिलायें। आज हमारे कारखाने के छह किंडरगार्टन और दो क्रेशे हैं और कोई भी बच्चा अस्वीकार नहीं किया जाता। मैं

अपने अनुभव और तकनीकी ज्ञान युवा मजदूरों को प्रदान करने के लिए वह सब कुछ कर रही हूं जो मैं कर सकती हूं।"

कारखाने की ट्रेड यूनियन समिति की अध्यक्ष वेरा लारिना ने टिप्पणी की, "सामूहिकता एक बहुमूल्य गुण है। हमारा संपूर्ण समाज इससे ओत-प्रोत है। साथ-साथ काम करते हुए व्यक्ति में एक उच्च नागरिक दायित्व और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।"

कारखाने के निदेशक वासिली विनोग्रादोव महसूस करते थे : "व्यक्तियों और समाज का रचनात्मक श्रम जीवन को सार्थक, रोचक, समाजोपयोगी बनाता है और यह महान नैतिक संतोष का एक स्रोत है...कारखाने का प्रत्येक तीसरा मजदूर अध्ययन कर रहा है तथा उनमें से आधी महिलाएं है।"

५०० विवाहित, काम करने वाली औरतों के साथ साक्षात्कार में यह चित्र सामने आया : उनमे से ७५ प्रति शत अपने कार्य से काफी संतुष्ट हैं; ६६ प्रति शत ने "कार्य में अच्छे वातावरण" को काम करने का मुख्य आकर्षण बताया; और अन्य कारण भी :—"अच्छी तनख्वाह", "घर से निकटता" इत्यादि।

बृहत्तर क्षेत्रों में

समाजवादी समाज की अनुकूल परिस्थितियों में सोवियत नारी एक नागरिक के रूप में अपनी योग्यताओं और रचनात्मक शक्तियों की संपदा को पूर्णतः उद्घाटित कर रही है। उसकी इच्छा शक्ति, ऊर्जा और सार्वजनिक ध्येय में समर्पणशीलता वर्ष प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। श्रम में उसकी उत्कृष्टता पूरी कथा का एक अग मात्र है। उसकी उपलब्धियां देश के जीवन के बृहत्तर क्षेत्रों में भी उतनी ही महान है।

राजकीय प्रशासन में महिलाएं सभी स्तरों पर हिस्सा ले रही है। स्थानीय और केन्द्रीय सोवियतों मे निर्वाचित होने वाली औरतों की संख्या में निरंतर वृद्धि से उस विश्वास का सकेत मिलता है जो आम लोगों की उनकी क्षमता और सेवा की भावना मे लगातार बढ़ रही है।

सुप्रीम सोवियत में औरतों की संख्या एक के बाद एक चुनाव में बढती जा रही है। प्रथम सोवियत सघ सुप्रीम सोवियत मे १८६ महिलाएं थी, दूसरी में २७७, तीसरी मे २८०, चौथी में ३४८, पांचवी में ३६६, छठी मे ३६०, सातवी में ४२५ और इस समय, आठवी सुप्रीम सोवियत में ४६३, जोकि इस केन्द्रीय निकाय की कुल सदस्य संख्या की ३०·५ प्रति शत है। महिला प्रतिनिधियों की संख्या स्थानीय शासन-निकायों, सोवियतों, मे भी बढ़ती रही है। १६३६ में यह संख्या ३२ प्रति शत थी जो १६६६ में ४५ प्रति शत हो गयी। सघीय गणराज्यों की सुप्रीम सोवियतों में १६६२ महिला प्रतिनिधि हैं, जोकि कुल संख्या की ३४

प्रति शत है। स्वायत्त गणराज्यों की सुप्रीम सोवियतों में १,०२१ महिलाएं, या कुल सदस्यों की ३५ प्रति शत, हैं। १९६९ में स्थानीय सरकारों—मेहनतकश जनता के प्रतिनिधियों की सोवियतों (क्षेत्रीय, संभागीय, खंड, जिला, नगर, बस्ती और ग्राम)—के चुनाव में निर्वाचित २०,७०,५३९ सदस्यों में से ९,२३,३११ महिलाएं थीं।

महिलाएं सोवियत संघ में अनेक ऊंचे पदों पर आसीन हैं। सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्षमंडल में तीन महिला सदस्य है। यादगार नसरिद्दिनोवा, जिनकी राष्ट्रीयता उजबेक है, जो उजबेक समाजवादी सोवियत गणराज्य के अध्यक्षमंडल की कई वर्ष तक अध्यक्ष रही है, अब सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत की राष्ट्रीयताओं की सोवियत की अध्यक्ष है, जोकि सत्ता के सर्वोच्च निकाय के दो सदनों में से एक है। कुछ महिलाएं स्वायत्त गणराज्यों की सुप्रीम सोवियतों के अध्यक्षमंडलों की अध्यक्ष और उपाध्यक्ष हैं। आठ हजार औरतें स्थानीय सोवियतो की कार्यकारिणी समितियों की अध्यक्ष है। महिलाएं मंत्री और उपमंत्री पदों पर भी हैं, अर्थतंत्र और सस्कृति की अलग-अलग शाखाओं की देख रेख करती है, और न्यायिक निकायों मे एक प्रमुख भूमिका अदा करती है।

राजनीतिक क्षेत्र में भी महिलाएं सक्रिय है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की वे बड़ी तादाद में सदस्य है। इस समय उसमे २६ लाख महिला सदस्य और उम्मीदवार सदस्य है जोकि कुल सदस्यता का पाचवा हिस्सा है। सोवियतो में सदस्यता की भाति ही पार्टी मे भी महिलाओ का प्रति शत क्रान्ति के बाद से बढता रहा है। १९२२ में यह केवल ८ प्रति शत था। १९२७ में यह १२ प्रति शत तक पहुंच गया। अनेक महिला कम्युनिस्ट महत्वपूर्ण पार्टी पदों पर आसीन हैं—वे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की सदस्य है, क्षेत्रीय, संभागीय, नगर और जिला पार्टी समितियों की सचिव हैं। १ करोड़ २० लाख से अधिक किशोरिया और युवतियां (लगभग ५० प्रति शत) अखिल-सघीय नौजवान कम्युनिस्ट लीग—कोम्सोमोल—की सदस्य है।

औरतें ट्रेड यूनियनों के कार्य मे भी सक्रिय हिस्सा लेती है, जिनकी कुल ८ करोड़ ६० लाख सदस्य संख्या मे वे लगभग आधी हैं। लगभग सभी महिला मजदूर ट्रेड यूनियन की सदस्य है। सर्वोच्च कार्यकारी निकाय, ट्रेड यूनियनों की अखिल-सघीय केन्द्रीय परिषद की कुल सदस्यता मे औरतें ३४ प्रति शत है, और गणराज्यीय, क्षेत्रीय तथा सभागीय ट्रेड यूनियन परिषदो और कमेटियों की सदस्य सख्या की ४२ प्रति शत। लगभग ३० लाख महिलाएं कारखाना, संयत्र और स्थानीय ट्रेड यूनियन समितियों की सदस्य है, जोकि उनकी कुल सदस्यता की आधे से अधिक है। सहकारी संगठनो मे भी औरतें एक महत्वपूर्ण भूमिका

अदा करती हैं। उनकी संख्या उपभोक्ता सहकारिताओं के कुल सदस्यों की आधे से अधिक है। सोवियत नारियां अंतर्राष्ट्रीय महिला आंदोलन में उत्साहपूर्वक भाग लेती हैं। सोवियत महिलाओं की समिति ११६ देशों के २५० महिला संगठनों के साथ संपर्क रखती है। युद्ध के बाद से ६०० से अधिक प्रतिनिधिमंडल इस समिति के आमंत्रण पर सोवियत संघ की यात्रा पर आ चुके हैं। दूसरी ओर सोवियत महिलाओं के २०० से अधिक प्रतिनिधिमंडलों ने विदेशों की यात्रा की है।

साहस और गरिमा

महिलाओं का आदर्शवाद, उनका साहस और औदार्य गृह युद्ध के दिनों में और नाजियों के खिलाफ युद्ध के जमाने में विपुल मात्रा में दृष्टिगत हुआ। पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर उन्होंने क्रान्ति की विजय के लिए और अपने देश की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी। उनमें से अनेक अपने मोर्चों पर अंतिम क्षण तक खड़ी-खड़ी शहीद हो गयीं। १६२० के आरंभ में 'ह्वाइट गार्ड' प्रतिक्रान्तिकारियों ने तीन लड़कियों को कत्ल कर दिया था। उनमें से एक, डोरा ल्युबार्स्काया ने, गोली मारे जाने से पहले लिखे एक पत्र में अपने संबंधियों को बताया:

"मैं सम्मानपूर्वक मर रही हूं, उसी सम्मान के साथ जिसमें कि मैंने अपना संक्षिप्त जीवन जिया है। आठ दिन बाद मैं २२ वर्ष की हो जाती, पर मुझे इसी शाम गोली मार दी जायेगी। इस तरह मरना अफसोसनाक है, क्योंकि मैंने क्रान्ति के लिए अभी बहुत कम काम किया है। केवल अब मुझे लग रहा है कि मैं सचमुच एक क्रान्तिकारी और पार्टी कार्यकर्ता हूं। मेरे साथी आपको बतायेंगे कि गिरफ्तार होते समय और सजा सुनाये जाते समय मैंने कैसा व्यवहार किया था। मुझसे बताया गया है कि मैंने ठीक से व्यवहार किया है। मैं अपनी प्रिय बूढ़ी मां और साथी को अपना प्यार भेजती हूं। मैंने जो कुछ किया, सोच समझकर किया, और इस अंत से मैं दुखी नहीं हूं...आखिरकार, मैं एक ईमानदार कम्युनिस्ट के रूप में मर रही हूं। सजायाफ्ता हममें से कोई भी टूटा नहीं है। आज मैंने आखिरी बार अखबार पढ़ा। हमारे लोग बोरिस्पोल और पेरेकोप पर चढ़ाई कर रहे हैं। जल्द ही, बहुत जल्द, सारा उक्राइन मुक्त सांस लेगा और रचनात्मक कार्य शुरू हो जायेगा। यह अफसोस की बात है कि मैं उसमें भाग नहीं ले पाऊंगी। खैर, अलविदा, और मैं आप सब के सुख की कामना करती हूं।"

ऐसी वीरांगनाओं की प्रशंसा करते हुए लेनिन ने कहा था, "उन्होंने कितना उदात्त साहस दिखाया है और आज वे कितनी साहसी हैं। कल्पना

कीजिये उस यातना और कठिनाई की, जो वे भोगती हैं। और वे अपनी जमीन पर अडिग है क्योंकि वे सोवियतों की रक्षा करना चाहती हैं, क्योंकि वे स्वतंत्रता और कम्युनिज्म चाहती हैं। हमारी मेहनतकश औरतें सचमुच लाजवाब हैं। वे जागरूक वर्ग योद्धा हैं। वे सराहनीय और प्रेम की पात्र हैं।"

जब नाजी जर्मनी ने सोवियत संघ पर हमला किया, तो सोवियत औरतों ने मोर्चे पर और पीछे मैदान में विराट शूरता दिखायी। युद्ध के मोर्चों पर महिला पायलट, स्नाइपर, मशीनगनर, टैंक अफसर, रेडियो आपरेटर, सर्जन और नर्सें थी। घरेलू मोर्चे पर औरतों ने अपने पतियों, पुत्रों और भाइयों का काम उतनी ही तेजी से संभाल लिया जितनी तेजी से वे लोग सशस्त्र सेनाओं में भर्ती हो गये थे। महिलाओं ने व्यस्तचित्त होकर काम करते हुए, कभी-कभी प्रतिदिन ११ या १२ घंटे तक कारखानों और खेतों में काम करके उत्पादन के चक्के चालू रखे। ९१ महिलाओं को युद्ध कौशल और युद्ध में साहस के लिए सोवियत संघ वीर की उच्च उपाधि प्रदान की गयी।

शत्रु को परास्त करने में महिलाओं के योगदान का लेखा-जोखा एल. आइ. ब्रेझनेव ने युद्ध में सोवियत जनता की विजय की बीसवीं सालगिरह के अवसर पर अपनी रिपोर्ट में जीवंत रूप में पेश किया है। उसमें कहा गया है :

"हम सोवियत महिलाओं के प्रति कृतज्ञतापूर्वक सिर नवाते हैं, जिन्होंने युद्ध के गंभीर समय में साहस के चमत्कार दिखाये थे। हमारी सोवियत महिलाओं के महान जोश और अनम्य संकल्पशक्ति, देश के लिए उनके समर्पण, निष्ठा, प्रेम, श्रम में उनकी निस्सीम सहनशक्ति और युद्ध में वीरता जितने जबर्दस्त रूप में युद्ध के समय प्रकट हुई, उतनी और कभी नहीं। राइफल अपने हाथ में लिए हुए एक महिला सैनिक की छवि, सेना की नर्स और स्ट्रेचर उठाने वाली महिला की छवि, या कंधों पर तमगे लगाये सेना की महिला सर्जन की छवि हमारी स्मृति में हमेशा समर्पण और देशभक्ति की प्रेरक प्रतिमा के रूप में अंकित रहेगी।

"और जरा उस पर गौर कीजिये जो महिलाओं ने विजय के लिए घरेलू मोर्चे पर हासिल किया था। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी पूरी की, और उनका कार्य भी, जो मोर्चे पर चले गये थे। यदि कोई ऐसे पैमाने होते जिन पर एक तरफ हमारे सैनिकों की युद्धगत उपलब्धियां अंकित की जाती, और दूसरी ओर सोवियत नारियों के श्रम-फल, तो शायद दोनों गणनाएं बराबर-बराबर ठहरेंगी, ठीक वैसे ही जैसे सोवियत वीरांगनाएं अपने पुरुषों और अपने बेटों के बगल में दृढ़ और अडिग खड़ी हुई थी।"

सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्षमंडल ने ८ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित कर दिया है जिस दिन अवकाश रहता है। यह

घोषणा कम्युनिस्ट निर्माण में, नाजियों के खिलाफ युद्ध में और सभी राष्ट्रों के बीच शांति तथा मैत्री के लिए संघर्ष मे सोवियत नारी द्वारा की गयी सेवाओं का इकबाल है। अब यह एक राष्ट्रीय समारोह दिवस के रूप में सोवियत संघ के प्रत्येक हिस्से में मनाया जाता है।

विख्यात महिलाएं

जिन महिलाओ ने सोवियत सघ में महत्वपूर्ण योगदान किये हैं उनकी जीवन कथाओं में एक आम गुण सदैव मिलता है—उनकी प्रतिभा पूर्णतः विकसित हो रही है क्योंकि उन्हें समाजवादी व्यवस्था की ओर से बड़े पैमाने पर अपार अवसर सुलभ है।

इसका एक प्रारूपिक उदाहरण वालेन्तिना तेरेश्कोवा हैं, जिन्हें प्रथम नारी अंतरिक्ष यात्री के रूप में बाह्य अंतरिक्ष में ७१ घंटे तक उड़ान भरने के चमत्कार के लिए आज सारा संसार जानता है। उनका जन्म १६३७ में एक किसान परिवार में, यारोस्लाव्ल समाग के एक छोटे-से गांव में हुआ था। उनके पिता एक सामूहिक फार्म में ट्रैक्टर ड्राइवर थे, जो दूसरे विश्व युद्ध मे मारे गये थे। उसके बाद परिवार कठिनाई मे पड़ गया और उसे दूर करने के लिए तेरेश्कोवा ने १७ वर्ष की आयु मे ही, यारोस्लाव्ल टायर फैक्ट्री में काम शुरू कर दिया, और उसके बाद एक कपडा मिल में चली गयी जहां उनकी मां और बडी बहन काम करती थी। अन्य मेहनतकश लड़कियों की तरह वालेन्तिना ने भी अपना काम छोड़े बगैर ही अध्ययन जारी रखा। वे एक रात्रि स्कूल में जाने लगी और उसके बाद एक टेक्सटाइल व्यावसायिक स्कूल में पत्राचार पाठ्यक्रम मे भाग ले लिया। १६५६ में अपने कुछ मित्रो के साथ वह एक स्थानीय हवाई क्लब में भर्ती हो गयी और पैराशूट-जंपर के रूप में सर्वोच्च गुण पाकर पास हुई। १६६० में उन्होंने कॉटन स्पिनिंग के टेक्नॉलॉजिस्ट के रूप में डिग्री पायी। अंत में उन्होने अंतरिक्ष प्रशिक्षण ग्रुप में प्रार्थनापत्र भेजा और चुन ली गयी। उन्होने खगोल विज्ञान, भूभौतिकी, राकेट विज्ञान और अन्य विशिष्ट विषयों का अध्ययन किया तथा हवाई जहाज और अंतरिक्ष यान उड़ान सीख ली। तदनतर १६ जून १६६३ का ऐतिहासिक दिन आया, उनकी परम विजय का क्षण, जब वह वोस्तोक-६ नामक अंतरिक्ष यान मे बैठ कर अंतरिक्ष-कक्षा में प्रविष्ट हो गयी। उन्हे इस उपलब्धि के लिए सोवियत सघ वीर की उपाधि से अलंकृत किया गया। १६६३ में उन्होंने अंतरिक्ष यात्री आंद्रियन निकोलायेव से विवाह कर लिया। बाह्य अंतरिक्ष में उड़ान भरने से पहले ही वे एक-दूसरे से प्रेम करने लगे थे। अगले वर्ष उन्होने एक कन्या को जन्म दिया।

तेरेश्कोवा अब सोवियत सेना में एक कप्तान है और वह जुकोव्स्की सैनिक वायु सेना अकादमी में पढ़ती है। जुलाई १९६८ से वह सोवियत महिला समिति की प्रधान के रूप में भी कार्य कर रही है और उस हैसियत से वह सारे संसार में घूमती रही है। वह कहती है: "शांति हम महिलाओं को खास तौर पर प्रिय है। मुझे पता है युद्ध का क्या अर्थ है। मेरे पिता देश की आजादी और

यादगार नसीरद्दिनोवा.

स्वाधीनता की रक्षा करते हुए युद्ध के मोर्चे पर मारे गये थे। मेरी मां अपने तीन बच्चों के भार समेत अकेली रह गयी थी, और हम सभी जानते है कि किसी परिवार में पिता का अभाव कितना दर्दनाक होता है।"

"तुम जैसों को जन्म देने से बेहतर पत्थर को जन्म देना होगा; पत्थर कम से कम दीवाल बनाने मे तो काम आ सकता है"—उजबेकिस्तान में एक वह भी जमाना था जब लड़कियों की पैदाइश पर ये शब्द कहे जाते थे। और इसी धरती पर, गरीबी से आक्रान्त एक परिवार में १६२० में यादगार नसरिद्दिनोवा का जन्म हुआ था। जब वह ४ वर्ष की थी, तभी अनाथ हो गयी, क्योंकि उसके सौतेले बाप ने उसे घर से निकाल फेंका। कुछ पड़ोसियों ने दया करके उसका पालन-पोषण किया। दस की उम्र तक, वह न लिख सकती न पढ़ सकती थी, और किसी पुरुष को देखते ही तुरत वह अपना चेहरा एक काले रूमाल से छिपा लेती। इतनी भयभीत थी वह। तब तक इन सीमातवर्ती क्षेत्रों मे भी क्रान्ति विजयी हो चुकी थी। उजबेकिस्तान १६२४ में एक समाजवादी गणराज्य बन चुका था। गरीब बच्चों की देखरेख के लिए नयी सरकार घर खोल रही थी। उन्ही में से एक घर में वह प्रविष्ट हो गयी और उसे एक कारखाने के ट्रेड स्कूल में अध्ययन का अवसर मिला। बच्चों का घर छोड़ने के बाद वह एक दयालु महिला के साथ रही जिसके अपने दो छोटे-छोटे बच्चे थे। उन्होने साथ-साथ साहसपूर्वक अपने परंपरागत नकाब को जला दिया। यादगार दिन में काम करती और रात में स्कूल जाती। उसके बाद वह कालिज में भर्ती हो गयी और यादगार नसरिद्दिनोवा, एक इंजीनियर, के रूप में बाहर आयी। शीघ्र ही उसने अपनी विशेषज्ञता की धाक जमा ली। उसका प्रदेश पिछड़ा हुआ था और इसलिए वह स्वैच्छिक श्रम मे लग गयी। लोगों ने उसे गणराज्य की सुप्रीम सोवियत का प्रतिनिधि चुना। वहां के सोवियत प्रतिनिधियो ने उसे उजबेक गणराज्य की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्षमंडल का अध्यक्ष चुन लिया। बाद में वह सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत के अध्यक्षमंडल की उपाध्यक्ष चुनी गयी, और इस समय वह सोवियत संसद के दो सदनों में से एक—राष्ट्रीयताओं की सोवियत—की अध्यक्ष हैं। वर्ष दर वर्ष उन्हें उच्च से उच्चतर दायित्व के पद सौपे जाते रहे।

बिबि पालवानोवा, तुर्कमेनियाई शिक्षा मंत्री, के आरंभिक जीवन की परिस्थितियां भी लगभग ऐसी ही रही थी। बिबि के पिता पालवान खालम्राद उन्हें अपने १२ व्यक्तियों के परिवार के साथ अशखाबाद ले आये थे जब वह बहुत छोटी थी। परिवार का सारा साज-सामान दो ऊंटों पर लाद दिया गया था। वे क्रान्ति से पहले के कठिन, भूख-भरे दिन थे, और मृत्यु ने बहुतो को निगल लिया था। तीन वर्ष बीतते उससे पहले, उस विशाल परिवार मे केवल

४ व्यक्ति शेष रहे, जो नगर के किनारे पर पालवान द्वारा बनायी गयी मिट्टी की कुटीर में रहते थे—वह, उसकी पत्नी और दो लड़कियां, बिबि तथा ऐन। और फिर पिता टायफस के शिकार हो गये। मां के सामने समस्या थी कि बच्चों को दो जून खाना कैसे खिलाये। उसने कठोर परम्पराओं के संरक्षक बुजुर्गों की बात सुनी। "उनको पतियों के हवाले कर दो," उनका कहना था। बिबि का पति चुन लिया गया, एक आदमी जो उससे २० वर्ष बड़ा था। बिबि उन दिनों को याद करना नहीं चाहती।

नीना पोपोवा सोवियत संघ में अपनी महत्वपूर्ण सेवाओं के लिए विख्यात हैं। उन्हें शांति के लिए अंतर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है। उनका जन्म एक मजदूर परिवार में हुआ था। बचपन में ही उनके मा-बाप जाते रहे और अपनी बहन ओलगा के साथ उनका पालन-पोषण बच्चों के एक घर मे हुआ। उनकी सामाजिक गतिविधिया स्कूल से ही शुरू हो गयी थीं, अग्रदूतों ने उन्हें अपना नेता चुना था। सेकेंडरी स्कूल पास करके नीना ने ताम्बोव नगर संग्रहालय का इतिहास विभाग संगठित किया और उसकी प्रधान बन गयीं। उनके जीवन की साध थी उच्चतर शिक्षा हासिल करना। उन्होंने मेहनत से अध्ययन किया और दर्शन तथा साहित्य के संस्थान में दर्शन विभाग में प्रवेश पा लिया। स्नातक बनने के बाद वह विश्वविद्यालय में शोधकर्मियों के विभाग की प्रमुख बना दी गयीं। मास्को पर नाजी फौजों के घेरे के दौरान उन्हें अपने आत्मबलिदान, साहस और सांगठनिक योग्यताओं के लिए मास्कोवासियों का असीम प्यार और सम्मान मिला। वह क्रास्नोप्रेस्नेन्स्की जिले की एंटी-एयरक्राफ्ट सुरक्षा प्रणाली की प्रमुख थीं और उन सभी क्षेत्रों में उन्हें देखा जा सकता था जहां शत्रुओं की बमबारी से विनाश हो जाता था। इस समय वह सभी राष्ट्रों मे शांति और मैत्री का संदेश लेकर दुनिया के विभिन्न देशों की यात्रा करती हैं।

सुविख्यात जमाल कानलिबायेवा, डी. एस-सी. (इंजी.) कजाखस्तान की हैं। उन्होंने अमरीका, ब्रिटेन और पूर्वी जर्मनी में आयोजित तकनीकी सम्मेलनों में भाग लिया है। अपने जीवन के बारे में, और वह वैज्ञानिक कैसे बनीं, इस बाबत पूछे जाने पर, उन्होंने कहा :

"मैं अपने भाइयों और बहनों के साथ—हम सब चार थे—पली-बढ़ी। मैंने स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद माइनिंग एंड मेटलर्जी इंस्टीट्यूट में अध्ययन किया। मैं कजाख गणराज्य की विज्ञानों की अकादमी में २० से अधिक वर्षों से काम कर रही हू। इस समय मैं एक प्रयोगशाला की प्रधान हूं...मैं कजाखस्तान की हूं, जोकि अनेक विदेशियों के मन मे, शायद अर्ध-चेतन रूप से, विकराल रेगिस्तानों, खानाबदोशों और चमड़े या फेल्ट के बने

तंबुओं की तसवीरें उभारता है, जोकि इस सदी के तीसरे दशक तक वहां थे।

"मेरे दादा एक खानाबदोश चरवाहे थे। मेरी मां अनपढ़ थी। मैं सोवियतों के युग में जन्मी थी और सात वर्ष की आयु में स्कूल जाने लगी थी। वर्णमाला सीखने के बाद मैंने जो पहला शब्द सीखा, वह था 'लेनिन'।

'मेरे पिता, जो एक राजशिल्पी थे, कहा करते थे कि लेनिन ही वह आदमी है जिसने हम कजाखों के लिए ज्ञान के द्वार खोले हैं। हम सभी, चारों बच्चों को उच्चतर या सेकेंडरी विशेषीकृत शिक्षा प्राप्त हुई...मैं विवाहित हूं और मेरे दो बच्चे हैं। मेरा लड़का भौतिकशास्त्री है, और लड़की एक संगीतशाला में संगीत सीखती है। कई हजार कजाख औरतों का जीवन बहुत कुछ मेरी तरह ही है, वे काम कर रही हैं और सुखी हैं। मैंने इसे कभी भी असामान्य नहीं माना। हम सभी को अध्ययन के और पेशा या धंधा चुनने के सभी अवसर सुलभ हैं। हां, यह सच है कि कई लोग मेरे कार्य को औरत के लिए एक असामान्य कार्य मानते हैं।"

सुविधाएं

समाज के पूर्णशक्ति संपन्न सदस्य बनने की अपनी आकांक्षा में महिलाओं को राज्य का अनवरत, निरंतर वृद्धिशील समर्थन प्राप्त होता है। उच्चतर शिक्षा संस्थानों के कुल विद्यार्थियों में ४५ प्रति शत संख्या महिलाओं की है, जबकि विशेषीकृत सेकेंडरी स्कूलों में यह अनुपात और भी बड़ा है—५१ प्रति शत से भी अधिक। और ऐसा इस तथ्य के बावजूद है कि सोवियत सत्ता के प्रथम वर्षों में महिलाओं को शिक्षा के लिए जो विशेष प्राथमिकताएं दी गयी थीं, उनको कभी का समाप्त किया जा चुका है। व्यावसायिक और तकनीकी स्कूलों की एक पूरी शृंखला है जो महिला कर्मचारियों को प्रशिक्षण देती है। उद्योगों और संस्थानों में कर्मचारियों की योग्यता को बढ़ाने के लिए विविध रूप प्रचलित हैं, और कारखानों तथा संयंत्रों में व्यावसायिक स्कूल चलते हैं। कुछ व्यावसायिक स्कूलों को इधर हाल में ही व्यावसायिक तकनीकी स्कूलों में परिणत कर दिया गया है, जहां तीन से चार वर्ष का प्रशिक्षण कार्यक्रम होता है। इन स्कूलों में आठ वर्षीय पाठ्यक्रम में पढ़ने वाली लड़कियों को आधुनिक जटिल व्यवसाय सिखाये जाते है, और साथ ही साथ सेकेंडरी शिक्षा भी दी जाती है। सोवियत संघ में अब लड़कियां ९७५ व्यवसायों में से कोई भी व्यवसाय चुन सकती हैं।

यहां शादी और मातृत्व के नाम पर किसी भी महिला को नौकरी पर रखने से इनकार नहीं किया जा सकता। गर्भावस्था अथवा छोटे शिशु की मां होने के आधार पर नौकरी देने से इनकार करना अथवा नौकरी से बर्खास्त

करना एक अपराध माना जाता है और उस पर सजा दी जाती है। गर्भवती महिलाएं अपने डॉक्टर की सिफारिश पर हल्के कामों के लिए स्थानांतरित कर दी जाती हैं, मगर उन्हें तनख्वाह उतनी ही मिलती है। सभी विवाहित स्त्रियां शिशु को जन्म देने से पहले ५६ दिन और बाद में ५६ दिन का प्रसूति अवकाश पाती हैं। यदि शिशु जन्म सामान्य नहीं है या एकाधिक बच्चा हुआ हो, तो जन्मोपरांत अवकाश में ७० दिन की वृद्धि कर दी जाती है। महिलाओं को प्रसूति अवकाश अवश्य दिया जाता है, भले ही वे अपने काम पर नयी-नयी आयी हों। यदि वह चाहे तो अपनी वार्षिक छुट्टी भी उसी प्रसूति अवकाश में जुड़वा सकती है। यदि प्रसूति अवकाश के समाप्त होने के बाद भी वह घर रहना चाहती है, तो उसे काम देने वाले स्थान के प्रशासकों को अतिरिक्त अवकाश प्रदान करना ही होगा, लेकिन यह अवैतनिक होगा। अपने शिशु के जन्म के एक वर्ष बाद भी स्त्री का अपने पिछले पद पर हक बरकरार रहता है और उसकी नौकरी का रेकार्ड व्यवधानरहित समझा जाता है।

काम करने वाली माताओं को, कार्य दिवस के सामान्य अवकाशों के अलावा, कम से कम प्रत्येक साढे तीन घंटे बाद आधा घंटा की छुट्टी मिलती है ताकि वे अपने शिशुओं को दूध पिला सकें। जब तक बच्चा मां के दूध पर रहता है, तब तक यह क्रम जारी रहता है। यदि शिशु मां का दूध नहीं पीता, तो मां को बच्चे के नौ माह का होने तक अतिरिक्त अवकाश मिलता है। वह इन अवकाशों को अपने खाने के घंटे में जोड़ सकती है या फिर काम के घंटों में से उक्त समय घटवा सकती है। इन छुट्टियों के कारण उसकी तनख्वाह में कोई कटौती नहीं की जाती।

सोवियत महिलाएं राजकीय पेंशन पाने की अधिकारी हैं। वे ५५ वर्ष की आयु में पेंशन पा सकती हैं, बशर्ते कि उन्होंने २० वर्ष काम किया हो। पुरुषों को ६० वर्ष की आयु में पेंशन दी जाती है। जो महिलाएं पांच या अधिक बच्चों को जन्म देती हैं और उन्हें ८ वर्ष की उम्र तक पालती हैं, वे भी १५ वर्ष की सेवा के बाद, ५० की आयु में पेंशन ले सकती हैं—अगर उन्हें उससे पहले रिटायर होने का हक न मिला हो। अनेक उद्योगों में जहां कार्य अधिक सघन है, वे ४५ की आयु में भी रिटायर हो जाती हैं। संयुक्त राज्य अमरीका में महिलाओं को ६२ की उम्र में, फ्रांस में ६० की उम्र में, पश्चिमी जर्मनी में ६५ की उम्र में, स्वीडेन में पुरुष और स्त्री दोनों को ६७ वर्ष की आयु में, और कनाडा में ७० वर्ष की आयु में पेंशन मिलती है।

लेकिन सामाजिक श्रम में बराबरी की भागीदारी का यह अर्थ कदापि नहीं है कि महिला को पुरुष का कार्य ही, जोकि अक्सर कष्टसाध्य होता है, करना पड़े। उत्पादन कार्य में महिलाओं के विस्तृत समावेश के समानान्तर ही,

महिला श्रमिकों की रक्षा और उनकी कार्यगत परिस्थितियों में अधिकतम सुधार करने की चिंता राज्य और ट्रेड यूनियनें रखती हैं। ट्रेड यूनियनें इसका कड़ाई से ध्यान रखती हैं कि विशेष थकाने वाले और नुकसानदेह उत्पादन में, खदान उद्योग में जमीन के नीचे काम में, भूमिगत संयंत्रों की स्थापना और निर्माण में, और धातु को गलाने तथा ढालने आदि के कामों में महिला श्रमिकों को प्रयुक्त न किया जाय और एतत्संबंधी कानूनी प्रतिबंध न तोड़े जायें। कानूनी तौर पर यह भी निर्धारित कर दिया गया है कि औरतें अपने काम के दौरान एक खास सीमा से अधिक बोझ ढुलाई या इधर-उधर सरकाने का काम न करें।

सोवियत संघ में २० से अधिक शोध संस्थाएं महिलाओं के श्रम को सुरक्षा देने की समस्याओं के अध्ययन में लगी हैं। कपड़ा मिलों में जहां अधिकांशतः महिला श्रमिक हैं, समस्त श्रमसाध्य और कठिन काम मशीनों से होते हैं। महिलाओं के लिए रात पालियां न्यूनतम कर दी गयी हैं।

सोवियत संघ की विज्ञानों की अकादमी की अर्थशास्त्र की संस्था के प्रोफेसर एफिम मारेविच ने महिलाओं के रोजगार के प्रश्न का विवेचन करते हुए लिखा है :

"सोवियत आर्थिक साहित्य इस समय महिलाओं के लिए लघुतर काम के घंटे तय करने की उपयोगिता के सवाल पर जोरदार बहस कर रहा है। यह उन औरतों पर लागू होता है जो विभिन्न कारणों से प्रतिदिन कुछ कम घंटे काम करने को राजी हैं ताकि उनके लिए अपनी घर गृहस्थी को सभालना, बच्चों की देख-भाल करना, लाभदायक रोजगार के साथ अध्ययन को समन्वित करना इत्यादि, सभव हो सके।

"मैं उन अर्थशास्त्रियों के इस विचार को स्वीकार करता हूं जो यह मानते है कि इस समय उन औरतों के लिए काम के कम घंटे रखना अत्यावश्यक है (खासकर सेवा-क्षेत्र के विकास के लिए) जो घरेलू काम-काज और बच्चों के पालन-पोषण में व्यस्त रहने के कारण सामाजिक उत्पादन कार्य में पूरे घंटे काम नही कर सकती।"

पूर्णतर जीवन

नारी के लिए घरेलू जीवन का आकर्षण स्वाभाविक है। उसकी चहार-दीवारी मे, एक शांत और आत्मीय वातावरण में, वह अपने पति और बच्चों के साथ एक पूर्णतर जीवन बिताने का अवसर पाती है। किसी भी पर्यवेक्षक को इसकी प्रकृति समझने के लिए कुछेक संबद्ध प्रश्नों के बारे में जानना आवश्यक है—सौंदर्य की अवधारणा, फैशन की धाराएं, सेक्स और प्रेम के संबध में दृष्टिकोण, विवाह के प्रति दृष्टिकोण, पारिवारिक सबंध और उनमें बच्चों को प्राप्त स्थान।

"ऐसी लड़की जो मित्र बन सके, जो घमंड न करे और कक्षा में आपको मूर्खतापूर्ण चिटें लिखकर न दे। और जो भ्रमण के समय हरदम शिकवे-शिकायत न करती रहे।" (यूरा तोपोलेव, १२ वर्ष, छठी कक्षा का छात्र।)

"बेशक, यह सुंदर होनी चाहिए। पर, इसके साथ ही साथ, उसे साहित्य और कला में भी दिलचस्पी होनी चाहिए ताकि उसके साथ बात करने का कोई माध्यम मिल सके।" (सेर्योझा ओसिपोव, १७ वर्ष, प्रथम वर्ष मेडिकल छात्र।)

"आदर्श स्त्री ? कौन चाहता है उसे ? मैं तो उससे ऊब जाऊंगा। मैं जब तान्या के साथ होता हूं तो हमेशा प्रसन्न रहता हूं। बेशक, दुखद क्षण भी होते है। पर फिर भी हम दोनों सुखी हैं, क्योंकि हम एक-दूसरे को समझते हैं। और एक और बात : उसमें एक दृढ़ इच्छाशक्ति है और उसे पता है कि वह क्या चाहती है। अभी तक तो वह एक नर्स है, मगर वह डाक्टर बनना चाहती है।" (अनातोली पोतावेंको, २६ वर्ष, फिटर, विवाह प्रासाद में यह जवाब उसने दिया था।)

"आदर्श का अर्थ होता है आधुनिक। और आधुनिक का अर्थ है सादी, स्वाभाविक और ईमानदार। आदर्श पत्नी ? वह जो एक सच्ची दोस्त हो।" (आंद्रेइ युरोव, ३६ वर्ष, दो बच्चों का पिता।)

"आदर्श का अर्थ है सुंदर। सुंदर, लेकिन अपने चुने हुए एक को छोड़कर अन्य सभी की पहुंच से परे। ऐसी स्त्री जो सभी तरह की क्षुद्रता और दंभ से परे हो।" (आर्मेन गाब्रिएल्यान, ३७ वर्ष, भौतिकशास्त्री, अविवाहित।)

"मेरे और आपके बीच ही यह बात रहे, ओल्गा, मेरी पत्नी आदर्श स्त्री है। हम ५८ वर्ष से विवाहित हैं। पर मैं कभी भी उसकी अचूक नारी-सुलभता और अपने साहचर्य में नूतनता के अहसास पर आश्चर्य करते थकता नहीं। उसमें वह सब कुछ है जो मैं लोगों में सबसे अधिक मूल्यवान मानता हूं: औदार्य, निष्पक्षता, कुशलता और वफादारी।" (डी. एल. कारा-दिमित्रिएव, ८०, रूसी गणराज्य का सम्मानित कलाकार।)

सड़कों पर घूमते समय, विभिन्न संस्थाओं और परिवारों में मुलाकातों में तथा कालिज के छात्रों से अपनी बातचीत के दौरान मुझे महिलाओं को काम करते हुए और उनके अवकाश के क्षणों में देखने का पर्याप्त अवसर मिला। मैंने सोवियत महिलाओं को उनके संतुलित मेक-अप, उनकी सादी लेकिन शालीन वेशभूषा, और उनके स्वाभाविक व्यवहार में ताजा और आकर्षक पाया। सर्वोपरि उनमें मैंने महिलाओं की अंतर्निहित सौम्यता, भोलापन और गंभीरता पायी। पुरुषों के साथ-साथ काम करते हुए भी उन्होंने नारीत्व का अंशमात्र भी खोया नहीं है। बल्कि अपने व्यक्तित्व के विकास और ऊंची शिक्षा के कारण

वह बढ़ ही गया है। शारीरिक गठन दिखाकर या तड़क-भड़क से आकृष्ट करने का कोई प्रयत्न नहीं दिखायी दिया। बेशक, मैं यहां सामान्य आचरण की बात कर रहा हूं, न कि चंद अपवादों की। एक चीज मैंने नोट की कि औरतें किंचित मोटी थी लेकिन वे इस पर कतई चिंतित प्रतीत नहीं होती थी कि वे दुबली क्यों नहीं हैं, बल्कि निश्चित भाव से सामान्य कार्यकलाप करती रहती हैं। शायद यह इस वजह से हो कि वे जानती है कि वे अन्य बहुत से रूपों में सुंदर हैं—अपनी प्रतिभा और उपलब्धियों में। उनकी तरुणाई की सौंदर्य-शिक्षा ने भी उनमें निश्चय ही सौंदर्य का एकमात्र सतही शारीरिक सौंदर्य से गहनतर और तत्वतः अधिक स्थायी बोध रचा होगा। इसी पहलू पर बोलते हुए मैं महसूस करता हूं कि शेक्सपीयर की इन पंक्तियों में व्यक्त विचार कितना गलत है :

> नारियां गुलाब की भांति होती हैं, जिनका सुंदर फूल
> एक बार खिलते ही, उसी घड़ी नष्ट हो जाता है।

और जान कीट्स के शब्द कितने सच है :

> सौंदर्य सत्य है, सत्य सौंदर्य।

चूंकि सौंदर्य को भौतिक से ज्यादा आत्मिक माना जाता है, इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि सोवियत संघ मे कोई सौंदर्य प्रतियोगिता नहीं होती। इस बाबत बोलते हुए प्रोफेसर ए. खार्चेव कहते है : "हमारे यहा कोई 'सौंदर्य प्रतियोगिता' नहीं होती, क्योंकि मानव सौंदर्य केवल आकृति, रंग और सुडौलता तक सीमित नहीं है। यह मनुष्य के आतरिक संसार मे भी होता है। सौंदर्य को व्यावसायिक सट्टे की वस्तु में परिणत कर देना उसकी आत्मा की हत्या करना है।"

फैशन

सौंदर्य के ऐसे विचार ही सोवियत महिलाओं के लिए, उनके कपड़ों, आभूषण और प्रसाधनों के लिए, फैशनों की प्रवृत्तियां निर्धारित करते है। मास्को में और अन्य बड़े नगरों मे लगभग ४० फैशन घर हैं जो वस्त्रों की नवीनतम स्टाइल प्रदर्शित करते हैं। जो भी ग्राहक किसी खास डिजाइन को पसद करता है, चद कोपेक मे खरीदकर किसी वस्त्रनिर्माता दूकान से कपड़े सिलवा सकता है। एक बड़े विभागीय दूकान में मास्को मे मैंने चमकीले और विविध रंगों में स्त्रियों की अनेक पोशाकें देखी। बड़े कॉलर वाले कोट और सजावटी सिलाई वाले 'बेल्ट' वहा थे। उन पर कृत्रिम फर का काम होता है। ऊंचे कॉलर वाले ब्लाउज भी प्रमुख रूप से प्रदर्शित हैं। कोट की कीमत ३०
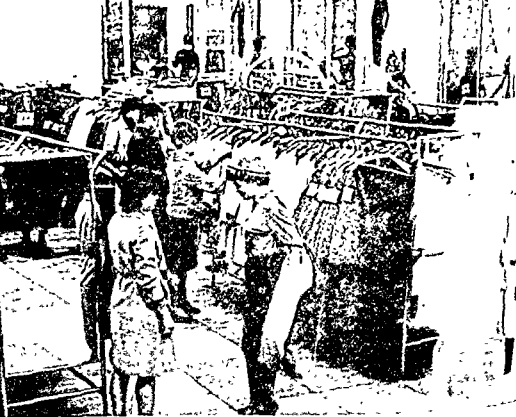
तातार स्वायत्त जनतंत्र में कजान स्थित महिलाओं का
रेडीमेड वस्त्रालय.

से १०० रूबल तक है। इन विविध स्टाइलों में साफ-सुथरी लाइनों द्वारा प्राकृतिक उतार-चढ़ाव उभारा जाता है, और रंग तथा समरूपता में सौंदर्य रेखांकित होता है। कोई ऐसी रग योजना नही है जिसे भड़कीला या चाक-चक्यपूर्ण कहा जा सके, न ही यौन अपील के लिए कोई निर्लज्ज प्रयत्न। औरतें अमूमन रेडीमेड कपडे ज्यादा लेती हैं। बुने हुए कपड़ो की बहुत माग है। अधिकाश दूकानों में कपड़े काटने वाले रहते हैं जो चुनी हुई स्टाइल का कपड़ा काट देते हैं।

एक सोवियत युवा प्रतिनिधिमंडल ने १९६८ में सोफिया के अंतर्राष्ट्रीय युवा तथा छात्र महोत्सव में इगित किया : "सोवियत संघ मे फैशन पर कोई पाबदी नहीं है—ऐसा कहना हास्यास्पद होगा। कम्युनिस्ट विचारधारा किसी भी मानी में दैनिक जीवन के अपरिग्रह का प्रचार नही करती। आस्थाओं की परीक्षा किसी के पैंट की मोहरी की चौड़ाई या बाल के रग से तय नहीं की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार चल सकता है। और यदि सोवियत संघ में यह कहा जाता है कि रुचि पर बहस होनी चाहिए, तो उसका कारण यही है कि जब किसी व्यक्ति की रुचि अति पर पहुंच जाती है, तो वह हास्यास्पद हो जाता है...सोवियत फैशनों के मुख्य गुण उनकी जनवादिता,

वाजिब दाम और उपलभ्यता हैं। सोवियत डिजाइनर जनता को चकित कर देने के लिए अजीबोगरीब माडेल नही अपनाते। यही कारण है कि आप सोवियत संघ में अल्युमीनियम, नोटों, पेड़ की छाल या मछली की चमड़ी के बने कपड़े, या कार जितनी कीमत वाले गाउन नही पायेंगे...और अत में, सोवियत उद्योग अभी भी हमेशा २४ करोड सोवियत नागरिकों की विभिन्न रुचियों और इच्छाओं के लिए पर्याप्त सुंदर और अच्छे कपड़े नही बना पाता है। पर यह स्थिति तेजी से सुधर रही है।"

नदेज्दा भ्रेलेज्नोवा ने नवीनतम वस्त्र-फैशन के बारे में लिखा है: "सच-मुच फैशन इन हाल के वर्षों में निश्चित रूप से युवतर हो गये हैं। व्यर्थ की भरमार और सजावट का अंबार अब प्रचलन से हट गया है। हमारी युवा स्त्रियों ने सादगी और किफायत का, आराम और चमकीले आनंददायी रगों का चयन किया है।"

मैंने ताजिकिस्तान जैसे दूरस्थ गणराज्य में भी कुछेक लड़कियों को मिनि-स्कर्ट पहने देखा, पर यह लोकप्रिय नही है। लेकिन मुझे एक भी औरत ऐसी नहीं मिली जो अपने शरीर के दिखावे में या सनक के लिए अजीबोगरीब कपड़े सिलाने मे व्यस्त हो। बच्चों के कपड़ों के रगारग पैटर्न थे, जिनमे एक तरह का असामान्य, रोचक, आनंददायी संस्पर्श होता है, जो उन्हें सुदर खिलौनो-सा बना देते है।

सोवियत सघ में प्रसाधन सामग्री के उद्योग की पश्चिमी देशो की तरह भरमार नही है, जहा यह गला-फाड विज्ञापनो के साथ बुरी तरह गुंथ गया है। सोवियत महिलाएं अपेक्षाकृत कम मेक-अप करती हैं। लिपस्टिक का प्रयोग होता है मगर वह लोकप्रिय नही है। नकली बरौनियां कही दिखायी नही देंगी। अब 'ब्यूटी पार्लर' खोले जा रहे हैं। पर इन्हे मात्र सजावटी उद्देश्य से नही बनाया जा रहा है। यहां इस सिद्धात पर काम होता है कि सौंदर्य ही स्वास्थ्य है। सुगधि और प्रसाधनों के साथ-साथ, यहा समुचित खान-पान और नींद के उपचार तथा फिजिओथेरैपी का इतजाम रहता है।

संसार भर की औरतों की भाति ही सोवियत महिलाएं भी आभूषण की शौकीन हैं। लेकिन इसमें भी आभूषण के आतरिक सौंदर्य पर, न कि प्रदर्शन के लिए भारी-भरकम कीमतों पर जोर दिया जाता है। इसीलिए स्वर्ण आभूषण दुर्लभ है, प्रायः केवल विवाह की अगूठियों तक सीमित। बाल्टिक समुद्र के किनारों पर प्राप्त होनेवाले एक बहुरगी राल, अंबर के बने कलात्मक आभूषण लोकप्रिय हैं। इसमे एक अदभुत दमक और विभिन्न रंगों के जगमगाते शेड्स का सयोजन होता है। एक अच्छे कण्ठहार का लगभग ३० रूबल मूल्य होता है। चूंकि अधिकाश औरतें काम करती हैं, इसलिए उनके वस्त्रों की स्टाइल

पर भारी जेवरात शोभा नही दे सकते। चांदी या अंबर के ब्रेसलेट और कर्णफूल सर्वत्र प्रचलित हैं। पूर्वी क्षेत्रों के आभूषणों मे स्पष्ट पूर्वी डिजाइनें होती हैं।

सेक्स

पिछले वर्ष क्रिसमस के अवसर पर वैटिकन सिटी से एक सदेश मे पोप पॉल ने आधुनिक जीवन में यौन-लिप्तता की कड़ी आलोचना की थी। उन्होंने अश्लील प्रेस और इस सहिष्णु विचार की, कि "उस ऐंद्रीय और यौन अध:पतन को खुली छूट दे देनी चाहिए जो जनमत और आधुनिक आदतों पर हावी है, जो अत्यंत निम्न और अत्यंत दुखद होकर खत्म होती है," कड़ी आलोचना की थी। अध:पतन की सीमा उन अखबारी रिपोर्टों मे प्रकट होती है जो पश्चिमी देशों से समय-समय पर आती रहती हैं। लंदन से एसोसिएटेड प्रेस ने इस वर्ष खबर दी थी कि स्वास्थ्य मंत्रालय ने ३० दिसम्बर को समाप्त होने वाले ५ सप्ताहों मे ६,००० वैध गर्भपातों की घोषणा की है, और इसमें से १,३०० से ज्यादा आपरेशन १५ साल से कम की लड़कियों पर किये गये थे। अमरीका मे, एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, परिवार नियोजन क्लीनिक अनेक विश्व-विद्यालय प्रांगणों में खोल दिये गये है जहा परिवार-नियोजन की जानकारी और निरोधक उपकरण विवाहित और अविवाहित, दोनों छात्र-छात्राओं को उपलब्ध हैं। ये क्लीनिक छात्रों की बढती हुई माग के कारण खोले गये हैं। वे इसके पक्ष में दलील देते है कि "यह उन लड़कियों के सरक्षण के लिए है जो यौन जीवन शुरू कर चुकी है, और परिवार नियोजन सलाह के बिना वे तकलीफ मे पड़ जायेंगी।" नियोजित अभिभावकत्व की विश्व आबादी (प्लेंड पैरेंटहुड वर्ल्ड पॉपुलेशन) के लेखक डा. ऐलन गुटमाशर के अनुसार, अमरीका में प्रति वर्ष ८ लाख से १० लाख के बीच अवैध गर्भपात होते हैं। दक्षिण वियत-नाम में अनुमानतः १ से ३ लाख के बीच वियतनामी औरतें वेश्या, बार गर्ल और अमरीकी सैनिकों की 'अस्थायी पत्नियों' के रूप मे जी रही हैं।

इस तरह की घटनाएं आज सोवियत सघ में नहीं मिलती। सोवियत नारियों के आत्मिक विकास और आर्थिक स्वाधीनता के साथ-साथ, वेश्यावृत्ति और 'काल गर्ल्स' का संस्थाओं के रूप में रूस से उन्मूलन हो चुका है। साहित्य और कक्षा में व्याख्यानों के जरिये, जिनकी पूर्ति एक व्यापक सौंदर्यशास्त्रीय शिक्षा करती है, देश के युवा वर्ग को सेक्स और प्रेम के बारे मे एक स्वस्थ दृष्टिकोण निरंतर प्रदान किया जाता है। यह स्कूल अध्ययन के वर्षों मे किया जाता है। घर में मां-बाप की सुखी और शांतिमय जिंदगी भी एक स्थायी और गंभीर प्रभाव डालता है। मैंने जब एडवर्ड कोस्त्यांकिन, शिक्षाशास्त्रीय विज्ञान

की अकादमी के सह-सदस्य, से भेंट में सेक्स शिक्षा का सवाल उठाया, तो मुझसे उन्होंने बेलाग कहा कि सेक्स के जटिल प्रश्न का शोध अभी-अभी शुरू किया गया है, जिसमें सामाजिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, शरीरशास्त्रीय और नैतिक किस्म के अनेक पहलू है, और अभी काफी सामग्री एकत्र करना है। लेकिन बुनियादी दृष्टिकोण बहुत पहले, क्रान्ति के तुरंत बाद, स्थापित हो चुका है। यह था सेक्स को आत्मिक प्रेम का अंग बना कर उदात्त कर देना। अपने विचार ज्यादा कारगर ढंग से व्यक्त करने के लिए कोस्त्याश्किन ने मुझे एक मुद्रित पर्चा थमा दिया : "सोवियत संघ में यौन नैतिकता और यौन शिक्षा।" उसमें उन्होंने कहा है :

"सोवियत संघ में यौन नैतिकता इस सिद्धान्त पर आधारित है कि सेक्स, प्रेम और परिवार को केवल निजी चिंता के विषय नही, बल्कि समाज की चिंता के विषय भी मानना चाहिए। यौन आवेगों को विवेक द्वारा अनुशासित और निर्देशित किया जाना चाहिए ताकि वे स्थायी, सुखी परिवार स्थापित करने के समाज के लक्ष्य के अनुरूप हो सकें। महिलाओ की आजादी, उन्हे पुरुषों के बराबरी में पूर्ण हकों का दिया जाना, प्रेम में सच्ची पवित्रता संभव बनाता है। यौन अभिव्यक्ति का स्थान परिवार के भीतर है। विवाह-पूर्व यौनाचार और अस्वाभाविक यौन व्यवहार पर एतराज किया जाता है। यौन शिक्षा इन्ही सिद्धान्तो पर चलती है। इसका लक्ष्य सेक्स के विभिन्न पहलुओं पर सूचनाएं देना नही होता। बल्कि, यह दो लक्ष्यों को समर्पित है—लडकियों और लड़कों को पुरुष और स्त्रियो के रूप में अपनी सामाजिक भूमिकाएं सिखाना, और यौन नैतिकता में प्रशिक्षण देना, यौन आवेगों पर संयम रखना सिखाना।...इसलिए यौन शिक्षा की मुख्य समस्या भावनात्मक मामलो में उच्च नैतिक मानदड का सन्निवेश करना है... यौन शिक्षा मात्र शरीर विज्ञान की शिक्षा से कुछ अधिक होना चाहिए... प्रेम मे सुसंस्कृत व्यवहार बचपन में सयम सीखने पर निर्भर होता है।"

डा. टी. एस. अतारोव, एक सोवियत लेखक ने अपनी पुस्तक यौन शिक्षा की समस्याएं में भी यही विचार व्यक्त किये हैं। उनका अभिमत है :

"यौन जीवन को मात्र एक शरीरशास्त्रीय कार्य मानना समाजवादी समाज के सभी नैतिक मानदंडों के विपरीत है। समाजवादी नैतिकता के अन्तर्गत, केवल शारीरिक हवस पर आधारित कोई यौन जीवन, जिसमें कि दोनो भागीदारों के बीच कोई आत्मिक घनिष्ठता न हो, नही हो सकता।"

सोवियत सेकेंडरी स्कूल मे शिक्षक और डाक्टर लड़कों और लड़कियों को एक खास उम्र मे अलग-अलग स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक व्याख्यान देते है। अन्तिम तीन वर्षों में वरिष्ठ छात्र मानव शरीरशास्त्र और बुनियादी जीवशास्त्र

के व्यापक पाठ्यक्रम मे शारीरिक प्रक्रियाओं का विस्तृत अध्ययन करते हैं। लेकिन यौन समस्याओं को कोई अनावश्यक महत्व नही दिया जाता। "लड़कों मे वीरोचित आचरण और लड़कियों में सौम्य नारी सुलभ-गुण विकसित करना" शिक्षकों का एक अनिवार्य दैनिक कर्तव्य माना जाता है। लेनिन ने इस बाबत जो कहा था उसे सदैव याद रखा जाता है, यानी आत्म-नियंत्रण और आत्म-अनुशासन का अर्थ गुलामी नही होता, वे प्यार मे भी अत्यावश्यक हैं। खेलकूद, सामाजिक गतिविधि और विविध-बौद्धिक रुचियों का आयोजन स्वस्थ और वाजिब सीमा के भीतर सेक्स-आवेग को सीमित करने मे मदद करता है। इस पहलू को रेखांकित करते हुए प्रोफेसर वी. एन. कोलबानोव्स्की ने, जो शिक्षा विज्ञानों की सोवियत संघ अकादमी की सेक्स शिक्षा प्रयोगशाला के अध्यक्ष हैं, एक लेख मे कहा है :

"संसार भर के यौन शास्त्रियों का विश्वास है कि समस्त यौन असामान्यताओं की जड़ें बचपन और कैशोर्य में होती हैं। वृद्धिशील पीढ़ी का विवेक-सम्मत पालन-पोषण इसके खिलाफ सर्वोत्तम रोकथाम है, और यह सुखी पारिवारिक जीवन की गारंटी है। बहरहाल, इसे मात्र शरीर विज्ञान तक, मात्र उस साधारणतम जानकारी तक सीमित नही किया जा सकता जो प्रत्येक सुसंस्कृत व्यक्ति के लिए आवश्यक है। मुख्य बात है दोनों सेक्सों के बीच स्वस्थ, बुद्धिसंगत और उच्च नैतिक संबंधों का विकास करना। ऐसे संबंध मानवीय प्रेम के लिए अनिवार्य होते हैं जो कि व्यक्तिगत और पारिवारिक सुख के लिए आवश्यक है। ज्ञान पर आधारित, न कि अज्ञान पर, शुचिता को विकसित किया जाना चाहिए... सोवियत नैतिकता का बुनियादी सिद्धान्त प्रेम के प्रति एक गंभीर दृष्टिकोण रखना, इसके समस्त परिणामों के लिए उच्च दायित्व की जागरूकता रखना है। सन्यास और गैर-जिम्मेदार आजादी, ये दोनों ही सच्चे प्रेम के प्रतिकूल हैं। लक्ष्य यह है कि यौन संबंधों मे शुचिता और ईमानदारी को विकसित किया जाये, मानवीय प्रेम की उस उदात्त भावना का पोषण किया जाये जो लोगों को सच्चा सुख देने वाली एकमात्र वस्तु है।

जब इस तरह के विचारों का समाज में आधिपत्य हो तो यह स्वाभाविक है कि सोवियत देश की यात्रा पर आये व्यक्ति को प्राकृतिक कला के नाम पर सेक्स-भावना का उस तरह का दुरुपयोग देखने को न मिले, जो पश्चिमी देशों मे बढता जा रहा है। नग्नता और यौन सनसनी रंगमंच या पर्दे पर नहीं दिखायी जाती। होटल और क्लबों में अर्धनग्न नर्तकियों के प्रदर्शनों वाले कैबरे नहीं होते। सड़क किनारे गुमटियों और पुस्तक की दूकानों मे ऐसी कोई पुस्तक नही मिलती जिसका मुख्य विषय विकृत सेक्स हो, जिसमें चुंबन, आलिंगन, संभोग, बलात्कार और यौन विकृतियों को भी सनसनीखेज बनाने वाले दृश्यों

का स्फुट वर्णन हो। अश्लील चित्र और घिनौनी कहानियों वाली पुस्तकें वहां नही बिकती। अखबारों में अर्धनग्न औरतों का प्रदर्शन करने वाले विज्ञापन नही होते। सड़कों पर सिनेमा के ऐसे कोई पोस्टर जो मर्द और औरतों को भोंड़ी मुद्राओं में दिखाते हों, नही होते। एक सोवियत पुस्तक मनुष्य और समाज इस तरह के आचरण की भर्त्सना करती है और लक्षित करती है कि यह सब सोवियत जीवन-दर्शन के प्रतिकूल है। पुस्तक मे लिखा है :

"कम्युनिस्ट सिद्धान्त," 'प्रत्येक को अपनी जरूरत के मुताबिक' का 'पत्नियों के समुदाय' से, या अराजकतावाद से, 'पूर्ण स्वतंत्रता' की आड मे सेक्स और स्वच्छंदता के 'कल्ट' (पंथ) से कोई वास्ता नही है, क्योंकि वे औरत के प्रति, निम्नतर वासनाओं को सतुष्ट करने वाली एक चीज के रूप मे—मनुष्य के रूप में नही—देखने की पूजीवादी दृष्टि की अभिव्यक्तिया है...पूंजीवादी सिद्धान्तकार के लिए, औरत एक चीज होती है, काम वासना की सतुष्टि का एक साधन, न कि एक व्यक्ति, जिसके कारण ही वह भी उसकी (पुरुष की) नैतिकता के घेरे से बाहर रहती है।"

प्रेम

सोवियत आदर्श है मनुष्य की "यौन इच्छा का मानवीयकरण" करने का। वाय. रुनोव इस बारे मे एक सोवियत पत्रिका में कहते हैं :

"इसमें संदेह नही कि पुरुष और स्त्री के बीच प्रेम सेक्स के बिना पूर्ण नही हो सकता। शारीरिक संबंध जोकि प्रेम को परिपूर्णता देता है, उन अमूल्य आनदों में से है जो प्रेमीगण परस्पर प्रदान करते है। लेकिन आत्मिक और शारीरिक पक्षों की समरसता के बगैर, ऐसी समरसता जिसमे आत्मिक पक्ष शारीरिक पक्ष को अनुशासित और नियंत्रित करता है, मानवीय प्रेम असंभव है। दूसरी ओर, प्रेम यौन आसक्ति से कही बहुत ज्यादा नाजुक भावना होती है; यह साहचर्य, समान शौकों, रुचियों और आदतों पर फलता-फूलता है...सोवियत समाज में प्रेम को एक सशक्त और श्रेष्ठ भावना के योग्य रुझान के साथ देखा जाता है। अधिकाश मां-बाप, जब वे अपने बढ़ते हुए बच्चों को प्रेम करते या प्रेम के अनुभव से गुजरते देखते है, तो चतुराई और समझदारी से काम लेते है। सोवियत युवजन अपने प्रेम के आदर्श की प्रेरणा युगों पुरानी मानवतावादी प्रेम परंपरा से ग्रहण करते है—उस परंपरा से जो राम और सीता, शुलामाइट और सोलोमन, तक पहुंचती है, जिसे उन सभी ने आगे बढ़ाया और विकसित किया है जो प्रेम को एक महान आत्मिक शक्ति तथा भौतिक आवेग के रूप में देखते है। जिन समाजो मे अन्याय और असमानता का राज है, ऐसे प्रेम को ज्यादा तवज्जो नही मिली, क्योंकि इसने मनुष्य की

सत्ता या धन को ज्यादा महत्व नही दिया। साहित्य और वास्तविक जीवन, दोनो मे ही सच्चा प्रेम अक्सर ट्रेजेडी मे समाप्त होता है। और तब भी प्रेम का यह मानवतावादी आदर्श अधिकाधिक दिल जीतता गया, जब आज यह एक पूरे समाज के लिए अनुसरणीय आदर्श बन गया है। समाजवादी समाज मे प्रत्येक व्यक्ति इस आदर्श के मानदड पर खरा उतरने में समर्थ नही है, लेकिन उस आदर्श को पुष्ट करने की हमारे समाज की आकाक्षा जाहिर है।"

इस विषय पर अपने विचार-विमर्शों मे सोवियत विचारकों का यह विचार मुझे बारबार सुनने को मिला कि अनुशासित यौन जीवन के अपने स्वर्गोपम आनद होते है, और यह कि यह तभी सभव है जब पुरुष और स्त्री एक दूसरे के सपूर्ण व्यक्तित्व के साथ प्रेम करे। दूसरी ओर, यौन-उन्माद एक रोग-सा है जो अधःपतन और बर्बरता की ओर ले जाता है। यह सच्चे मनुष्य को नष्ट कर देता है, उसे एक गलित व्यक्ति, एक ऐसा जीव बना देता है जिसके कोई ऊचे आदर्श नही हैं, कोई आंतरिक शांति नही है, जो एक उन्मादग्रस्त पशु-जीवन बिता रहा है। ऐसे लोग सनसनी की खोज में अनवरत उत्तेजित दशा मे जीते है और जिनके लिए धैर्य और आंतरिक शांति दुर्लभ हो जाती है, प्रत्येक भावनात्मक तूफानी घटना उनके लिए खतरनाक नतीजे छोड़ जाती है। वे भी कभी सच्चे रोमास का, जीवन के ताजे और स्वच्छ आनंदो का अनुभव नही करते। जीवन के इस पहलू का विवेचन करते हुए मकारेंको लिखते हैं :

"प्रेम कोई नितात पाशविक यौन आकर्षण से उत्पन्न होने वाली शाखा नही होता। प्रेम में सच्चे प्रणय को मानवीय स्नेह के अनुभव के आधार पर ही समझा जा सकता है जोकि सेक्स पर निर्भर नही होता। कोई युवक अपनी पत्नी या प्रेमिका को प्यार नहीं करेगा अगर उसने अपने मां-बाप, साथियों और दोस्तो को प्यार नही किया है, और उसने अन्य लोगों को इस तरह से जितना ज्यादा प्यार किया होगा, उसका यौन-प्रेम भी उतना ही अधिक उन्नयनशील होगा। इसके अलावा, यौन वृत्ति सामाजिक अनुभव से संयुक्त और परिस्कृत होकर...उस चीज का एक स्रोत बन जाती है जो सौदर्य चेतना में महानतम है, और मानवीय सुख मे सर्वोच्च है।"

प्रेम और यौवन के विषय पर ही कांस्तातिन लापिन लिखते हैं : "प्रेम का विचार—शुद्ध निस्वार्थ, पूर्वग्रहों से मुक्त—सोवियत युवा वर्ग का आदर्श बन गया है। वे प्रेम को पारस्परिक सम्मान, वफादारी, एक दूसरे के आनद और दुख बांटने का प्रयत्न, एक ऐसी भावना मानते हैं जो मनुष्यों को बेहतर बनने और अधिक सुदर बनने के लिए प्रेरित करती है।"

सोवियत दार्शनिक ई. बालागुश्किन ने एक लेख "प्रेम, जैसा कि हम उसे समझते हैं", मे कहा है :

"पश्चिमी समाजशास्त्री अक्सर दावा करते हैं कि महिलाओं को सभ्य बनाने और समता प्रदान किये जाने से परिवार के बंधन अनिवार्यतः कमजोर होते हैं और परिवार टूट जाते हैं। हमारी राय मे हर चीज पारिवारिक संबंधों को आगे विकसित करने पर, और इस पर कि जोर किस बात पर दिया जाता है—सेक्स या आत्मिक हितों के समन्वय पर—निर्भर करती है।

"सभी जानते हैं कि सेक्स को एक 'कल्ट' (पंथ) बना देना पूंजीवादी समाज का एक विशिष्ट गुण है, सेक्स ही वहा 'पारिवारिक संबंधों' का मुख्य मापदंड है। सेक्स को दी गयी प्राथमिकता ऐसी शादी को जन्म देती है जिसका स्वतंत्र महत्व समाप्त हो जाता है और जिसकी जगह बहु-विवाह और विवाह-पूर्व एवं विवाहेतर संबंध ले लेते हैं। इस स्थिति की गम्भीरता का अहसास एक पुस्तक से हो जाता है जो अभी-अभी अमरीका में छपी है। यह 'यौन पुनर्जागरण' के बारे में एक दर्जन समाजशास्त्र के प्रोफेसरो का सामूहिक संग्रह है। इसके लेखकों ने जिस वस्तु का विवेचन किया है (उस पर अपनी व्यग्रता को छिपाया नही है, और वह है: अमरीका में युवा वर्ग के बीच लपटता, नैतिकता और विवाहों के प्रति उनकी उदासीनता।

"सोवियत परिवार में आत्मिक हितों के समवाय को बढावा दिया जाता है। यह किसी भी तरह सेक्स को कम करके दिखाना नही है, जोकि वैवाहिक संबंधों का स्वाभाविक आधार होता है। यह आधार स्वीकार किया जाता है लेकिन इसकी आत्मिक शुरुआत—गहरे प्रेम और कोमल भावना—मे घनिष्ठ रूप से जोड़ कर ही। यह यूंही नही है कि सोवियत संघ में युवा लोगों की नैतिक शिक्षा पर, युवा लडकों और लड़कियों के बीच पवित्र और सुंदर संबंध विकसित करने का, उच्च रोमानी भावनाओं और मैत्री के मूल्य को समझते हुए, बहुत ज्यादा ध्यान दिया जाता है।

"पति और पत्नी को बांधने वाले आम हित अनेक क्षेत्रों में व्यवहृत होते है। यह उल्लेखनीय है कि न केवल अपने बच्चो को पालने-पोसने में और घर-बार चलाने में, न केवल मनोविनोद में और एक दूसरे से मनोरंजन करने मे उनके आम हित निहित होते हैं, बल्कि उनके काम में, उनके सामाजिक जीवन मे, और उनके सांस्कृतिक तथा शैक्षिक स्तर को और सुधारने में भी।"

विवाह

प्रेम और सेक्स के ऐसे विचारों से, सोवियत संघ में विवाह और परिवार पुरुष तथा स्त्री की समानता, व्यावसायिक नीयतों से मुक्त एक स्वतंत्र वैवाहिक गठबंधन के सिद्धान्तों पर, और परस्पर सम्मान एवं प्रेम की भावनाओं पर आधारित होते हैं। एदवर्द कोरत्यारिकन के शब्दों मे, "यह प्रेम फायदवादियों

की 'लिबिडो'—यौन प्रेरणा —से बहुत परे है। हम महसूस करते हैं कि फ्रायड के ये दावे भोंडे और अपमानजनक है कि समस्त भावनाएं और संबंध जिन्हें आम तौर पर बहुमूल्य माना जाता है—सहानुभूति, मित्रता, विश्वास और अन्य—वस्तुतः विशुद्ध यौन आकांक्षाओं की ही अभिव्यक्तियां हैं...पर मार्क्स-वादी समाजशास्त्र और शिक्षा सिद्धांत इसके भी सख्त खिलाफ हैं कि मनुष्यों के बीच प्रेम के घनिष्ठ संबंधों का और व्यक्तिगत पारिवारिक सुख की आकांक्षा का महत्व कम बताया जाय। वे व्यक्तिगत यौन संबंधों को हमारे समाज के निर्माण कार्य का ऐकांतिक रूप से गुलाम बना देने की किसी भी प्रवृत्ति का विरोध करते हैं।"

इन्हीं लाइनों पर प्रावदा ने अपने संपादकीय में लिखा था :

"पितृत्व और मातृत्व बहुत पहले से सोवियतों के देश में एक आदर्श गुण बन चुका है...सोवियत समाज में, वह शोहदा जो साल में पांच बार शादियां करे, या वह लड़की जो तितलियों की तरह एक से दूसरी शादी करती रहे, जनता से सम्मान नहीं पा सकते...तथाकथित 'मुक्त प्रेम' और सेक्स जीवन में बेतरतीबी पूर्णतः बूर्ज्वा हैं और समाजवादी सिद्धांतों से या सोवियत नागरिक की नैतिकता और आचार विचारों से उनका कोई वास्ता नहीं है।"

एक विख्यात सोवियत समाजशास्त्री प्रोफेसर अनातोली खाराचेव ने अपनी पुस्तक **सोवियत संघ में विवाह और परिवार** में लिखा है : "कम्युनिज्म एक-विवाह-प्रथा को उस हद तक अस्वीकार करता है जहां तक कि निजी संपत्ति की धारणा उसे खींच ली गयी थी और पुख्ता कर दिया था, लेकिन एक-विवाह-प्रथा उसे दाय में मिली है और उसे वह दोनों सेक्सों के बीच संबंधों में सर्वोच्च मात्रा में विकसित करता है।"

वैवाहिक संबंधों के बारे में ये विचार मात्र सर्वोच्च हलकों से किया जाने वाला प्रचार नहीं है। वे जनता के स्वीकृत मानदंड बन गये हैं। सामान्य नागरिकों से बातचीत करने पर इसकी स्पष्टतः पुष्टि हो जाती है। अमरीकी पत्रकार मॉरिस हिन्दुस ने रूस की सैर करते समय मास्को के एक कारखाने में एक लड़की से पूछा : "क्या तुम स्तालिन के पुत्र से शादी करना पसंद करोगी?" "यदि मैं उससे प्यार करने लगूं, तो—हां।" सिर्फ यही उसका जवाब था। और यह ऐसे समय, जब स्तालिन द्वितीय विश्व युद्ध के दिनों में अपनी सत्ता के शिखर पर था। पिछले वर्ष दो पत्रकार—वी. लाग्रांफ और वी. सिमाकोव ने मास्को टेलिविजन कारखाने के सात असेम्बली लाइन मजदूरों से इंटरव्यू लिये, जो एक अल्प अवकाश के दौरान सुस्ता रही थी, काफी पी रही थीं और गपशप में लगी थी। वे सभी १८ से २० साल की उम्र की थी। शुरू में वे पत्रकारों द्वारा इस ढंग से प्रश्न किये जाने पर चौंक गयी : "एक मिनट, लड़कियो!

आपकी छुट्टी खत्म हो, उससे पहले कृपया इस प्रश्न का जवाब दे दे : किस तरह के आदमी के लिए आप आदर्श संगिनी बनेंगी ? किस तरह का पति आप चाहेंगी ?"

नादिया बाउमान ने कहा : "यह निश्चय ही एक अप्रत्याशित प्रश्न है, मगर मैं जवाब देने का प्रयत्न करूगी। लंबा, सांवला, खूब सूरत। वह निश्चित रूप से हंसमुख होना चाहिए, एक अच्छा वार्ताकार होना चाहिए और मिलनसार भी। बेशक, सबसे पहले उसे मुझसे प्यार होना ही चाहिए। मैं चाहूंगी कि वह बर्तन धोये, कपड़े तह करे। मैं आलसीपन बर्दाश्त नही करूगी।"

लिदा जुयेवा : "मैं एक युवक से मिलजुल रही हूं जिसमें ठीक वही गुण है जिसके बारे में आप पूछ रहे हैं। वह एक बढ़िया आदमी है। वह मेरा सम्मान करता है और हमेशा ही अपनी बात मनवाने के लिए नही अड़ता। पति और पत्नी को एक दूसरे के हितो की इज्जत करनी ही चाहिए। मसलन, मैं कविता पढ़ना और सुनना पसद करती हू, जबकि वह केवल तकनीकी साहित्य पढता है। कल हम थिएटर जा रहे हैं और परसों, तैराकी के तालाब—हमारी अनेक दिलचस्पियां एक जैसी है।"

तोनिया जाइत्सेवा : "मै गभीर लोगों को पसद करती हूं। वह एक खरा आदमी होना चाहिए—चरित्र का पक्का—जो अपनी पत्नी का साथ दे सके, और कभी शिकायत न करे। उसे कठोर परिश्रमी और निस्वार्थ होना चाहिए। वह खामोश किस्म का भले ही हो, पर यदि वह किसी भी विषय पर बात करने में समर्थ हो तो अच्छा, क्योकि उससे बातचीत करना दिलचस्प होगा। और, बेशक, उसमें 'सेंस आफ ह्यूमर' होना ही चाहिए, वरना उबाऊ होगा। उसका नाक-नक्श लंबा नही, नीली आखें, हलके रंग के बाल, बॉक्सिंग का शौकीन। धूम्रपान न करता हो। मैं सोचती हूं कि आप समझ गये होंगे कि मैं एक खास व्यक्ति के बारे मे बोल रही हूं। वह इस समय सेना में है। अगले साल आ जायेगा, मैं सोचती हूं कि मैं उससे प्रेम करती हूं।"

वेरा शुल्गिना : "मैं एक ऐसा व्यक्ति चाहूंगी जिसमें सच्ची और गहरी भावनाएं हो। अभी तक मुझे ऐसा कोई मिला नही है। वह या तो नाविक हो या सैनिक—वे चुस्त और अध्यवसायी होते हैं। पुरानी पीढ़ी के मूल्य भिन्न है—वे कहते है कि पति के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि वह शराब न पीये और खूब पैसा कमाये। हो सकता है यह आवश्यक हो, पर मुख्य चीज प्रेम है, है कि नही ? बहरहाल, मा कहती है कि मैं अभी शादी के बारे में सोचने लायक नही हूं।"

नताशा मोलोरत्वोवा : "मैं सोचती हूं कि इस विषय पर बहुत कुछ कहा जा सकता है, मगर मुझे मालूम नही कि वह कैसे कहा जाय। उसे बहादुर

और पौरुषवान तथा ईमानदार होना चाहिए—उसे हमेशा नयी-नयी चीजों की खोज और आविष्कार करते रहना चाहिए—स्वयं अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए। उसके चरित्र में, उसके स्वप्नों में और उसके कार्य में कोई न कोई चिनगारी होनी चाहिए। यदि वह संगीत, खास कर बीथोवन, भी पसंद करे तो और अच्छा है।"

राया साल्तानोवा: "सबसे महत्वपूर्ण चीज यह है कि हम एक दूसरे को प्यार करें। और यह भी, कि परस्पर निष्ठा हो जिससे बहुत-सी अप्रियता, ईर्ष्या जैसी चीजें टल जाती है। मेरा वित्या (हमारी शादी हुए दो वर्ष हो चुके हैं) अहंवादी नहीं है और हमेशा मेरी तथा अन्य लोगों की मदद के लिए तैयार रहता है। वह एक ड्राइवर है। हमारी अनेक रुचियां एक-सी हैं। हम दोनों को ही संगीत और पुस्तकों का शौक है, हालांकि वह एकांकी संगीत नाट्य और युद्ध संबंधी पुस्तकें पसंद करता है, जबकि मैं आपेरा, वाद्य संगीत और ऐतिहासिक उपन्यास। कभी-कभी हममें झड़प भी होती है, मगर जीवन, लोग और चीजों के बारे में बड़े मसलों पर हम एकमत हैं। मैं सोचती हूं कि वित्या एक आदर्श पति है।"

राया मोलोद्त्सोवा: "मेरी शादी हुए ३ वर्ष हो चुके हैं और हमारी एक दो वर्षीया बच्ची है। यदि आप अपने पति को आदर्श पतित्व के निकटतम लाना चाहती हैं तो आपको उसे बिगाड़ना नहीं चाहिए! मसलन, घरेलू कार्य-सम्पादन में आधी-आधी शरीकदारी होनी चाहिए। शनिवार और रविवार को अगर वह ऐप्रन पहनकर रसोई में काम करे या बच्चों को घुमाने ले जाय, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। मैं मानती हूं कि पतियों और पत्नियों को अपनी छुट्टी साथ-साथ बितानी चाहिए। हम साथ-साथ लेनिनग्राद गये थे। मेरे पति को उस नगर की बखूबी जानकारी है और उसने मुझे सभी स्थान दिखाये। यह ऐसी छुट्टी थी जिसे हम दोनों लंबे समय तक याद रखेंगे। हम दोनों काफी सुखी हैं। पर मेरा एक ही प्रश्न है: क्या किसी पति को फुटबाल में मशगूल होकर इतना अधिक वक्त खर्च करना चाहिए?"

बड़े नगरों में शादियां विवाह प्रासादों में होती हैं। युवा-युगल जब शादी करना तय करते हैं, तो उन्हें इस बाबत विवाह-प्रासाद में या [illegible] ीय सोवियत के तत्संबंधी विभाग को प्रार्थनापत्र देना होता है। उस [illegible] महीने की प्रतीक्षा-अवधि होती है जिसमें [illegible] एक बार। [illegible] का जायजा ले सकते कि, अ[illegible] मजबूत [illegible] निर्णय सही है या नहीं। मैं [illegible] भी [illegible] हो, तो किन्हीं विवाहित [illegible] में लेनिनग्राद विवाह-प्रासाद में।

इमारत, जो नेवा नदी के तट पर है, क्रान्ति से पहले जार के भतीजे के अधिकार में थी। संगमर्मर के फर्श वाले लंबे-चौड़े हाल सजे हुए थे, जिससे एक ऊष्म वातावरण छाया हुआ था। उसी के अनुरूप वे प्रफुल्लचित्त विवाह-वृन्द थे, जो एक के बाद एक, ऊपरी मंजिल पर बने मुख्य-मुख्य विवाह-हाल में प्रवेश के लिए प्रतीक्षारत थे। एक युगल और उसके विवाह-वृन्द के साथ मैं उस हाल में गया। अपनी बर्फ-सी सफेद ड्रेस और मलमल के बने दुल्हिन के पर्दे को ओढ़े हुए युवा वधू और उसकी बगल में एक सुन्दर सूट पहने हुए वर हाल के बीचोबीच खड़े हो गये। उनके अगल-बगल और पीछे मित्र तथा सबधी थे, जिनमें से अधिकांश गुलदस्ते लिये हुए थे। उन्ही के सामने स्थानीय सोवियत का एक प्रतिनिधि—उस दिन का 'मास्टर आफ सेरेमनी', और विवाह-प्रासाद के अधिकारी खड़े थे। प्रतिनिधि ने नागरिकों की ओर से बधाई दी, और युगल को संबोधित करते हुए कहा :

"आपको एक दृढ परिवार बनाना चाहिए। मैं आपके लिए बच्चों के साथ सुखी जीवन बिताने की कामना करता हूं। अपने मा-बाप, रिश्तेदारों और मित्रों को मत भूलना। आपको अपने मां-बाप का सम्मान करना चाहिए और याद रखना चाहिए कि किसी भी कठिनाई में वे आपकी मदद करेंगे।"

उसके बाद महिला अधिकारी ने उस युगल को बधाई देकर कहा : "आप एक नये जीवन में प्रवेश कर रहे है। झगड़ना मत। मिलजुल कर और विनम्र बन कर रहना। एक दूसरे की मदद करना और परस्पर विश्वास रखना।"

मैंने अपने दुभाषिये से पूछा कि 'विश्वास' का ठीक-ठीक अर्थ क्या है ? मुझे बताया गया कि इसमे भौतिक और आत्मिक, दोनों तरह की निष्ठा निहित है। तदुपरांत वर-वधू ने अंगूठिया बदली, विवाह रजिस्टर पर हस्ताक्षर किये और विवाह-प्रमाणपत्र लिया। उनके पीछे-पीछे उनके मा-बाप आये, जो उन दोनों का चुबन ले रहे थे। समारोह पूरा हो गया था। विवाह-वृन्द हाल मे बाहर आ गया जो हंसी और आह्लादकारी सगीत से गूंज रहा था, और विवाह पार्टी के लिए रवाना हो गया। बडे नगरों मे ये पार्टियां फ्लैट में या होटलों में होती है जबकि देहात मे मौसम अनुकूल होने पर खुले आकाश के नीचे, या फिर गाव की कुटीरों या क्लबों में, मेजें स्वादिष्ट भोजन और पेय पदार्थों से लाद दी जाती हैं। उक्रेइना होटल में जहा मैं ठहरा हुआ था, मैं नित्य ही इन पार्टियो के सुखद दृश्य देखा करता था। उनमें हंसी, गानों, नाच, संगीत और अनंत उल्लास फूट पड़ता था। सबसे मजेदार क्षण, बीच-बीच में अतिथियों द्वारा हाथ में पेय के गिलास उठा कर पूरे गले से "गोर्का" चिल्लाने के होते थे। "गोर्का" मानी "कड़वा।" "गोर्का" का अर्थ है कि अतिथि

अपने पेय तभी लेंगे जब नव दंपति एक दूसरे का चुंबन ले लें, यानी चुंबन के बाद ही, जो "कड़वे" को "मीठे" में परिणत कर देता है।

ऐसी पार्टियों में अतिथियों की औसत संख्या ३० से ४० तक होती है, जिनमें अधिकतर युगल के युवा दोस्त होते हैं। इन पार्टियों में या पूर्ववर्ती समारोहों में वैभव या दंभ का कतई प्रदर्शन नहीं होता। रसोई के उपकरण, कलाकृतियां जैसे तोहफे, जो आम तौर पर बहुत महंगे नहीं होते, इस अवसर पर दोस्तों द्वारा दिये जाते हैं। विवाह में कुल खर्च २-३ सौ रूबल से ज्यादा नहीं होता। पुराने जमाने की दहेज-प्रथा अब अकल्पनीय है। मास्को में एक विवाह समारोह में सोवियत प्रतिनिधि ने युगल के समक्ष यह पहलू बहुत ठीक ढंग से रखा, "आपको एक दूसरे से प्रेम है। और वही आपका दहेज है। इसे बर्बाद मत करना। बाकी सब समय पर मिल जायेगा।" इस प्रचलित प्रथा के अनुसार, प्रथमतः वधू को और फिर वर को, सोवियत सत्ता का एक प्रतिनिधि बधाई देता है। सोवियत लड़कियां, जो शिक्षा-प्राप्त और कमाऊ हैं, ऐसे किसी पुरुष की तलाश के लिए बाध्य नहीं हैं जो आर्थिक रूप से उन्हें सहारा दे। क्योंकि धन का प्रभाव और निजी संपत्ति या पारिवारिक दर्जे का विचार लुप्त हो गया है, उसे जीवन साथी के रूप में अपनी पसंद का पुरुष, जिसे वह सचमुच प्यार करती हो, चुनने की आजादी मिली हुई है। लेनिनग्राद विवाह-प्रासाद में किये गये एक समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण में ५०० नव विवाहित दंपत्तियों को एक प्रश्नावली दी गयी थी। इस प्रश्न का, कि "एक स्थायी और सुखी विवाह की मुख्य शर्त आपकी राय में, क्या है?" ७६.२ प्रति शत ने जवाब दिया कि प्रेम या समान विचारों के साथ प्रेम, विश्वास और दोस्ती, १३.२ प्रति शत —बराबरी और परस्पर सम्मान; ४ प्रति शत—प्रेम और प्रेम योग्य परिस्थितियां; १.६ प्रति शत प्रेम और भौतिक लाभ।

मास्को विवाह-प्रासाद में, वर येवगेनी पेत्रोव, २५ वर्षीय असेम्बली-मजदूर ने कहा कि यह एक सैनबूट शिविर में घायल हो गया था, और तभी अस्पताल में अपनी सेवा कर रही नर्स पर उसकी नजर पड़ी। उसका नाम जीना वासिल्येवा था। वह २० वर्ष की थी और नर्सों के ट्रेनिंग स्कूल में तीसरे वर्ष की छात्रा थी। "उसकी सादगी, आनंददायी मनमाप के लिए उसकी रजामंदी, और उसकी आंखों में एक कोई चीज—मानो वह हरदम कुछ नया घटित होने का इंतजार कर रही हो, और हमेशा कोई भी दयालुता का काम करने के लिए तैयार रहती थी—इन्हें मैंने तत्काल सराहा। और मैं अभी भी उसका प्रशंसक हूं। उसकी विश्वासशीलता मुझे छू गयी। मुझे लगता है कि यह बहुत पवित्र और अच्छे लोगों का ही गुण है। मैं जीना का उसके अपने अध्ययन और पढ़ने लिखने के प्रति उत्साह [illegible] पसंद करू [illegible] के लिए

लेनिनग्राद विवाह प्रासाद में, जो ग्रैंड ड्यूक रोमानोव के भूतपूर्व प्रासाद में स्थित है, एक विवाहोत्सव.

हमारे पास विषयों का अभाव नहीं है—मैं सोचता हूं कि किसी विनम्र दीखने वाली लड़की से दोस्ती रखना, उसमे प्रति दिन, प्रति घंटे से नये चमत्कारों का दर्शन होना, बेहद आनंददायी है—ऐसा जो आपको दिव्यता महसूस कराता है...मुझे पक्का यकीन है कि हम पूर्ण सुलह के साथ रहेंगे। अपनी शादी के बाद हम समुद्र तट पर सैर के लिए जा रहे हैं। अवकाश के समय मे हम संगीत सुनेंगे, पढ़ेंगे, खेलकूद में भाग लेंगे, अपने दोस्तों की खातिरदारी करेंगे। यह सब मिल कर करना अद्भुत होगा!"

वधू जीना ने पूछे जाने पर कहा : "हमारा प्रेम, परिवार बनाने की हमारी आकांक्षा विचारों के इसी साम्य पर आधारित है। हम एक ही चीज के लिए समान रूप से दुखी या सुखी होते हैं। यह मेरी राय मे, पारस्परिक समझदारी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मैं अपने समूचे जीवन को एक अनवरत उत्सव बना दूंगी। कृपया यह न सोचिये कि मैं केवल दिवा-स्वप्न देख रही हूं। ऐसा नहीं है, अगर आप सचमुच कठोर प्रयत्न करें तो आप ऐसा कर सकते हैं। बहुत कुछ औरत पर निर्भर करता है। मसलन, सुबह को लीजिए। यह उदास और उबाऊ हो सकती है, यह सुखद और प्रसन्नतादायक भी हो सकती है। मिलजुलकर आप दमकते सूर्य के बारे में खुश हो सकते हैं, या शाम की कोई योजना बना सकते हैं। आप मेज इस तरह सजा सकती हैं कि वह सुंदर दीखे, अपने पति से कुछ आनंददायक बात कह सकती है, मुस्कराते हुए उसे काम के लिए विदा कर सकती है। खैर, काफी कुछ पति पर भी निर्भर करता है। मुझे उम्मीद है कि मेरा पति कभी अपने बुरे मूड मुझ पर नहीं उतारेगा। लेकिन इसके लिए साहस होना चाहिए। मैं मेहनत से कतराने वाले पुरुष पसंद नहीं करती। और, प्रसंगवश, येवगेनी की एक खूबी जिसने मुझे आकृष्ट किया था, यह है कि वह हर-फन-मौला है। उसे काम करते देख कर खुशी होती है। खेलकूद शिविर मे देखभाल की खामियां स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं, क्योंकि बच्चे चाहें जो करने मे समर्थ होते हैं, अन्य उतने चतुर नहीं होते। मुझे खुशी है कि मेरा पति उक्त दूसरी किस्म का नहीं है। मुझे विश्वास है कि हमारा संगी जीवन अच्छा होगा। हम दोस्त हैं, और हमारे विचारों तथा राय में समानता सुख का संकेत करती प्रतीत होती है।"

दंपतियों के एक चयनात्मक सर्वेक्षण ने रोचक आंकड़े उद्घाटित किये। मालूम हुआ कि २१ प्रति शत युवा दंपति सर्वप्रथम अपने काम के स्थानों मे परस्पर निकट आये थे; १७ प्रति शत अध्ययन करते समय; ३३ प्रति शत पार्टियों, नृत्य, क्लबों, स्टेडियमों और अन्य मनोरंजन के स्थानों पर; ५ प्रति शत अवकाश केन्द्रों में; ३ प्रति शत संबंधियों के जरिये और २ प्रति शत अचानक मिलने पर। इस सर्वेक्षण ने यह भी दिखाया है कि शादियां एक वर्ष से अधिक

हैं कि उन्हें बांधने वाली चीज उनकी रुचियों का साम्य ही है, न कि मात्र आकर्षण...।

"एक युवक और युवती जब सारी जिंदगी साथ-साथ बिताने का निश्चय करते हैं, उसके बाद क्या होता है? उन्हें अपने मां-बाप को बतलाना होता है—यह हमारे देश में सर्व स्वीकृत है कि उनके विचारों पर ध्यान दिया जाय। अभी भी मध्य-एशिया और उक्रेन में ऐसे कुछ स्थान हैं जहां वैवाहिक रीतियां सुरक्षित हैं; जब युवा युगल विवाह करने का निश्चय करता है, तो युवक के मां-बाप लड़की के मां-बाप के पास दूत भेजते हैं। लेकिन आम तौर पर, युवा लोग ही अपने भाग्य का निर्णय करते हैं, और उन्हें इसके लिए पूरे अधिकार प्राप्त है। सर्वप्रथम, वधुओं की औसत आयु, जो कि २४ वर्ष, और वरों की, २६ वर्ष, उन्हें जीवन के बारे में कुछ विचार बना लेने का पर्याप्त अवसर देती है; प्रेम, विवाह और परिवार के बारे में उनकी अपनी मान्यताएं होती हैं। दूसरे, युवाजन तब तक कोई न कोई पेशा या धंधा अपना चुके होते हैं, और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हैं...लेकिन छात्रों में कम उम्र में विवाहों के मामलों में मां-बाप की सहायता आवश्यक होती है, पर इसे भी नौजवान लोग और मां-बाप एक अस्थायी चीज मानते हैं: जब युवा [illegible] अपनी शिक्षा पूरी कर लेते हैं, अपनी डिप्लोमा और कार्ड पा लेते [illegible] [illegible]ने पैरों खड़े होने में समर्थ हो जाते हैं।"

दोस्ती थी, और इससे वह उसकी ओर खिंची। अंत में जब उन्होंने सगाई कर ली, तो उसके युवक मित्रों ने पूछा : "उसमें आखिर तुम्हें क्या ऐसा मिला है?" उसका जवाब था, "मुझे एक पुरुष मिल गया है।"

मैंने पूछा, "क्या उन दोस्तों ने आपकी बात समझी ?"

उसने कहा, "कुछ ने समझी और शायद कुछ ने नही। मेरा पति शरीर मे बहुत सुंदर नही है और यह एक अनुकूल बात थी; क्योंकि मेरा विश्वास था कि जो पुरुष बहुत सुंदर होते हैं, वे अन्य बातों में उतने भले नही होते।"

मैंने टोका, "और औरतें ?"

उसने जवाब दिया, "वही।"

मैंने पूछा कि उनका यह विचार कैसे और क्यो बना?, उन्होंने जवाब दिया, "मैं उस समय २५ वर्ष की हो चुकी थी। मैंने जीवन से और साहित्य से सीखा था। लेकिन फिर भी मुझे भय था कि मेरी शादी, जो सिर्फ दो-ढाई महीने बाद हो गयी थी, बहुत जल्दी हो गयी है और शायद अंततः वह सफल न हो। लेकिन समय ने सिद्ध कर दिया कि मेरा भय गलत था। अपने विवाहित जीवन के ८ वर्षों मे हमारा आनंद गहरा ही होता गया है और मैं (इस धरती पर) सबसे सुखी औरत हूं..."

उन्होंने 'इस धरती पर' शब्द उच्चरित नही किये और लजाकर अपना वाक्य अधूरा छोड दिया। मैं जब उस प्रोफेसर से मिला था, वह एक विशेष कार्य पर, पति से बहुत दूर, रह रही थी। उसने बताया कि जब उनकी शादी हुई ही थी, वह अपने पति से शाब्दिक प्रेम-अभिव्यक्तिया सुनना चाहती थी, और उसका पति उसे इसमें निराश ही करता। वह कहता, "तुम शब्द क्यों चाहती हो? क्या तुम इसे महसूस नही करती ?" पर अब जब वे साथ नही थे, वह अपनी पत्नी को अद्भुत पत्र लिख रहा था, जो अत्यधिक मधुर और सुखद थे। वह चाहती थी कि समय पंख लगाकर उड़ जाय ताकि उसका वह विशेष कार्यकाल समाप्त हो जाये और वह वापस अपने पति के पास पहुंच जाय।

मेरे अनुरोध करने पर २२ वर्ष की एक युवा स्नातिका ने भी मुझे अपनी कहानी सुनायी। उसने कहा :

"मेरी शादी सिर्फ दो साल पहले हुई थी। जब मैं १७ वर्ष की थी, मैं एक कोम्सोमोल शिविर मे थी। वही मेरी मुलाकात मेरे जीवन-संगी से हुई। वह हमारा ग्रुप लीडर था। वह सभी लडकियों से 'आप' कहता था, मगर मुझे 'तू'। यह मुझे कुछ असामान्य लगा और मैंने पूछा कि वह मुझसे 'तू' कहकर क्यों बोलता है। उसने जवाब दिया कि उसे ठीक-ठीक पता नही, लेकिन बाद मे विवाह के बाद उसने यह भेद खोला कि मेरी गंभीर और निष्ठावान चाल-ढाल से वह मेरी तरफ आकृष्ट हो गया था और उसी कारण

हैं कि उन्हें बांधने वाली चीज उनकी रुचियों का साम्य ही है, न कि मात्र आकर्षण...।

"एक युवक और युवती जब सारी जिंदगी साथ-साथ बिताने का निश्चय करते हैं, उसके बाद क्या होता है ? उन्हें अपने मां-बाप को बतलाना होता है—यह हमारे देश में सर्वस्वीकृत है कि उनके विचारो पर ध्यान दिया जाय। अभी भी मध्य-एशिया और उक्रेइन में ऐसे कुछ स्थान हैं जहां वैवाहिक रीतिया सुरक्षित है; जब युवा युगल विवाह करने का निश्चय करता है, तो युवक के मा-बाप लड़की के मा-बाप के पास घटक भेजते हैं। लेकिन आम तौर पर, युवा लोग ही अपने भाग्य का निर्णय करते हैं, और उन्हें इसके लिए पूरे अधिकार प्राप्त है। सर्वप्रथम, वधुओं की औसत आयु, जो कि २४ वर्ष, और वरों की, २६ वर्ष, उन्हें जीवन के बारे मे कुछ विचार बना लेने का पर्याप्त अवसर देती है;-प्रेम, विवाह और परिवार के बारे मे उनकी अपनी मान्यताएं होती हैं। दूसरे, युवाजन तब तक कोई न कोई पेशा या धंधा अपना चुके होते हैं, और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हैं...लेकिन छात्रो मे कम उम्र मे विवाहों के मामलों में मा-बाप की सहायता आवश्यक होती है, पर इसे भी नौजवान लोग और मा-बाप एक अस्थायी चीज मानते है : जब युवा दम्पति अपनी शिक्षा पूरी कर लेते हैं, अपनी डिप्लोमा और कार्य पा लेते है, तो वे अपने पैरो पर खड़े होने मे समर्थ हो जाते है।"

एक महत्वपूर्ण घटना यह है कि 'अंतर्जातीय' विवाहों की संख्या बढ रही है, क्योंकि जनता के दिमाग मे अब धार्मिक और राष्ट्रीय पूर्वग्रह नही रह गये हैं। ताशकद और समरकद मे ऐसे जोड़ों की तादाद २० प्रति शत है। स्थानीय एशियाई लोगो का जातिगत रूप से सोवियत सघ के योरपीय हिस्से से आये लोगो के साथ विवाह की संख्या ७ प्रति शत है। लेनिनग्राद में १७.५ प्रति शत शादियां 'अतर्जातीय' होती हैं।

मैंने एक प्रोफेसर से मुलाकात की : वह ३०-३२ वर्ष की, शालीन वेश-भूषा में, जीवंत और सुदर महिला थी। सोवियत जीवन के बारे मे अपनी बातचीत के दौरान मैंने पूछा कि वह बतायें कि उन्होने किस तरह विवाह किया। किंचित हिचकिचाहट के बाद उन्होने जवाब दिया और यह कहते हुए शुरू किया कि शायद किसी तीसरे व्यक्ति के लिए कहानी दिलचस्प न हो। अपने पति से पहली बार उसकी मुलाकात दोनों के एक मित्र के घर हुई थी। उसे जरा-भी असाधारणता महसूस नही हुई, मगर वह (पति) आकर्षित होने लगा और वे उसके बाद कई बार मिले। वह ग्रेजुएट था, और वह भी। धीरे-धीरे उसने अपने आप में एक परिवर्तन लक्षित किया। स्त्रियों की कोमल भावनाओं का वह बेहद ख्याल रखता था, और बातचीत मे उसकी ईमानदारी जैसे पारदर्शी

दीखती थी, और इससे वह उसकी ओर खिची। अंत में जब उन्होंने सगाई कर ली, तो उसके युवक मित्रो ने पूछा : "उसमें आखिर तुम्हें क्या ऐसा मिला है?" उसका जवाब था, "मुझे एक पुरुष मिल गया है।"

मैंने पूछा, "क्या उन दोस्तों ने आपकी बात समझी ?"

उसने कहा, "कुछ ने समझी और शायद कुछ ने नही। मेरा पति शरीर मे बहुत सुंदर नही है और यह एक अनुकूल बात थी; क्योंकि मेरा विश्वास था कि जो पुरुष बहुत सुदर होते हैं, वे अन्य बातों मे उतने भले नही होते।"

मैंने टोका, "और औरतें ?"

उसने जवाब दिया, "यही।"

मैंने पूछा कि उनका यह विचार कैसे और क्यो बना ?, उन्होंने जवाब दिया, "मैं उस समय २५ वर्ष की हो चुकी थी। मैंने जीवन से और साहित्य मे सीखा था। लेकिन फिर भी मुझे भय था कि मेरी शादी, जो सिर्फ दो-ढाई महीने बाद हो गयी थी, बहुत जल्दी हो गयी है और शायद अंततः वह सफल न हो। लेकिन समय ने सिद्ध कर दिया कि मेरा भय गलत था। अपने विवाहित जीवन के ८ वर्षों में हमारा आनंद गहरा ही होता गया है और मैं (इस धरती पर) सबसे सुखी औरत हूं..."

उन्होने 'इस धरती पर' शब्द उच्चरित नही किये और लजाकर अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया। मैं जब उस प्रोफेसर से मिला था, वह एक विशेष कार्य पर, पति से बहुत दूर, रह रही थी। उसने बताया कि जब उनकी शादी हुई ही थी, वह अपने पति से शाब्दिक प्रेम-अभिव्यक्तियां सुनना चाहती थी, और उसका पति उसे इसमे निराश ही करता। वह कहता, "तुम शब्द क्यों चाहती हो ? क्या तुम इसे महसूस नही करती ?" पर अब जब वे साथ नहीं थे, वह अपनी पत्नी को अद्भुत पत्र लिख रहा था, जो अत्यधिक मधुर और सुखद थे। वह चाहती थी कि समय पंख लगाकर उड जाय ताकि उसका वह विशेष कार्यकाल समाप्त हो जाये और वह वापस अपने पति के पास पहुंच जाय।

मेरे अनुरोध करने पर २२ वर्ष की एक युवा स्नातिका ने भी मुझे अपनी कहानी सुनायी। उसने कहा :

"मेरी शादी सिर्फ दो साल पहले हुई थी। जब मैं १७ वर्ष की थी, मैं एक कोम्सोमोल शिविर मे थी। वही मेरी मुलाकात मेरे जीवन-संगी से हुई। वह हमारा ग्रुप लीडर था। वह सभी लडकियो से 'आप' कहता था, मगर मुझे 'तू'। यह मुझे कुछ असामान्य लगा और मैंने पूछा कि वह मुझसे 'तू' कहकर क्यों बोलता है। उसने जवाब दिया कि उसे ठीक-ठीक पता नहीं, लेकिन बाद मे विवाह के बाद उसने यह भेद खोला कि मेरी गंभीर और निष्ठावान चाल-ढाल से वह मेरी तरफ आकृष्ट हो गया था और उसी कारण

वह मेरे प्रति सम्मान भाव रखने लगा था। उसने कहा कि 'मेरी गहरी आंखों और सौम्य मुस्कान ने' भी उसे मुग्ध किया था। यह सच है कि मैं असाधारण रूप से गंभीर किस्म की हूं, अपने बचपन से ही। उससे जाहिर हो जाता है कि मैं भी उसके प्रति आकृष्ट क्यों हुई, क्योंकि मैंने उसे हमेशा सच बोलते देखा था। मेरी अनुमति से वह गांव में हमारे घर भी आया, लेकिन कुछ महीने बाद ही। वहां उसने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया और मैंने सिर हिला दिया। पर वह तीन साल के सैन्य प्रशिक्षण पर जा रहा था। उसने पूछा कि क्या मैं तीन साल इंतजार कर सकूंगी। मैंने कहा, 'निश्चय ही! यह बहुत आसान है।' मगर—यह लंबी प्रतीक्षा—बेहद कठिन निकली। सिर्फ वे पत्र ही जो हम एक-दूसरे को लिखते थे, और मैं कभी-कभी एक दिन में दो-दो, तीन-तीन खत लिखती थी, उन्होंने मुझे जीवित रखा।"

मैंने उससे पूछा कि अब वह कैसा अनुभव करती है। उसने जवाब दिया, "हम बहुत सुखी हैं। अब हम महसूस करते हैं कि एक-दूसरे को कुछ समय तक जान लेना बेहतर होता है।" मेरे अंतिम प्रश्न, "क्या तुम लोगों में कलह होती है?", पर वह मुस्करायी और बोली, "हां, अक्सर ही, और वह भी वाहियात चीजों पर; और फिर मैं सुलह के लिए दौड़ पड़ती हूं। मैं अपने पति को गुदगुदाती हूं और वह पिघल जाता है। हम जोर का ठहाका लगाते हैं और फिर अमूमन अच्छे पकवान खाते हैं जो मैं तैयार करती हूं।"

पर सभी शादियां सुखद दिशा में नहीं बढ़ती। १९६० के आंकड़ों के मुताबिक, सोवियत संघ में हर दस शादी में से एक का तलाक होता है। लेनिनग्राद नगर कोर्ट के दस्तावेजों के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि १७ प्रति शत तलाक पति या पत्नी की बच्चे जन्म देने की अक्षमता अथवा यौन असंतुष्टि के कारण होते हैं; २८ प्रति शत व्यभिचार के फलस्वरूप; २१ प्रति शत प्रेम के अभाव और स्वभावों के वैषम्य के कारण, लगभग १७ प्रति शत इसलिए कि पति युद्ध से नहीं लौटा; और पांच प्रति शत पुराने परिवार में लौट जाने की इच्छा के कारण (ऐसे अधिसंख्य मामलों में, युद्ध के दौरान खोये हुए परिवार फिर से मिल गये)।

अन्य कारण हैं: पति की अभद्रता, पत्नी की घर की देखभाल में अक्षमता, फ्लैटों और पैसे पर कलह; मां-बाप से कलह। ६० प्रति शत तलाक की दरखास्तें पुरुषों की ओर से और ४० प्रति शत औरतों की ओर से आती हैं। सोवियत परिवार में संबंधों में व्याप्त अधिक कोमलता उन्हें और भी भेद्य बना देती है, और यह ऐसे नये अंतर्विरोधों का स्रोत है जो पुराने परिवार में अज्ञात थे। लापरवाही, पति या पत्नी की अपर्याप्त चतुराई, जोकि पुराने पितृ सत्तात्मक परिवार में शायद ही कोई महत्व रखती रही हो, आज दोनों के बीच एक गंभीर

गलतफहमी को जन्म दे सकती है। इस विषय पर प्रश्नावलियों के जवाब मे अनेक तलाकशुदा औरतो ने अपने पतियो के उदासीन, लापरवाह दृष्टिकोण की शिकायत की है। और स्वभावों के बेमेल-पन को अब तलाक के लिए अधिकाधिक कारण बताया जाने लगा है। आधुनिक परिवार मे एक और अंर्तविरोध वैवाहिक संबंधो के अधिक घनिष्ठ पहलू से जुडा हुआ है। कभी-कभी लड़के और लड़किया सोचती हैं कि उनकी आसक्ति—सच्ची आत्मिक घनिष्ठता से रहित मात्र एक शारीरिक आकर्षण—ही सच्चा प्यार है। शादी में बंधकर—जो अक्सर जल्दबाजी में किया जाता है—वे जल्द ही एक दूसरे से ऊब जाते हैं और तलाक चाहते हैं।

सोवियत संघ मे कानून तलाक की अनुमति देता है। लेकिन परिवार को मजबूत बनाने, और मुख्यत:, महिलाओं तथा बच्चों के हितो की रक्षा के लिए, कानून ने कुछेक नियामक सिद्धांत शादी के विघटन के लिए बना रखें है। तलाक की कार्रवाई, जब किसी दंपति के नाबालिग बच्चे होते हैं, जिला (या नगर) की जन अदालत मे होती है। अदालत दपंति मे समझौते के लिए कदम उठाती है। यदि अदालत यह पाती है कि दोनों का साथ रहना असंभव है, तो शादी भंग कर दी जाती है। जिन युगलों के बच्चे बालिग होते हैं वे सिविल रजिस्ट्रार के आफिस मे आपसी सहमति से अपना विवाह भग कर सकते हैं। शादी का बंधन तोड़ते वक्त अदालत, आवश्यक होने पर नाबालिग बच्चों या अपग पत्नी के हितों की रक्षा के लिए कदम उठाती है।

परिवार

पिछले जमाने मे ऐसे लोग हुआ करते थे जो यह प्रचार करते थे कि कम्युनिस्ट लोग विवाह-प्रथा को समाप्त और परिवार को नष्ट करना चाहते हैं। सोवियत संघ में वास्तविक जीवन के विकासक्रम ने उनका मुंह बद करा दिया है, क्योंकि कुख्यात प्रचार "महिलाओं के राष्ट्रीयकरण" का प्रचलन करने के बजाय समाजवादी व्यवस्था ने परिवार को एक अभूतपूर्व रूप मे मजबूत और समृद्ध किया है। रूस के सभी भागों में अनेक देशव्यापी दौरों के बाद मौरिस हिन्डस इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि, "दुनिया के अन्य किसी भी देश मे संस्था के रूप मे परिवार इतना खुले तौर पर और मुखर रूप में प्रभामडित नही है जितना कि आज के रूस मे।" आगे उन्होंने जोडा, यहा "परिवार स्वीकृत, पूजित और महिमा-मडित है।"

सोवियत संघ मे इस विचार को सही नही माना जाता कि औद्योगीकृत समाज और परिवार के आत्मीय संसार के बीच एक अपरिहार्य अर्तविरोध होता है, जो संबंध सूत्रों को ढीला कर देता है और शायद परिवार को भी

अतत. विघटित कर देता है। पिछले पांच दशकों के विकास क्रम मे सोवियत-परिवार में गहन परिवर्तन आये हैं, मगर ये परिवर्तन ज्यादातर जारशाही जमाने के अवाछनीय दुर्गुणों को नष्ट करने वाले परिवर्तन रहे हैं।

आधुनिक सोवियत परिवार में, जिसकी कुल सख्या ६ करोड़ है, दोनों भागीदारों की संपूर्ण समानता की ओर, पारिवारिक संबधों के जनवादीकरण की ओर, एक सुनिश्चित रुझान है। स्त्रियों ने लगभग अपने पतियो के बराबर की उच्च पेशेगत और सास्कृतिक हैसियत प्राप्त कर ली है, और स्वभावतः ही पत्नी के अधिकार-प्रभाव में वृद्धि हुई है। आर्थिक श्रेष्ठता अथवा शारीरिक जोर-जुल्म पर आधारित पारिवारिक निरकुशता अथवा अत्याचार का आज कोई सवाल ही नही है। विवाह में प्रत्येक भागीदार के नैतिक अधिकार और पारिवारिक संबधो मे निहित नैतिक समादेश की भूमिका अब अधिकाधिक बढ रही है। समाजशास्त्रीय अन्वेषणो ने दिखा दिया है कि अब अनेक परिवार ऐसे हैं विशेष रूप से मजदूरों और बुद्धिजीवियों मे, जिनमें पति और पत्नी की बात समान रूप से चलती है। यदि पुरानी परपरावश पुरुष को परिवार का कर्ता माना भी जाता है, तब भी उसकी 'हुकूमत' अब सर्वोपरि या अनिवार्य नही रह गयी है, और पारिवारिक बजट, अवकाश, बच्चो की शिक्षा इत्यादि से सबद्ध सभी निर्णयों में पत्नी और अन्य वयस्क पारिवारिक सदस्यो का महत्वपूर्ण प्रभाव रहता है। हाल के समाजशास्त्रीय सर्वेक्षणों से पता लगा है कि जिन परिवारो का सर्वे किया गया था, उनमें से ३० प्रति शत में स्त्री—पत्नी अथवा युवा युगल मे से किसी की मा—ही परिवार प्रमुख है। यह भी देखा गया है कि ५० प्रति शत दंपति के शैक्षिक स्तर एक से हैं, और २० प्रति शत परिवारो में पत्नियां ज्यादा शिक्षित है। आय के स्तर मे भी लगभग समता है। चूकि आयु, शिक्षा और योग्यताओं के मामले मे पति-पत्नियो में बहुत ज्यादा अतर नही है, उनकी आय भी प्राय: समान रहती है। दस प्रति शत पत्निया अपने पति से ज्यादा कमाती है। इसका स्वाभाविक परिणाम यह है कि पारिवारिक संबंधों मे रुपये पैसो के ख्यालात तेजी से गायब हो रहे है और इनकी जगह, एक सच्चा भावनात्मक लगाव और समान हितो का बधन दृढता से स्थापित हो रहा है।

परिवार की भूमिका का कायाकल्प हो गया है। नैतिकता और परिवार नामक पुस्तक मे एस. लाप्तेनोक ने इन शब्दों मे इस मुद्दे पर जोर दिया है: "समाजवादी समाज मे पति और पत्नी के बीच प्रेम स्त्री-पुरुष की पूर्ण समता, एक दूसरे की चिंता, बच्चों के पालन-पोषण में समान उत्तरदायित्व, तथा सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन मे परस्पर सहायता तथा सहयोग पर आधारित होता है; कम्युनिस्ट नैतिकता करोडो लोगो का मानदड बन रही

हैं।" और एडवर्ड कोस्त्यारिकिन लिखते है : "स्त्रियों की स्वतन्त्रता प्रेम में भी *उसी प्रकार सच्ची पवित्रता संभव बनाती है, जिस प्रकार कि वह स्त्रियों को* गलाजत, नाबराबरी और प्रच्छन्न घरेलू दासता से मुक्त करती है।" सोवियत संघ नामक पत्रिका में एक लेखक वी. ल्याशोंको ने इसे सूत्र रूप में यो पेश किया है : "परिवार एक संपूर्ण की, दूसरे शब्दो मे समाज की, छोटी-सी इकाई है: एक सुखी समाज का अर्थ है एक सुखी परिवार, और सुखी परिवार यानी सुखी समाज।"

नौजवानो के दैनिक पत्र कोम्सोमोल्स्काया प्रावदा ने प्रेम, विवाह और सेक्स के सबंध मे अपने पाठकों से १२ प्रश्न पूछे थे, और १४,००० व्यक्तियों से उसे उत्तर मिले। निम्नलिखित कुछ जवाब प्रातिनिधिक हैं :

मास्को के एक इजीनियर कोन्स्तान्तिन वसिल्येव : "सोवियत परिवार गहन, पारस्परिक भावना पर आधारित है। यह सबसे महत्वपूर्ण है। मेरी पीढ़ी के लोग सुविधामूलक विवाहो से नफरत करते हैं, जिन्हें कि हमारे समाज ने अतीत से विरासत में पाया है।"

एक अफसर विक्तोर बोगदानोविच : "सोवियत परिवार सर्वोपरि रूप से एक सुखद, उज्ज्वल भविष्य पर अपनी निष्ठा के कारण ही दृढ है।"

छात्र दिमत्री सेमेंकोव : "ऐसा मनुष्य, जो कम्युनिस्ट समाज के सुयोग्य हो, उसे विकसित करने की चिंता ही सोवियत परिवार का मुख्य लक्षण है।"

मास्कोवासी तामारा विनोग्रादोवा, जिसने अपने पति को तलाक दे दिया था क्योंकि वह जीवन के बारे में एक संकीर्ण व्यक्तिवादी दृष्टिकोण वाला साबित हुआ था : "सोवियत परिवार का आधार है प्रेम, समानता, परस्पर सहायता और समान विचार।"

किएव नगर का ड्राइवर : "प्रेम करना—इसका अर्थ एक दूसरे की ओर देखना नहीं, बल्कि एक ही दिशा में देखना होता है।"

परिवार मे पुरुषो और स्त्रियो के बीच समानता बढ़ रही है, इसका प्रमाण *यह है कि घरेलू कामकाज में पुरुष और बच्चे स्त्रियों का हाथ बटाते हैं।* जाच-पडताल के बाद यह पता लगा है कि विवाहित पुरुष हफ्ते मे घरेलू कामों पर कोई दस घंटे खर्च करता है, जोकि पत्नी द्वारा समर्पित समय का लगभग एक-तिहाई है। बच्चे खरीदारी और सब्जी छीलने, बर्तन धोने जैसे छोटे-मोटे रसोई के काम मे मदद करते हैं। सोवियत महिला समिति के कार्यालय में मैंने समिति की एक उत्साही कार्यकर्ता, २८ वर्षीया इरीना कारापेनियान्स से पूछा, कि जब वह शाम को घर लौटती है तब क्या पति उसके काम में हाथ बटाता है ? वह मुस्करा दी और कुछ गर्व के साथ बोली : "हमारे परिवार में अब एक नया सदस्य है—हमारा बच्चा। तो जब मैं बच्चे की देखभाल करती

हूं, मेरा पति रसोईघर का काम करता है।" उसने मुझसे प्रांजल हिन्दी में बात की। उसका पति, जो उससे २ वर्ष छोटा है, चीनी व्याकरण का व्याख्याता है।

घरेलू कामकाज को हल्का बनाने के लिए सरकार सभी संभव उपाय करती है। बिजली और गैस, रेफ्रिजिरेटर, कटर, मिक्सर, बर्तन धोने वाली मशीनें, वैक्यूम क्लीनर्स, फर्श पर पालिश करने वाली और कपड़े धोने वाले मशीनों, जैसे गृहस्थी के उपकरणों ने स्त्रियों का काम हल्का कर दिया है। ये चीजें खरीदी या किराये पर ली जा सकती हैं। स्त्रियों को घरेलू काम के एक अंश से मुक्त कराने के लिए समाज सेवा केन्द्र खोले गये हैं और हाल के वर्षों मे इनकी संख्या तेजी से बढी है। ये केन्द्र कपड़ों की ड्राइक्लीनिंग, रगाई, घरेलू उपकरणों की मरम्मत, चमड़े के सामान और फर्नीचर की पालिश, कपड़ों की मरम्मत, सिलाई, टेलीविजन सेट, रेडियो सेट और वाद्य यंत्रों इत्यादि को ठीक करने का काम करते हैं। लेकिन सबसे बड़ा आराम मिला है रसोई के उबाऊ काम के मामले मे।

ऐसे सार्वजनिक कैंटीन, रेस्तरा, कैफे बनाये गये हैं जो सुखद और स्वच्छ वातावरण में, लोगों की पहुंच के भीतर कीमत पर, बढ़िया भोजन देते हैं। इस वक्त ५ करोड़ लोग—देश की आबादी के एक-चौथाई से कुछ ही कम—इन स्थानों पर खाना खाते हैं। इन सेवा संस्थाओं ने एक और कदम बढ़ाया है—'होम किचेन' की स्थापना की गयी है। इनमें कोई भी बना बनाया खाना खरीद कर घर ले जा सकता है। भोजन की मेज पर सजाने के लिए इसे केवल चद मिनिट गरम करना पड़ता है। कुछ लोग स्वयं ही खाना बनाना पसंद करते हैं। उन्हें आधा पका हुआ भोजन भी उपलब्ध है। ऐसे कैंटीन बहुमंजिली इमारतों में भी खोले गये हैं। १९७० में समाप्त होने वाली पचवर्षीय योजना ने इन सेवा सुविधाओं में २.५ गुना, और ग्रामीण समुदायों मे तिगुने से अधिक, वृद्धि का लक्ष्य रखा था। राज्य की ओर से उठाये जाने वाले ये कदम स्त्रियों को अवकाश का अधिक समय देते है, जिसका वे भरपूर फायदा उठाती हैं।

सोवियत परिवारों मे निजी पुस्तकालय रखने की परपरा बन गयी है, जिनमे से अनेक मे कई हजार पुस्तकें होती हैं। सोवियत नागरिक अपने निजी पुस्तकालयों के लिए प्रति वर्ष लगभग १२० करोड़ किताबें खरीदते हैं। लिखाचेव मोटर वर्क्स, मास्को, के २५६ मजदूरों को दी गयी प्रश्नावली के उत्तरों से पता लगा है कि लगभग ५० प्रति शत परिवार पारिवारिक तथा दैनदिन कार्यों को प्राथमिकता देते हैं, ४२ प्रति शत दैनंदिन कार्यों और सामाजिक महत्व के कार्यों को, और ८ प्रति शत मुख्यतः सामाजिक महत्व के

कार्यों को। जाहिर है कि विचाराधीन समूह की व्यक्तिगत दिलचस्पियां काम, सामाजिक जीवन, शिक्षा और कलाओं के कार्यों मे घुली-मिली हैं।

स्त्रियों के प्रश्न पर दृष्टिकोण के बारे में, नोवोस्ती प्रेस एजेंसी के एक लेखक का कहना है :

"स्त्रियों के प्रति आदर-भाव का एक विशेष दृष्टिकोण किसी भी तरह से 'अबलाओं' के प्रति दया का बोधक नही है। उनके अबलापन की युगों-पुरानी मिथ हमारी स्त्रियों के कार्यों और उपलब्धियों से कभी की टूट चुकी है, जिन्होने स्वाधीनता, स्वतंत्रता और जीवन के सभी क्षेत्रों में रचनाशीलता उपलब्ध कर दिखायी है। बहरहाल, कुदरत ने जीवन के प्रधान नियम को पूर्ण करने का दायित्व, यानी मानव जाति को जारी रखने का दायित्व स्त्रियों को सौंपा है। उसे मातृत्व का उदात्त दायित्व सौंपा गया है। मातृत्व केवल महान आनंद और सुख ही नहीं, एक अतुलनीय विकट कार्य भी है, जिसे स्त्रियां निस्वार्थ भाव से पूरा करती हैं। इस मामले में माता की भूमिका की तुलना पिता की भूमिका से कतई नहीं हो सकती।

"पुरुष कभी भी स्त्री के ऋण से उऋण नही हो सकता, और वह अपने सच्चे प्रेम, सम्मान और मित्रतापूर्ण सहयोग से, घरेलू कामकाज मे हिस्सा लेकर, बच्चों के पालन-पोषण मे मदद करके, केवल अंशतः ऋण अदा कर सकता है। मां-बाप का पारस्परिक साहाय्य, आपस में अपने-अपने लायक कर्तव्य बराबर-बराबर बांट लेने की उनकी आकांक्षा, हमारे देश मे सुदृढ और सुखी परिवार का मेरुदंड है।"

बच्चे

सोवियत संघ जाने वाला कोई भी व्यक्ति जल्दी ही जान जाता है कि बच्चों को एक अत्यंत विशिष्ट दर्जा प्राप्त है। मानों इसे स्वीकार करते हुए ही **सोवियत भूमि** पत्रिका ने संपादकीय में एक बार लिखा था : "बच्चे ! वे एक-मात्र विशेष सुविधा प्राप्त वर्ग हैं। हां, ऐसा है। इस 'वर्ग' के सुख के लिए ही उनके पिता और पितामहों ने बैरिकेडों पर लड़ाई की थी और १६१७ में शीत प्रासाद पर धावा किया था। इस 'वर्ग' के सुख के लिए ही देश के दसियों लाख बेटों और बेटियों ने १६४१-४५ के दौरान 'भूरे प्लेग' के खिलाफ आमरण युद्ध किया था। इसी 'वर्ग' के सुख के लिए समूचा देश कम्युनिज्म के निर्माण के लिए, उन सबकी रक्षा के लिए जो आधी सदी के श्रम और संघर्ष से उप-लब्ध हुआ है, कठोर श्रम कर रहा है।"

एक दूसरे कोण से प्रावदा ने लिखा था : "जिस स्त्री को कोई बच्चा नही है वह हमारी दया की पात्र है, क्योंकि वह जीवन के पूर्ण आनंद से वंचित

टुंड्रा के रेण्डियर-प्रजनन

है।" ऐसा दृष्टिकोण ही बच्चो के लालन-पालन में मां-बाप की ओर से उन्मुक्त परवरिश और सरकार की ओर से अपार सुविधाओं का स्रोत है। जिस स्त्री के बच्चे होते हैं उसे सोवियत संघ में असीम सम्मान मिलता है। यह सम्मान भाव प्रथमतः उन सुविधाओ में व्यक्त होता है जो अनेक बच्चो वाली मा को दी जाती हैं। जब नये फ्लैटों का आवंटन होता है, तो वे अमूमन पहली पात मे होती हैं। चौथे और उसके बाद प्रत्येक बच्चे का जन्म उनकी माता को विशेष सहायता का अधिकारी (२० से २५० रूबल तक) बनाता है। इसके अतिरिक्त, जिस स्त्री के चार या अधिक बच्चे होते है उसे राज्य की ओर से एक खास मासिक वृत्ति मिलती है। जिन स्त्रियो ने अनेक बच्चो को जन्म दिया और पाला-पोसा है, उन्हें सरकारी पुरस्कार दिये जाते है। लगभग ८०,००० सोवियत नारियों को, जिन्होने दस या अधिक बच्चो को पाला-पोसा है, 'वीर माता' के सम्मानजनक अलकरण दिये जा चुके है तथा विशिष्ट सम्मानो से उन्हे पुरस्कृत किया जा चुका है। उन लाखो स्त्रियो को 'मातृ गौरव' अलंकरण अथवा 'मातृत्व' पदक प्रदान किये गये हैं जिनके पाच या अधिक बच्चे है। १९६६ मे ३५,४१,००० माताओं को चौथा या उसके बाद बच्चों को जन्म देने पर सरकारी मासिक वृत्तिया दी जाती थी; और दो बच्चो वाली ५,२४,००० माताओ को तीसरे बच्चे के जन्म पर सरकारी अनुदान मिल रहे थे। उस वर्ष के दौरान १,१०० करोड़ रूबल से अधिक धनराशि राज्य, प्रतिष्ठानो, सामूहिक फार्मों और संगठनों द्वारा इसलिए आवटित की गयी थी कि वह बड़े परिवारों और प्रसूति अवकाश के लिए भत्तों के रूप में, और बच्चों की संस्थाओं के रख-रखाव के लिए व्यय की जा सके।

स्कूल-पूर्व संस्थाओ का एक सुसगठित जाल देश के दैनदिन जीवन का एक अभिन्न अग बन चुका है। इसके बगैर कोई किसी रोजगारशुदा मां के जीवन की कल्पना भी नही कर सकता। १·२ करोड़ से अधिक नन्हें बच्चे और बच्चिया इस समय देश भर में चल रहे क्रेशे (शिशुगृहों) और किंडरगार्टन (शिशु विद्यालयों) में परवरिश पा रहे है। दरअसल, केवल इतना ही नही होता कि मां काम पर गयी है, अतः उन बच्चों की देखभाल हो रही है, बल्कि उनकी सचमुच परवरिश हो रही है, उन्हें वह सब कुछ दिया जाता है जो कि शायद एक खाता-पीता परिवार भी अपने बच्चे को न दे सके—जिसमें एक सही और नियमित आहार, स्वास्थ्य सुधार की ओर शारीरिक व्यायाम की व्यवस्था, कला और संगीत में सामान्य शिक्षा के मूल तत्व आदि सभी कुछ शामिल है। राज्य ग्रीष्म शिविरों और स्वास्थ्य केन्द्रों में उनके मनोरजन और आराम की भी व्यवस्था करता है। इन सबके लिए राज्य भारी मात्रा में वित्तीय सहायता देता है, मां-बाप को प्रति मास कुछेक रूबल ही देने होते हैं: नर्सरी स्कूल में बच्चे

की परवरिश के खर्च का आठवा हिस्सा, किंडर-गार्टन के खर्च का पांचवां और बोडिंग स्कूल का बारहवा हिस्सा। सामूहिक फार्मों में ऐसे निःशुल्क होते है। देय खर्च की श्रेणियां मा-बाप की आमदनी और उनके बच्चों की संख्या के अनुसार बनायी गयी है।

कारखानों मे काम करने वाली ६० प्रति शत स्त्रिया और दफ्तर कर्मचारी ७० प्रति शत स्त्रियां अपने वच्चों को दिन के किंडरगार्टन में रखती हैं। इसके अलावा, दीर्घकालिक दिवस स्कूल भी है जहा आठवी कक्षा तक के वे वच्चे दोपहर का खाना खाते हैं, अपना गृह कार्य करते है और आराम करते हैं, जिनके मां-बाप देर तक काम पर गये होते हैं। यह सब, और पांच दिन का कार्य-सप्ताह, सोवियत स्त्रियों को अपने वच्चो के पालन-पोषण के लिए और देश के सामाजिक जीवन में हिस्सा लेने के लिए भी अधिक समय प्रदान करता है। सोवियत नारी के जीवन के इस दोहरे पहलू को याद रखने पर ही परिवार के औसत छोटे आकार को समझा जा सकता है, जिसमें कि सरकारी आंकड़ों के अनुसार केवल ३.७ व्यक्ति होते है, दो से भी कम बच्चे। स्त्रियों की मातृत्व की आकाक्षा दो या तीन स्वस्थ सामान्य बच्चो से सहज ही तुष्ट हो जाती है। सोवियत नारी जानती है कि अधिक बच्चों से वह उनकी शिक्षा और सामान्य पालन-पोषण संबधी किसी दिक्कत मे नही पड़ेगी, मगर तब वह प्रत्येक बच्चे पर उतना भावनात्मक ध्यान नही दे पायेगी जोकि मां से अपेक्षित होता है। इसके अलावा, एक पूर्ण सर्वतोमुखी जीवन जीने के उसके अवसर भी निश्चय ही सीमित हो जायेंगे। स्वास्थ्य की चिंता और बारंबार गर्भधारण के कारण समय से पूर्व वृद्ध हो जाने का अंदेशा भी इस धारणा को जन्म देता है। गर्भ-पात वैध है और अधिकांश दम्पति परिवार-नियोजन कराते हैं। देश के पूर्वी भागों मे किंचित बड़े परिवार हैं जहां ऐसा होना परंपरागत है।

इस तरह कोई भी अवांछित बच्चा जन्म नही लेता और शिशु उन्ही मा-बापों की गोद में आते हैं जिन्हे उनकी अभिलाषा होती है। तदनतर मा और पिता अपने बच्चो को स्वस्थ, सुंदर और बुद्धिमान बनाने की योजना मे मशगूल हो जाते हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चो को जीवन मे अच्छा स्थान मिले और वे उन्हे उससे भी अधिक सुखमय जीवन मिले जो उनके मां-बाप को अपने बचपन में मिला था। इसी कार्य में राज्य उनकी मदद करने आता है, उन्हें इस कर्तव्य के सुयोग्य बनाने के लिए, कि १८ वर्ष की उम्र तक उनके बच्चों के पालन-पोषण के कर्तव्य तथा अधिकार में मदद करे। रेडियो और टेलीविजन, प्रसारण तथा अखबार बच्चो का समुचित पालन-पोषण करने की शिक्षा देने के लिए अपने कार्यक्रमो मे काफी सारा समय और स्थान इसके लिए देते हैं। रेडियो पर हर सुबह एक विशेष प्रसारण मां-बाप के लिए होता है।

इसका नाम है, "उनके लिए जो घर में है"। दो टेलीविजन कार्यक्रम है—"मा-बाप के लिए विश्वविद्यालय" और "बच्चो के बारे मे मा-बाप से" जो शिक्षाशास्त्र के पुख्ता ज्ञान पर आधारित विशेष उपयोगी परामर्श देते हैं। प्रकाशक भी विशेष साहित्य के प्रकाशन मे सक्रिय हैं। प्रोवेश्चेनिये (शिक्षा) नामक सबसे बड़े शिक्षा शास्त्रीय साहित्य के प्रकाशक ने "पालन-पोषण के बारे मे मा-बाप से" नामक एक लोकप्रिय पुस्तिका श्रृंखला प्रकाशित की है। **परिवार और स्कूल** नामक पत्रिका की १५ लाख प्रतिया वितरित होती है। घर में बच्चे का चरित्र *विकसित करने के बारे में, शिक्षाशास्त्रीय विज्ञान की कैंडिडेट एन. शुर्कोवा* लिखती है :

"यह बिलकुल सच है कि तहजीब ही सब कुछ नहीं होती।...हमें चाहिए कि शुरू से ही बच्चे में चीजों और लोगों से प्रेम करने के सामर्थ्य का विकास करें। अपनी मा, बहन, घर, प्रकृति को प्यार करना; ये सभी भावनाएं, हालांकि भावना ही कहलाती है, मगर भिन्न-भिन्न होती हैं। पर एक चीज उनमें समान है: जिनसे वे प्यार करते हैं उन व्यक्तियों से लगाव, उन व्यक्तियों के प्रति चिंता, उत्तरदायित्व, कोमलता का भाव, उनके आनद में आनद का बोध। चीजों और बच्चों को प्यार करने मे समर्थ हुए बिना बच्चे कभी भी प्रेम के महान सुख को अनुभव करने मे समर्थ नही होंगे।"

एक बार इमर्सन ने कहा था : "मनुष्य वैसे ही बनते है जैसा उनकी माता उन्हें बनाती हैं।" सोवियत सघ में अधिकाश माताए शिक्षित हैं, अत: वे पिताओं की सहायता से बच्चों के चरित्र को इस तरह ढालने में समर्थ होती हैं कि वे समाजवादी सामाजिक जीवन के नियमों के अनुरूप हों। माताओं के *कृतित्व से वह कहावत चरितार्थ हो जाती है कि पुरुष को शिक्षा देकर हम* केवल एक विशेषज्ञ को शिक्षा दे रहे होते हैं, लेकिन यदि कोई स्त्री बच्चे को शिक्षा देती है तो एक राष्ट्र शिक्षित होता है, क्योंकि मां के रूप में वह राष्ट्र का पालन-पोषण करती है।

सोवियत परिवार सचमुच ही पति और पत्नी का, और मां-बाप तथा बच्चों का भी, सम्मिलन बन गया है। यह सम्मिलन प्रेम का है—असीम और धनदौलत की चिंताओं से अछूना। बच्चे ज्यों-ज्यों बडे होते है, व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक कर्तव्यों तथा आदर्शों के बारे मे उनके मां-बाप के विचारों से उनकी एकता का उन्हे अधिकाधिक बोध होता जाता है। बहुचर्चित पीढ़ियों का अंतर और पश्चिमी देशों वाला संघर्ष कहीं दिखायी नही देता। मां-बाप को अपनी वृद्धावस्था में अपने वयस्क पुत्रों और पुत्रियों की ओर से अपार सम्मान और स्नेह मिलता है। बेटे-बेटियों की शादियों के बाद भी मा-बाप और बच्चों के बीच के प्राकृतिक स्नेह-संबंध टूटते नही हैं। युवा दपति अपने नये

फ्लैट में रहने के लिए जाने पर भी, अपने मां-बाप और संबंधियों से घनिष्ठ संबंध बनाये रखते हैं। दरअसल ये संबंध, जो भीड़भरे घरों वाले सयुक्त परिवारों की जटिलताओं से मुक्त हो गये हैं, और भी मजबूत होते जाते हैं। फलस्वरूप नयी प्रथाएं पनप रही है। क्रांति से पहले, पहली तनख्वाह को पीने-पिलाने पर उडा दिया जाता था। उसकी जगह एक नये समारोह ने ले ली है। एक पारिवारिक जश्न मे युवा कर्मचारी अपने मां-बाप को और उनको उपहार देता है जिन्होने उसे प्यार के साथ अपने अनुभव और हुनर मे भागीदार बनाया है। विश्वविख्यात वीरांगना अंतरिक्षयात्री वेलेन्तिना तेरेश्कोवा ने एक अंतर्राष्ट्रीय रेडियो प्रसारण मे कहा था : "इस धरती पर मेरे लिए सबसे प्रिय व्यक्ति मेरी अम्मा है।" एक और अंतरिक्षयात्री घेरमान तितोव, जो एक ग्रामीण डाक्टर का पुत्र है, कहता है : "मुझमे जो कुछ भी अच्छा है, वह मेरे पिता की देन है।" एक अत्यत लोकप्रिय सोवियत गीत में निम्नलिखित पंक्तियां हैं :

> नीला चमकीला आसमान—
> जिस पर जगमग सूर्य,
> नन्हें बेटे ने बनायी है तसवीर ये।
> उसने इसको बनाया तुम्हारे लिए,
> उस पर लिखा भी उसने, तुम्हारे लिए,
> क्या बनाया है उसने ये तसवीर में :
> सूरज चमके आसमान में सदा-सदा
> नीला-नीला रहे गगन ये सदा-सदा,
> मम्मी मेरी जियो सदा तुम सदा-सदा
> मै भी उसके पास ही रहूं सदा-सदा।

युवा दम्पति

जब कोई स्त्री विवाह करती है, तो क्या उससे उसके सपनों का अत हो जाता है? क्या उसके वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक वर्ष उसकी रुचियों को बदल देते है, और किस रूप मे? वित्तीय, दैनदिन समस्याओ के प्रति वह क्या रुख अपनाती है? युवा दम्पति अपने अवकाश के समय को किस प्रकार बिताते हैं?

सोवियत नारी की एक प्रतिनिधि ने २५ से कम आयु वाली विभिन्न कामों और व्यवसायो मे लगी स्त्रियो से ये सवाल किये, जिनकी शादी हुए १ से ४ वर्ष तक हुए थे। रोस्तोव-आन-दोन में हुई भेंटवार्ताओं के रोचक विवरण निम्नलिखित हैं :

विश्वविद्यालय के भौतिकशास्त्र विभाग में अंतिम वर्ष की छात्रा है। जिनैदा और उसका पति अलेक्सांदर, रोस्तोव के मध्य में स्थित एंगेल्स स्ट्रीट में मा-बाप के साथ फ्लैट मे रहते हैं। युवा दम्पति के कब्जे मे एक छोटा-सा कमरा है। अपने छोटे-से आकार के बावजूद इसका अपना ही वातावरण है। इसमें पुस्तकें, रेखांकन, चित्रानुकृतियां, खेल-कूद के सामान और तमाम चीजें भरी हुई हैं। "मुझे जल्दी ही डिप्लोमा मिल जायेगा और तब मैं एक विशेषज्ञ बन जाऊंगी। मैं किसी मापक उपकरण प्रयोगशाला में कार्य करूंगी। मेरी तनखाह शुरू में १०५ रूबल होगी।"

"और आपका पति ?"

"अलेक्सादर एक कारखाने में डिजाइनर है और इसके साथ ही वह कृषि मशीन उत्पादक सांध्य संस्थान में अध्ययन भी करता है। जल्द ही वह भी अपना पाठ्यक्रम पूरा कर लेगा और उसका अर्थ होगा कि उसकी आमदनी बढ जायेगी। मुझे आशा है कि अगले तीन वर्षों में हमारा अपना एक फ्लैट होगा। युवा दम्पतियो को कानूनन यह हक मिला हुआ है।"

"क्या आपको अपने पति के मा-बाप के साथ रहना दिक्कतमंद लगता है ?"

"नही। मगर मै सोचती हूं कि अलग-अलग रहना चाहिए। फिर भी, शुरू-शुरू मे साथ रहना कोई बुरी बात नही है।"

"क्या तुम अपने पति से झगड़ती हो ?"

"अरे, हां !" तत्काल जवाब मिला। "बेकार की बातो पर। मगर हम जल्दी ही सुलह कर लेते है। हम सचमुच बड़े अच्छे दोस्त हैं। मेरा पति व्यावहारिक बुद्धि वाला है और मैं उसे सिद्धात में मदद करती हूं। आधुनिक दम्पति के बारे में मेरी धारणा है दो ऐसे व्यक्तियों की, जो एक दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान करते है और मैं व्यक्तित्व शब्द पर जोर दे रही हूं।"

"लेकिन इसे दो तक ही सीमित क्यो रखें ? कम से कम तीन होने चाहिए। क्या आप इससे सहमत नही ?"

"बेशक, पूरे तौर पर। बच्चे तो होने ही चाहिए। और मेरे दो बच्चे होंगे, ऐसी मेरी आशा है। एक लड़का और एक लड़की," जिनैदा का जवाब था।

"यदि आप अच्छी खाती-पीती स्थिति में हों और आपको अपने लिए न कमाना पड़े तो कैसा रहे ?"

"खैर, मैं निश्चय ही उससे ज्यादा कमाना पसद करूंगी जो मैं अभी कमाती हूं, मगर मैं कभी भी काम बन्द करने का विचार नहीं करूंगी। काम आपको न केवल रूबल देता है, बल्कि वह नैतिक सतोष भी देता है।"

"कैसा संतोष ?"

"मसलन, यह अहसास कि आप एक आम प्रयत्न में हिस्सा ले रहे हैं। मैं समझती हूं कि काम न करना अनैतिकता है।"

लुबोवा निकुलिना एक घड़ी के कारखाने में कन्वेयर बेल्ट पर संयोजन का काम करने वाली महिला है। उसका पति येवगेनी एक फार्म मशीनरी कारखाने में फिटर है। उनकी एक वर्ष की बेटी है—नताशा।

वे एक-कक्षीय सुसज्जित फ्लैट में रहते हैं जिसका किराया वे लगभग ३ रूबल प्रतिमास देते है। २०० रूबल प्रतिमास आमदनी में यह किराया नगण्य-सा है, मगर दुर्भाग्य से उनके फ्लैट में कम ही सुविधाएं हैं।

लुबोवा ने मुझसे कहा : "शीघ्र ही हमारी इमारत गिरा दी जायेगी। नये आबाद क्षेत्रों में जिन्हें रहना है, उन लोगों की सूची बन चुकी है। चुनांचे जल्दी ही हम गृह प्रवेश का उत्सव मनाने की आशा रखते है।"

"क्या आपकी पुस्तकों के बाद, खाना पकाना आपका दूसरा शौक होगा ?"

"नही। नृत्य। मैं क्लासिकी और आधुनिक बालरूम नृत्य करती हूं, जैसे फाक्स-ट्राट, टैंगो, वाल्ज, शेक इत्यादि।"

"और आपका पति इस बारे में क्या सोचता है ?"

"उसे नृत्य पसद नहीं है, मगर वह अक्सर ही मेरे साथ जाता है।"

"क्या आप अपनी बेटी को क्रेशे मे ले जाती है ?"

"नही, बात यह है कि मेरी मा हमारे बिल्कुल पड़ोस में ही रहती हैं। जब नताशा चार महीने की थी, मैं काम पर चली गयी थी और नानी इस बच्ची की देख-भाल करती थी। जब नताशा तीन वर्ष की हो जायेगी तो किंडरगार्टन जाने लगेगी।"

तात्याना मसार्स्काया एक माडेल है। वह एक प्रायोगिक नारीवस्त्र प्रयोग-शाला मे काम करती है। उसका पति मार्क, विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग में स्नातकोत्तर छात्र है। हमारा इंटरव्यू वेहिचक शुरू नही हो सका।

मैंने सोचते हुए शुरू किया, "आकड़ो से हमे पता चलता है कि तलाक की दर सबसे अधिक उन शादियो में है जिन्हें हुए एक या दो साल हुए हैं जब स्त्री २० और २४ साल के बीच होती है। क्या आप उस 'खतरनाक अवधि' को पार कर चुकी हैं ?"

तात्याना ने जवाब दिया, "मेरा अनुभव सांख्यिकी विशेषज्ञों की खोजों को पूरी तरह से पुष्ट करता है। मैं २४ साल की थी जब मेरा पहला पति और मैं अलग हुए। दो वर्ष बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारा जीवन ऐसे वार्तालाप की तरह है जिसमे दोनों व्यक्ति अलग-अलग भाषाएं बोल रहे हैं। मेरे पति को वह काम नापसंद था जो मैं करती थी, और उसे विश्वास ही न

विश्वविद्यालय के भौतिकशास्त्र विभाग में अंतिम वर्ष की छात्रा है। जिनैदा और उसका पति अलेक्सांदर, रोस्तोव के मध्य में स्थित एगेल्स स्ट्रीट में मा-बाप के साथ फ्लैट में रहते हैं। युवा दम्पति के कब्जे मे एक छोटा-सा कमरा है। अपने छोटे-से आकार के बावजूद इसका अपना ही वातावरण है। इसमें पुस्तकें, रेखांकन, चित्रानुकृतियां, खेल-कूद के सामान और तमाम चीजें भरी हुई हैं। "मुझे जल्दी ही डिप्लोमा मिल जायेगा और तब मैं एक विशेषज्ञ बन जाऊंगी। मैं किसी मापक उपकरण प्रयोगशाला में कार्य करूंगी। मेरी तनखाह शुरू में १०५ रूबल होगी।"

"और आपका पति ?"

"अलेक्सादर एक कारखाने में डिजाइनर है और इसके साथ ही वह कृषि मशीन उत्पादक सांध्य संस्थान में अध्ययन भी करता है। जल्द ही वह भी अपना पाठ्यक्रम पूरा कर लेगा और उसका अर्थ होगा कि उसकी आमदनी बढ़ जायेगी। मुझे आशा है कि अगले तीन वर्षों मे हमारा अपना एक फ्लैट होगा। युवा दम्पतियों को कानूनन यह हक मिला हुआ है।"

"क्या आपको अपने पति के मां-बाप के साथ रहना दिक्कतमंद लगता है ?"

"नही। मगर मैं सोचती हूं कि अलग-अलग रहना चाहिए। फिर भी, शुरू-शुरू मे साथ रहना कोई बुरी बात नही है।"

"क्या तुम अपने पति से झगड़ती हो ?"

"अरे, हां !" तत्काल जवाब मिला। "बेकार की बातों पर। मगर हम जल्दी ही सुलह कर लेते हैं। हम सचमुच बड़े अच्छे दोस्त हैं। मेरा पति व्यावहारिक बुद्धि वाला है और मैं उसे सिद्धात में मदद करती हू। आधुनिक दम्पति के बारे में मेरी धारणा है दो ऐसे व्यक्तियों की, जो एक दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान करते हैं और मैं व्यक्तित्व शब्द पर जोर दे रही हूं।"

"लेकिन इसे दो तक ही सीमित क्यो रखें ? कम से कम तीन होने चाहिए। क्या आप इससे सहमत नहीं ?"

"बेशक, पूरे तौर पर। बच्चे तो होने ही चाहिए। और मेरे दो बच्चे होंगे, ऐसी मेरी आशा है। एक लड़का और एक लड़की," जिनैदा का जवाब था।

"यदि आप अच्छी खाती-पीती स्थिति मे हों और आपको अपने लिए न कमाना पड़े तो कैसा रहे ?"

"खैर, मैं निश्चय ही उससे ज्यादा कमाना पसद करूंगी जो मैं अभी कमाती हूं, मगर मैं कभी भी काम बन्द करने का विचार नही करूंगी। काम आपको न केवल रूबल देता है, बल्कि वह नैतिक संतोष भी देता है।"

"कैसा संतोष ?"

"मसलन, यह अहसास कि आप एक आम प्रयत्न में हिस्सा ले रहे हैं। मैं समझती हूं कि काम न करना अनैतिकता है।"

लुबोवा निकुलिना एक घड़ी के कारखाने में कन्वेयर बेल्ट पर संयोजन का काम करने वाली महिला है। उसका पति येवगेनी एक फार्म मशीनरी कारखाने में फिटर है। उनकी एक वर्ष की बेटी है—नताशा।

वे एक-कक्षीय सुसज्जित फ्लैट में रहते हैं जिसका किराया वे लगभग ३ रूबल प्रतिमास देते हैं। २०० रूबल प्रतिमास आमदनी में यह किराया नगण्य-सा है, मगर दुर्भाग्य से उनके फ्लैट में कम ही सुविधाएं हैं।

लुबोवा ने मुझसे कहा: "शीघ्र ही हमारी इमारत गिरा दी जायेगी। नये आबाद क्षेत्रों में जिन्हें रहना है, उन लोगों की सूची बन चुकी है। चुनांचे जल्दी ही हम गृह प्रवेश का उत्सव मनाने की आशा रखते हैं।"

"क्या आपकी पुस्तकों के बाद, खाना पकाना आपका दूसरा शौक होगा?"

"नहीं। नृत्य। मैं क्लासिकी और आधुनिक बालरूम नृत्य करती हूं, जैसे फाक्स-ट्राट, टैंगो, वाल्ज, शेक इत्यादि।"

"और आपका पति इस बारे में क्या सोचता है ?"

"उसे नृत्य पसंद नहीं है, मगर वह अक्सर ही मेरे साथ जाता है।"

"क्या आप अपनी बेटी को क्रेशे में ले जाती हैं ?"

"नहीं, बात यह है कि मेरी मां हमारे बिल्कुल पड़ोस में ही रहती हैं। जब नताशा चार महीने की थी, मैं काम पर चली गयी थी और नानी इस बच्ची की देख-भाल करती थी। जब नताशा तीन वर्ष की हो जायेगी तो किंडरगार्टेन जाने लगेगी।"

तात्याना मसार्स्काया एक माडेल है। वह एक प्रायोगिक नारीवस्त्र प्रयोगशाला में काम करती है। उसका पति मार्क, विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग में स्नातकोत्तर छात्र है। हमारा इंटरव्यू बेहिचक शुरू नहीं हो सका।

मैंने सोचते हुए शुरू किया, "आंकड़ों से हमें पता चलता है कि तलाक की दर सबसे अधिक उन शादियों में है जिन्हें हुए एक या दो साल हुए है जब स्त्री २० और २४ साल के बीच होती है। क्या आप उस 'खतरनाक अवधि' को पार कर चुकी हैं ?"

तात्याना ने जवाब दिया, "मेरा अनुभव सांख्यिकी विशेषज्ञों की खोजों को पूरी तरह से पुष्ट करता है। मैं २४ साल की थी जब मेरा पहला पति और मैं अलग हुए। दो वर्ष बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारा जीवन ऐसे वार्तालाप की तरह है जिसमें दोनों व्यक्ति अलग-अलग भाषाएं बोल रहे हैं। मेरे पति को वह काम नापसंद था जो मैं करती थी, और उसे विश्वास ही न

होता था कि मुझे वह काम प्रिय है। मार्क के साथ कहानी दूसरी है। वह एक अत्यंत सुसंस्कृत पुरुष है और तमाम पूर्वग्रहों से मुक्त है।"

"आपका सबसे प्रिय स्वप्न क्या है?"

विनम्र जवाब था, "मेरे अनेक सपने हैं। सबसे पहले तो मैं चाहती हूं कि मार्क को डिग्री मिल जाये और मैं अपने संस्थान का अध्ययन खत्म कर लूं। तब मैं गाइड और दुभाषिये का काम कर सकूंगी। मैं यह बहुत पसंद करती हूं। मैं बच्चे चाहती हूं। मैं एक कार चलाना चाहती हूं।"

तमारा दुदिनेरस, जो एक होजियरी कारखाने में काम करती है और उसका पति प्योत्र, जल्द ही रोस्तोव-आन-दोन छोड़ देंगे। लेकिन इसलिए नहीं कि उन्हें यह नगर नापसद है।

"मेरा जन्म और पालन-पोषण यहीं हुआ, और मेरा पति ट्रांसकार्पेथिया से आया उक्रेइनी है। हमारी अपने मां-बाप से बहुत अच्छी निभती है, और मुझे कबूल करना चाहिए कि उन्हें छोड़ना मेरे लिए सहज नहीं होगा। पर वे अभी भी जवान और हट्ठे-कट्ठे हैं, जबकि प्योत्र के मां-बाप का स्वास्थ्य कमजोर है, और उनकी देख-भाल जरूरी है। यही कारण है कि हमने मुकाचेवो शहर जाना तय किया है, उस छोटे से शहर में जो यहा से दूर नहीं है और जहा वे रहते है।"

तमारा ने आगे कहना जारी रखा: "मेरी शादी जल्दी हो गयी थी, जब मैं सिर्फ १८ वर्ष की थी। कहते हैं कि कम उम्र के विवाह टिकते नहीं। पर मैं सहमत नहीं हूं। प्योत्र एक अच्छा दोस्त और मददगार है। आप देखें कि वह हमारी बिटिया की कितनी अच्छी देख-भाल करता है। बिल्कुल एक किंडरगार्टन के सच्चे शिक्षक की तरह। मुझे उसकी मजबूत, संरक्षक बांह का हमेशा अहसास रहता है।"

तमारा को प्रतिमास १०० रूबल मिलते हैं, और प्योत्र को, जो ट्रक ड्राइवर है, १२० रूबल। यह एक औसत आमदनी है, मगर उनका किराया केवल ६ रूबल प्रतिमाह है और स्वेतलाना को किंडरगार्टन में रखने की फीस वे १२ रूबल प्रतिमाह देते हैं।

लुदमिला वासीना: "मैं शादी से संपूर्णतः संतुष्ट हूं। मैं चाहती हूं कि मुझे प्यार-भरी मनुहारें और ज्यादा सुनने को मिलें, मगर वे कम होती जाती हैं।"

लुदमिला से मैं किंडरगार्टन में मिला जहां वह पढ़ाती है। वह रोस्तोव शिक्षाशास्त्रीय संस्थान के शिशु मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र के निकाय की स्नातिका है। उसका पति वादिम रेलवे इंजीनियरी संस्थान का स्नातक है।